मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	26.8	15.0
डालटनगंज	31.6	15.1
धनबाद	30.0	16.0

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

https://epaper.shubhamsandesh.net

रांची, बुधवार 05 नवंबर 2025 ● कार्तिक पूर्णिमा, संवत 2082 ● रांची एवं पटना से प्रकाशित ● वर्ष : 3, अंक : 205 ● मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

ब्रीफ न्यूज

बिहारियों को तीन दिन की वेतन सहित छुट्टी दें

बेंगलुरु। कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने बंगलूरु की कंपनियों और अन्य नियोक्ताओं से अपील की है कि वे बिहार के रहने वाले अपने कर्मचारियों को तीन दिन की सवैतनिक छुट्टी दें,ताकि वे बिहार जाकर अपने मताधिकार का इस्तेमाल कर सकें. बड़ी संख्या में बिहार के लोग बेंगलुरु और कर्नाटक के अन्य इलाकों में नौकरी करते हैं. इसे देखते हुए डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने ये अपील की है.

हिंदुजा के चेयरमैन गोपीचंद का निधन

लंदन। हिंदुजा समूह के चेयरमैन गोपीचंद परमानंद हिंदुजा का लंदन के एक अस्पताल में निधन हो गया. परिवार के सूत्रों ने यह जानकारी दी. वह 85 वर्ष के थे. हिंदुजा परिवार ने बताया कि व्यापारिक जगत में जीपी के नाम से मशहूर गोपीचंद पी. हिंदुजा पिछले कुछ सप्ताह से बीमार थे और लंदन के एक अस्पताल में उनका निधन हो गया है. हिंदुजा परिवार की दूसरी पीढ़ी से ताल्लुक रखने वाले गोपीचंद ने मई 2023 में अपने बड़े भाई श्रीचंद के निधन के बाद अध्यक्ष का पद संभाला था.

बाजार में मचा हाहाकार सेंसेक्स-निफ्टी लुढ़के

मुंबई। शेयर बाजार मंगलवार तेज गिरावट देखने को मिली. एशियाई बाजारों में कमजोरी निवेशकों ने चुनिंदा शेयरों में मुनाफावसूली की. इससे सेंसेक्स 519 अंक लुढ़क गया. वहीं, निफ्टी को 165 अंक का नुकसान हुआ. बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में 519.34 यानी 0.62% की गिरावट के साथ 83,459.15 अंक पर बंद हुआ. मजबूती के साथ सत्र की शुरुआत करने वाला सेंसेक्स कारोबार के दौरान एक समय 83,412.77 अंक पर आ गया था.

साइबर कानूनों की हो समीक्षा : महिला आयोग

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय महिला आयोग ने भारत के साइबर कानूनों की व्यापक समीक्षा की मांग की है ताकि महिलाओं की डिजिटल सुरक्षा, गोपनीयता और ऑनलाइन जवाबदेही को मजबूत किया जा सके. आयोग ने अपने कानूनी समीक्षा हेतु अनुशंसात्मक रिपोर्ट 2024-25 में सरकार से ऐसे सशक्त कानूनों की जरूरत बताई है जो न केवल अपराधियों को दंडित करें बल्कि महिलाओं की गरिमा और डिजिटल स्वतंत्रता की रक्षा भी करें.

भारत में बढ़ गई है अमीर-गरीब की खाई

नयी दिल्ली । भारत में अमीर और गरीब के बीच की खाई लगातार गहराती जा रही है. जी-20 की एक नई रिपोर्ट के अनुसार, देश के शीर्ष 1 प्रतिशत अमीर लोगों की संपत्ति साल 2000 से 2023 के बीच 62 प्रतिशत तक बढ़ गई है. यह रिपोर्ट दक्षिण अफ्रीका की अध्यक्षता में तैयार की गई है और इसमें असमानता के बढ़ते स्तर पर गंभीर चिंता जताई गई है. नोबेल पुरस्कार विजेता जोसेफ स्टिग्लिट्ज़ की अगुवाई में तैयार इस रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक असमानता अब आपात स्तर पर पहुंच चुकी है.

दरभंगा की चुनावी सभा में बोले गृहमंत्री

बिहार में घुसपैठियों को बचाना चाहते हैं लालू यादव-राहुल गांधी

शुभम संदेश। पटना/दरभंगा

बिहार में दरभंगा जिले के जाले सीट से भाजपा के उम्मीदवार जीवेश मिश्र के पक्ष में चुनावी सभा को सम्बोधित करते हुए गृहमंत्री

अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी ढाई महीने पहले बिहार आए थे और घुसपैठिया बचाओ यात्रा निकाली थी. उन्होंने आरोप लगाया कि लालू यादव और राहुल गांधी घुसपैठियों को बचाना चाहते हैं. अमित शाह ने कहा कि भाजपा एक-एक करके घुसपैठियों की पहचान करेगी और उन्हें देश से बाहर निकालेगी. उन्होंने कहा कि बिहार पहले ही लालू यादव और राबड़ी देवी के नेतृत्व में 15 साल का जंगल राज देख चुका है. अब उसी मॉडल को फिर से ये लागू करना चाहते हैं. शाह ने कहा कि एनडीए की प्राथमिकता जंगल राज की वापसी को रोकना और दरभंगा को एक विकसित जिला बनाना है. आपकी भूमिका कमल का बटन दबाने और इस विज़न को मज़बूत करने की है. एनडीए सरकार में ही दरभंगा में एयरपोर्ट, मखाना बोर्ड बने और एम्स भी बनने जा रहा है. मैथिली और मिथिला का हमेशा अपमान करने वाले लालू एंड कंपनी के जंगलराज को दरभंगावासी कभी वापस नहीं आने देंगे. यहां भी माता सीता का आशीर्वाद एनडीए को ही मिलेगा. गृह मंत्री ने आरोप लगाया कि लालू की पार्टी चाहती है कि यह पैसा वापस ले लिया जाए. उन्होंने जीविका लाभार्थियों से कहा कि न तो लालू और न ही उनकी आने वाली तीन पीढ़ियां यह पैसा वापस ले सकती हैं. अगर एनडीए फिर से सरकार बनाती है, तो अगले पांच वर्षों में जीविका दीदियों के बैंक खातों में 2 लाख रुपये जमा किए जाएंगे.

राहुल गांधी ने पीएम मोदी पर कसा तंज, कहा

हमारा लक्ष्य है बिहार में सभी युवाओं के लिए रोजगार हो

शुभम संदेश। औरंगाबाद

बिहार चुनाव के प्रचार अभियान के बीच कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने मंगलवार को औरंगाबाद में एक बड़ी

जनसभा को संबोधित किया. रैली में राहुल ने केंद्र की मोदी सरकार पर तीखे आरोप लगाए और कहा कि मोदी सरकार ने देश की सारी सरकारी कंपनियां बेच दीं, सब कुछ अडाणी-अंबानी जैसे उद्योगपतियों को दे दिया गया है. राहुल ने कहा, आप कितनी भी पढ़ाई कर लो, लेकिन परीक्षा से दो दिन पहले पेपर लीक हो जाता है. ऐसा बिहार हमें नहीं चाहिए. उन्होंने कहा कि आज देश में दो हिंदुस्तान बना दिए गए हैं. एक अरबपतियों और सूट-बूट वालों का और दूसरा गरीबों, किसानों और मजदूरों का. कांग्रेस नेता ने पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा, मोदी जी अरबपतियों की शादियों में जाते हैं, उनके साथ नाचते-गाते हैं. आपने कभी उन्हें किसी किसान से गले मिलते देखा है? किसी मजदूर का हाथ पकड़ते देखा है?

राहुल ने कहा, अगर संविधान नहीं बचा तो देश में सिर्फ मोदी, अडानी और अंबानी बचेंगे. बाकी सबका हक छिन जाएगा. उन्होंने कहा कि सरकार की बीमा योजनाएं अब किसानों से पैसे लेकर प्राइवेट कंपनियों को देने का नया तरीका बन गई हैं. उन्होंने मोदी पर तंज कसते हुए कहा, मोदी ने छठ में नहाने के लिए अपने लिए अलग से साफ पानी मंगवाया और आम बिहारी को यमुना के सड़े पानी में स्नान करना पड़ा. उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि बिहार में रोजगार पैदा हो, बैंक के दरवाजे युवाओं के लिए खुलें, न कि सिर्फ अडानी-अंबानी के लिए.

वोट से पहले तेजस्वी का फिर बड़ा ऐलान, कहा

बिहार की सभी महिलाओं को 30 हजार रु. की राशि देंगे एकमुश्त

शुभम संदेश। पटना

महागठबंधन में मुख्यमंत्री चेहरा घोषित हुए तेजस्वी यादव ने मंगलवार सुबह फिर से बड़ा एलान कर दिया है. उन्होंने कहा कि अगर

महागठबंधन की सरकार बनती है, तो माई बहिन योजना के तहत एक साल की पूरी राशि यानी 30 हजार एकमुश्त महिलाओं के खाते में भेजे जाएंगे. उन्होंने कहा कि सरकार बनने के बाद 14 जनवरी को हमारी सरकार एक साल का पूरा पैसा माता बहनों के खाते में भेज देगी. हमारा विषय बिहार बनाने का है.

किसानों को सिंचाई के लिए बिजली मुफ्त में देंगे : तेजस्वी ने कहा कि हम लोगों ने पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि सरकार बनने के साथ ही जीविका (कम्युनिटी मोबिलाइजर) को स्थाई करेंगे उन्हें हर महीने 30 हजार रुपये दिया जाएंगे. उन्होंने कहा कि 20 साल से एनडीए सरकार ने किसानों के लिए ध्यान नहीं दिया. गेहूं और धान के लिए, हम धान के एमएसपी के अतिरिक्त 300 रुपये और गेहूं के एमएसपी के अतिरिक्त 400 रुपये देंगे. इसके अलावा किसानों को सिंचाई के लिए बिजली मुफ्त में देंगे. यानी सिंचाई में बिजली का खर्चा सरकार देगी. अभी राज्य सरकार 55 पैसा प्रति यूनिट लेती है. लेकिन, हमारी सरकार इसे मुफ्त कर देगी. व्यापार मंडलों के 8463 पैक्स को जनप्रतिनिधि का दर्जा दिया जाएगा.

तेजस्वी ने हर चीज को संभव कर दिखाई है : हर परिवार को नौकरी देने के लिए बजट कहां से लाएंगे? तेजस्वी ने कहा कि हमने एक्सपर्ट से विचार के बाद हर परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने का ऐलान किया है. भाजपा की बातों को छोड़िए. जब नौकरी देंगे तो उन्हें भी पता चल जाएगा कि कुछ भी असंभव नहीं है.

बिहार में पहले फेज की 121 सीटों पर थमा प्रचार का शोर, कल वोट

किसके सिर सजेगा ताज इसी चरण में होगा फैसला

शुभम संदेश। डेस्क

बिहार चुनाव के पहले चरण की 121 सीटों पर मंगलवार शाम प्रचार का शोर थम गया. राज्य की सत्ता की किस्मत का फैसला इसी चरण के चुनाव से तय हो जाएगा. इस फेज में 18 जिलों की 121 सीटों पर 1314 उम्मीदवारों की किस्मत का फैसला 6 नवंबर को 3,75,13,302 मतदाता तय करेंगे. बिहार के पहले चरण में मिथिलांचल, कोसी, मुंगेर डिवीजन और भोजपुर बेल्ट की 121 सीटों पर चुनाव है. इस फेज के कुल 1314 उम्मीदवारों में 122 महिला प्रत्याशी मैदान में हैं.

राजद सबसे ज्यादा सीटों पर चुनाव मैदान में है तो जदयू अपने कोटे की आधे से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ रहा है. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और राजद नेता तेजस्वी के सियासी भविष्य का फैसला पहले चरण के चुनाव से तय हो जाएगा. पहले चरण में तेजस्वी के सामने अपनी सीटों को बचाए रखने की चुनौती होगी, तो नीतीश कुमार को अपनी कुर्सी बचाए रखने के लिए जद्दोजहद करनी होगी. नीतीश सरकार के 16 मंत्रियों की अग्निपरीक्षा इसी फेज में होनी है. इससे समझा जा सकता है कि पहले चरण का चुनाव किसके लिए कितना अहम है.

पहले फेज में किसके कितने उम्मीदवार?

विस चुनाव के पहले चरण का मुकाबला एनडीए व महागठबंधन के बीच कांटे का माना जा रहा है. पहले चरण में महागठबंधन की तरफ से राजद 72 सीटों पर चुनाव लड़ रहा है तो उसकी सहयोगी कांग्रेस 24 और सीपीआई माले 14 सीट पर किस्मत आजमा रहे हैं. वीआईपी और सीपीआई छह-छह सीट पर चुनाव लड़ रही हैं, जबकि सीपीएम तीन और आईपी गुप्ता की इंडियन इंक्लूसिव पार्टी ने दो सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे हैं. इस तरह छह सीटों पर महागठबंधन की फ्रेंडली फाइट है.

पहले चरण में किसका क्या दांव पर लगा है

पहले चरण में एनडीए और महागठबंधन की साख दांव पर लगी है. इन सीटों पर पिछली बार के नतीजे देखें तो एनडीए व महागठबंधन में कांटे की फाइट रही थी. महागठबंधन ने 61 पर जीत दर्ज की थी जबकि एनडीए को 59 सीटें मिलीं थीं. पहले चरण की जिन 121 सीटों पर चुनाव हैं, उसमें राजद सबसे ज्यादा 42 सीटों पर जीता था, जबकि 32 सीटें बीजेपी ने जीती थीं. जदयू के 23 विधायक जीतकर आए थे और कांग्रेस के 8 विधायक थे. इसके अलावा माले के 7, वीआईपी के चार, सीपीआई और सीपीएम के दो-दो विधायक जीते थे. इसके अलावा एलजेपी एक सीट जीती थी. इस तरह राजद के लिए अपनी सीटें बचाए रखने की जंग है, तो जदयू के सामने अपने खिसके जनाधार को दोबारा से पाने की चुनौती है.

बिहार के पहले चरण की चुनावी लड़ाई : पहले चरण में 57 सीटों पर जदयू लड़ रहा है. उसकी 36 पर राजद से सीधी लड़ाई है और 13 सीटों पर कांग्रेस से मुकाबला है. इसके अलावा सात सीट पर जदयू की लड़ाई माले से है और दो पर मुकेश सहनी की पार्टी के साथ फाइट है. वहीं, 23 सीट पर राजद और बीजेपी के बीच मुकाबला है तो कांग्रेस और बीजेपी के बीच 13 सीटों पर सीधी लड़ाई है. एलजेपी का 10 सीटों पर राजद से सीधा मुकाबला है, तो माले 5 सीट पर बीजेपी से दो-दो हाथ कर रही. सहनी की पार्टी वीआईपी का चार सीट पर बीजेपी के उम्मीदवार से मुकाबला है तो उपेंद्र कुशवाहा की आरएलएम के दोनों उम्मीदवारों का मुकाबला राजद से है.

नीतीश के लिए अहम है पहला चरण : पहले चरण में असल लड़ाई जदयू की है, जिसमें महागठबंधन के राजद से कांग्रेस और लेफ्ट तक से उसे दो-दो हाथ करना पड़ रहा है. 2020 में राजद के साथ सीधी लड़ाई में जदयू फेल रहा था. इस बार के चुनाव में जदयू को महागठबंधन से ही नहीं बल्कि जन सुराज से भी मुकाबला करना पड़ रहा है. जदयू के 2020 में जीते 43 विधायकों में से 23 विधायक यानी आधे से ज्यादा पहले चरण वाली सीटों से जीतकर आए थे. इस लिहाज से समझा जा सकता है कि जदयू के लिए कितना अहम है पहले फेज का चुनाव. बिहार की सियासत दो दशक से नीतीश कुमार के इर्द-गिर्द सिमटी हुई है, लेकिन बिहार की सियासी धुरी पर खड़े नीतीश कुमार के लिए इस बार का चुनाव काफी अलग और चुनौतीपूर्ण माना जा रहा है. 20 साल से सत्ता में होने रहने के चलते नीतीश के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर भी मानी जा रही है, जिसके चलते बीजेपी खुद फ्रंटफुट पर उतरकर चुनाव लड़ रही है. ऐसे में जदयू के लिए अपना सियासी वर्चस्व बनाए रखने के लिए बिहार की चुनावी जंग जीतना काफी अहम हो जाता है, क्योंकि इस बार बीजेपी से कम सीटें आती हैं, तो सीएम की कुर्सी मिलना नीतीश कुमार के लिए आसान नहीं होगा.

चांदी में फिर आई बड़ी गिरावट, सोना भी 500 रुपये हुआ सस्ता

नयी दिल्ली। सोना और चांदी की कीमतों में मंगलवार को एक बार फिर तेज गिरावट आई है. मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज से लेकर घरेलू मार्केट तक में कीमती धातुओं के दाम गिरे हैं. एमसीएक्स पर जहां सोना 500 रुपये सस्ता हुआ है, तो वहीं चांदी का भाव करीब 2500 रुपये तक टूटा है. चांदी का भाव शुरुआती कारोबार में 1,47,602 रुपये प्रति किलो तक आ गया था, जबकि इसका पिछला कारोबारी बंद 1,50,150 रुपये था. मतलब ये 2500 रुपये से ज्यादा सस्ती हो गई. कारोबार आगे बढ़ने पर ये गिरावट कुछ कम जरूर हुई, लेकिन शाम पांच बजे तक 1800 रुपये फिसलकर 1,48,343 रुपये पर ट्रेड कर रहा था. मंगलवार को मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर 5 दिसंबर की एक्सपायरी वाले 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का दाम 487 की गिरावट के साथ 1,20,928 रुपये पर कारोबार कर रहा था. बीते कारोबारी दिन ये 1,21,415 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था. हालांकि, शुरुआती कारोबार के दौरान सोना 1,19,801 रुपये तक फिसल गया था. यानी ये 1614 रुपये प्रति 10 ग्राम कर गिरा था.

छत्तीसगढ़ में बड़ा रेल हादसा

मालगाड़ी पर चढ़ी मेमू ट्रेन 6 की मौत, कई लोग घायल

एजेंसियां। बिलासपुर

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में मंगलवार को बड़ा रेल हादसा हो गया, जब एक मेमू पैसेंजर ट्रेन का कोच मालगाड़ी से टकरा गया. यह हादसा बिलासपुर स्टेशन के पास शाम करीब 4 बजे हुआ. खबर के मुताबिक, आमने-सामने की टक्कर में 6 यात्रियों की मौत हुई, जबकि एक दर्जन से अधिक घायल हैं. टक्कर इतनी भीषण थी कि मेमू ट्रेन का कोच मालगाड़ी के ऊपर चढ़ गया. दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के अनुसार, हादसे के बाद राहत और बचाव कार्य शुरू कर दिया गया.

रेलवे अधिकारियों ने बताया कि घायलों को उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया है. दक्षिण पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक तरुण प्रकाश मौके पर पहुंच गए. उनके साथ मंडल प्रबंधक भी मौजूद हैं. हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई. ट्रेन के कई डिब्बे पटरी से उतरने से यात्रियों में दहशत फैल गई. बताय गया कि यह मेमू ट्रेन गेवरा से बिलासपुर जा रही थी. वहीं, मालगाड़ी बिलासपुर से आ रही थी. बिलासपुर रेलवे स्टेशन के नजदीक लाल खदान के पास दोनों ट्रेनें एक ही ट्रैक पर आ गई, जिससे उनकी आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गई. हादसे के बाद के वीडियो और फोटो भी सामने आ रहे हैं, जिसमें ट्रेन मालगाड़ी के ऊपर चढ़ी हुई दिख रही है. हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी की स्थिति दिख रही है. दोनों ट्रेनों के डिब्बे पटरी से भी उतर गए हैं. हादसे के बाद यात्रियों में दहशत का माहौल है.

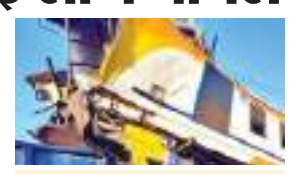

मुआवजे की घोषणा

रेलवे ने घोषणा की है कि दुर्घटना में मृतकों के परिजनों को 10 लाख, गंभीर रूप से घायल यात्रियों को 5 लाख तथा सामान्य रूप से घायल यात्रियों को 1 लाख रुपए की सहायता राशि प्रदान की जाएगी.

एसआईआर पर फिर रार

- टीएमसी बोली-ये एक तरह का एनआरसी, भाजपा बोली-डेमोग्राफी बदली जा रही

नयी दिल्ली । बंगाल समेत देश के 12 राज्यों में एसआईआर शुरू हो गया है. इसे लेकर विरोध भी शुरू हो गया है. भाजपा ने आरोप लगाया कि अवैध घुसपैठियों को वोटर लिस्ट में शामिल करके बंगाल की डेमोग्राफी को बदला जा रहा है. वहीं टीएमसी ने कहा कि एसआईआर एक तरह का एनआरसी है. टीएमसी सांसद सुष्मिता देव ने एसआईआर पर भाजपा पर हमला बोला. कहा- एसआईआर एक तरह का एनआरसी है, जिसकी बात पूरा विपक्ष कर रहा है.

वहीं,बंगाल भाजपा के अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य ने एसआईआर पर कहा कि अगर ममता बनर्जी को कुछ कहना है तो वे सुप्रीम कोर्ट जा सकती हैं. राज्य में अराजकता का माहौल है. कानून व्यवस्था ध्वस्त है. ममता रोहिंग्याओं को बुला रही हैं. सिर्फ बंगाल में ही डेमोग्राफी नहीं बदली जा रही बल्कि बिहार- झारखंड में भी ऐसा हो रहा है. समिक ने कहा कि लोग एसआईआर चाहते हैं और ये होकर रहेगा.

घर से उसी को निकलने दो जो हमारे पक्ष में वोट करे!

- केंद्रीय मंत्री ललन सिंह का वीडियो वायरल हुआ, एफआईआर दर्ज

पटना । बिहार चुनाव के पहले चरण की वोटिंग से ठीक पहले केंद्रीय मंत्री ललन सिंह की टिप्पणी ने विवाद खड़ा कर दिया है. मोकामा में दिए भाषण पर हंगामे के बीच आयोग ने भी एक्शन लिया है और ललन के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है. बयान का वीडियो वायरल हो रहा है, हालांकि शुभम संदेश इस वीडियो की पुष्टि नहीं करता है.राजद ने एक्स पर लिखा कि ललन सिंह आयोग की छाती पर बुलडोजर चढ़ाते हुए कह रहे हैं कि गरीबों को वोटिंग के दिन घर से निकलने नहीं देना है. घर में बंद कर देना है. अगर ज्यादा हाथ-पैर जोड़ेगा तो अपने साथ ले जाकर वोट गिराने देना है. राजद ने आयोग पर सवाल उठाए. कांग्रेस ने लिखा, जो लोग एनडीए को वोट नहीं देने वाले हैं, चुनाव के दिन उन्हें घर से निकलने ने देने की धमकी मिल रही है.

सूरतेहाल : सुप्रीम कोर्ट ने पॉक्सो केसों के दुरूपयोग पर जताई चिंता, कहा

जागरूकता की सख्त जरूरत, ताकि माहौल सुरक्षित रहे

एजेंसियां। नयी दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि बच्चों को यौन अपराधों से संरक्षण (अधिनियम पॉक्सो कानून) का गलत इस्तेमाल बढ़ रहा है. अदालत ने देखा कि इस कानून का उपयोग कई बार पति-पत्नी के झगड़ों या किशोर-किशोरी के आपसी सहमति वाले संबंधों में किया जा रहा है, जो कानून की असली भावना के खिलाफ है. जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस आर महादेवन की पीठ एक जनहित याचिका पर सुनवाई कर रही थी. इस याचिका में मांग की गई है कि लोगों को दुष्कर्म और पॉक्सो कानून के प्रावधानों के बारे में जागरूक किया जाए, ताकि देश में महिलाओं और लड़कियों के लिए माहौल और सुरक्षित बने.

पॉक्सो एक्ट के गलत इस्तेमाल पर जताई चिंता

इस सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा, हम यह देख रहे हैं कि कई बार पॉक्सो एक्ट का इस्तेमाल झगड़ों या किशोरों के आपसी संबंधों में गलत तरीके से किया जा रहा है. इसलिए जरूरी है कि लड़कों और पुरुषों में इस कानून की जानकारी और समझ बढ़ाई जाए.

2 दिसंबर तक के लिए टली मामले में सुनवाई

सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले की अगली सुनवाई 2 दिसंबर तक टाल दी है, क्योंकि कुछ राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों ने अभी तक इस मुद्दे पर अपनी राय नहीं दी है. पहले, अदालत ने केंद्र सरकार, शिक्षा मंत्रालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय और फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) को नोटिस जारी कर जवाब मांगा था. वरिष्ठ अधिवक्ता आबाद हर्षद पोंडा ने अदालत से कहा कि लोगों को यह बताया जाना जरूरी है कि निर्भया कांड के बाद दुष्कर्म से जुड़े कानूनों में क्या बदलाव हुए हैं.

याचिका में शिक्षा मंत्रालय को निर्देश देने की मांग : जनहित याचिका में मांग की गई है कि शिक्षा मंत्रालय सभी स्कूलों को यह निर्देश दे कि बच्चों को महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराधों से जुड़े कानूनों की बुनियादी जानकारी दी जाए. नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए ताकि बच्चों को लैंगिक समानता, महिलाओं के अधिकार और सम्मानजनक जीवन के महत्व के बारे में सिखाया जा सके.

दुष्कर्म जैसे अपराधों के दुष्परिणाम : सजा के बारे में करें जागरूक : इस याचिका में यह भी कहा गया है कि सूचना और प्रसारण मंत्रालय तथा सीबीएफसी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि फिल्मों और मीडिया के माध्यम से जनता को दुष्कर्म जैसे अपराधों के दुष्परिणाम और सजा के बारे में जागरूक किया जाए. सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा कि लड़कियों की सुरक्षा सिर्फ कानून से नहीं, बल्कि समाज की सोच बदलने से संभव है, और यह बदलाव स्कूल स्तर से शुरू होना चाहिए.

जीएसटी दरों में कटौती का दिखने लगा असर, तीसरे नंबर पर रहा राज्य

अक्तूबर में झारखंड को 456 करोड़ का नुकसान

शुभम संदेश। रांची

झारखंड सरकार के लिए अक्टूबर माह राजस्व के लिहाज से निराशाजनक साबित हुआ है. केंद्र सरकार द्वारा वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की दरों में की गई कटौती का सीधा असर राज्य की कमाई पर पड़ा है. जीएसटी काउंसिल द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, अक्टूबर 2025 में झारखंड को कुल 2,518 करोड़ की जीएसटी प्राप्ति हुई है, जो पिछले वर्ष अक्टूबर 2024 में हुई 2,974 करोड़ की वसूली से 456 करोड़ कम है. यह 15 प्रतिशत की गिरावट दर्शाता है, जिससे झारखंड देश के तीसरे सबसे अधिक नुकसान उठाने वाले राज्यों में शामिल हो गया है.

राजस्व में भारी गिरावट, राज्यों पर असर: जीएसटी काउंसिल के ताजा आंकड़े बताते हैं कि देश के कुल 20 राज्य और केंद्रशासित प्रदेश टैक्स वसूली में गिरावट का सामना कर रहे हैं. इनमें सबसे अधिक नुकसान पुदुचेरी को हुआ है, जहां वसूली में 24 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई. इसके बाद हिमाचल प्रदेश को 17 प्रतिशत और झारखंड को 15 प्रतिशत का घाटा हुआ है. उत्तराखंड को भी 13 प्रतिशत की कमी का सामना करना पड़ा है.

राज्यों की इस स्थिति के विपरीत, केंद्र सरकार के हिस्से में आने वाली जीएसटी वसूली में मामूली वृद्धि दर्ज की गई है. पिछले साल अक्टूबर में जहां देशभर से कुल 1,45,052 करोड़ की जीएसटी वसूली हुई थी, वहीं इस साल अक्टूबर में यह आंकड़ा 1,47,251 करोड़ तक पहुंच गया. यानी कुल वसूली में दो प्रतिशत की वृद्धि हुई, लेकिन इसका लाभ केंद्र सरकार तक ही सीमित रहा..

झारखंड के लिए चिंताजनक स्थिति

राज्य वित्त विभाग के अनुसार, जीएसटी से झारखंड की आय में हुई यह गिरावट राज्य की विकास योजनाओं और वित्तीय प्रबंधन पर प्रतिकूल असर डाल सकती है. झारखंड पहले से ही केंद्र से मिलने वाले हिस्से और जीएसटी मुआवजा राशि में देरी की समस्या झेल रहा है. ऐसे में राज्य की कुल आय में 15 प्रतिशत की गिरावट वित्तीय दबाव को और बढ़ा सकती है. वित्त विशेषज्ञों का मानना है कि जीएसटी दरों में कमी का उद्देश्य उपभोक्ताओं को राहत देना था, परंतु राज्यों की आर्थिक स्थिति को देखते हुए केंद्र को संतुलन बनाना चाहिए था. झारखंड जैसे खनन और औद्योगिक राज्यों में उत्पादन और व्यापार दोनों पर असर पड़ने से राजस्व में गिरावट और तेज हो सकती है.

झारखंड सहित 20 राज्यों की वसूली में कमी की यह है स्थिति

जीएसटी आंकड़ों के अनुसार, झारखंड के अलावा आंध्र प्रदेश को 325 करोड़ (9%), मध्य प्रदेश को 200 करोड़ (5%), उत्तराखंड को 230 करोड़ (13%) और राजस्थान को 139 करोड़ (3%) का नुकसान हुआ है. वहीं, हिमाचल प्रदेश में 145 करोड़ की कमी 17 प्रतिशत की गिरावट दर्शाती है. काउंसिल के अनुसार, अक्टूबर माह में टैक्स वसूली में गिरावट का मुख्य कारण दरों में कमी, औद्योगिक उत्पादन में मंदी और कुछ राज्यों में प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित व्यापारिक गतिविधियां रहीं.

राज्यों की चिंता, केंद्र से राहत की उम्मीद

राज्य सरकारें अब केंद्र से जीएसटी मुआवजा और वैकल्पिक राजस्व सहायता की मांग उठा रही हैं. झारखंड सरकार ने संकेत दिया है कि वह इस मुद्दे को आगामी जीएसटी काउंसिल बैठक में उठाएगी। वित्त विभाग के एक अधिकारी के अनुसार, राज्य की आर्थिक स्थिरता के लिए केंद्र को कर संरचना की समीक्षा करनी होगी. दरों में कटौती का लाभ जनता को मिले, लेकिन राज्यों को घाटे में न धकेला जाए. झारखंड के लिए यह स्थिति चेतावनी का संकेत है. यदि आगामी महीनों में राजस्व वृद्धि नहीं हुई, तो राज्य को अपने बजट लक्ष्यों और विकास योजनाओं में कटौती करनी पड़ सकती है. जीएसटी सुधारों के आठ साल बाद भी केंद्र और राज्यों के बीच राजस्व संतुलन का सवाल अब भी अनसुलझा बना हुआ है.

421 महिला सुपरवाइजर की नियुक्ति पर हाईकोर्ट से रोक बरकरार, कल सुनवाई

शुभम संदेश। रांची

झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य के बाल कल्याण विभाग में महिला सुपरवाइजर के 421 पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया पर रोक बरकरार रखी है. नियुक्ति प्रक्रिया को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर मंगलवार को जस्टिस आनंद सेन की बेंच में हुई सुनवाई के दौरान दोनों पक्षों ने दलीलें पेश कीं. प्रार्थियों की ओर से यह तर्क दिया गया कि जेएसएससी की ओर से सुपरवाइजर के पदों पर नियुक्ति के जारी विज्ञापन में केवल महिलाओं से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं, जो संविधान के प्रावधानों के अनुरूप नहीं है, क्योंकि किसी वर्ग को शत-प्रतिशत आरक्षण नहीं दिया जा सकता. दूसरी तरफ, आयोग की ओर से बताया गया कि संबंधित विज्ञापन 'महिला कैडर' के पदों के लिए जारी किया गया था, इसलिए इसमें केवल महिलाओं से आवेदन मांगे गए. जेएसएससी की ओर से अधिवक्ता संजय पिपरवाल और राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजीव रंजन ने पक्ष रखा. उन्होंने कोर्ट को बताया कि यह पद विशेष रूप से महिला पर्यवेक्षकों (सुपरवाइजरों) के लिए आरक्षित हैं, जिनकी नियुक्ति और पदस्थापना बाल संरक्षण और महिला कल्याण योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए की जानी हैं. जेएसएससी ने महिला सुपरवाइजर के 421 पदों पर नियुक्ति के लिए सितंबर 2023 में विज्ञापन जारी किया था. करीब एक साल बाद सितंबर 2024 में इसकी परीक्षा ली गई. इस वर्ष परीक्षा का रिजल्ट भी जारी किया गया. आयोग ने यह कहते हुए कुछ प्रार्थियों को चयन सूची से बाहर कर दिया कि उनकी शैक्षणिक योग्यता विज्ञापन में निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं है, जबकि सूची से बाहर किए गए और परीक्षा परिणाम को चुनौती देने वाले अभ्यर्थियों का कहना है कि उनके पास मुख्य विषय की जगह सहायक विषय की डिग्री है. नियमावली में कहीं भी इस बात का जिक्र नहीं किया गया है कि सहायक विषयों (सब्सिडियरी) की डिग्री वाले अभ्यर्थी योग्य नहीं माने जाएंगे. हाईकोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद कहा कि फिलहाल नियुक्ति पर लगी रोक बरकरार रखी है. मामले पर अगली सुनवाई 6 नवंबर को निर्धारित की गई है.

डीजीसीए का नया नियम

अब 48 घंटे के भीतर एयर टिकट कैंसिल या डेट बदलने पर नहीं देना पड़ेगा चार्ज

शुभम संदेश। रांची

अगर आप हवाई यात्रा करते हैं और टिकट कैंसिल पर आपको भारी कैंसिलेशन चार्ज चुकाना पड़ा है, तो आपके लिए राहत भरी खबर है. नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने नए नियमों का मसौदा तैयार किया है. इसके तहत अगर आप टिकट बुकिंग के 48 घंटे के भीतर अपना टिकट कैंसिल करते हैं तो आपको कोई अतिरिक्त शुल्क यानी कैंसिलेशन चार्ज नहीं देना होगा. नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने नए नियमों का मसौदा तैयार किया है, जिसके तहत हवाई यात्रियों को बुकिंग के 48 घंटे के भीतर बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के टिकट रद्द करने या संशोधित करने की सुविधा दी जाएगी तथा तेजी से रिफंड देने का प्रावधान किया गया है.

एजेंट या ऑनलाइन पोर्टल से बुकिंग पर भी मिलेगा रिफंड_ अक्सर यात्री मेक माई ट्रिप, यात्रा जैसे ऑनलाइन पोर्टल या ट्रैवल एजेंट के जरिए टिकट बुक करते हैं और कैंसिलेशन के बाद रिफंड में देरी होती है. डीजीसीए ने स्पष्ट किया है कि भले ही टिकट एजेंट या वेबसाइट के जरिए खरीदा गया हो, एयरलाइंस को ही रिफंड की जिम्मेदारी उठानी होगी.

टिकट की डेट भी बदल सकेंगे यात्री

डीजीसीए के प्रस्तावित नियम के मुताबिक, टिकट बुकिंग के 48 घंटे के भीतर यात्री अपनी टिकट की डेट भी बदल सकते हैं. इसके लिए भी आपको कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं देना होगा. हालांकि, यदि नया टिकट महंगा है, तो आपको सिर्फ किराए का अंतर चुकाना पड़ेगा.

इस पर नहीं मिलेगा फायदा

यह सुविधा उन फ्लाइट्स पर लागू नहीं होगी जिनकी यात्रा तिथि नजदीक है. यानी, घरेलू उड़ानों के लिए यदि यात्रा बुकिंग के 5 दिन के भीतर है और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए 15 दिन के भीतर, तो यह नियम लागू नहीं होगा.

झारखंड में कांग्रेस चलाएगी 'मतदाता बचाओ, लोकतंत्र बचाओ' अभियान

यूपीए गठबंधन का सफल रहा था प्रयोग : केशव महतो

शुभम संदेश। रांची

झारखंड प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए मंगलवार क कहा कि कांग्रेस लोकतंत्र की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है. पार्टी झारखंड में मतदाता बचाओ, लोकतंत्र बचाओ अभियान शुरू करने जा रही है, ताकि किसी भी नागरिक को उसके संवैधानिक मताधिकार से वंचित न किया जा सके. उन्होंने कहा कि मतदान का अधिकार हर भारतीय नागरिक का मौलिक और संवैधानिक अधिकार है, जिसे कोई भी संस्था या एजेंसी छीन नहीं सकती.

उन्होंने कहा किपार्टी को जानकारी मिल रही है कि मतदाता सूची के पुनरीक्षण के नाम पर कुछ मतदाताओं के नाम काटे जा रहे हैं. यह लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमला है. कांग्रेस चाहती है कि जो लोग पहले मताधिकार का प्रयोग कर चुके हैं, उनके नाम सूची से न हटाए जाएं अगर चुनाव आयोग किसी खास राजनीतिक दल की एजेंसी की तरह काम करेगा, तो कांग्रेस सड़क से लेकर सदन तक इसका विरोध करेगी.

किसी भी गड़बड़ी पर पार्टी की नजर: उन्होंने बताया कि झारखंड के हर विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस की ओर से बूथ लेवल एजेंट (बीएलए) नियुक्त किए जा रहे हैं. ये एजेंट मतदाता सूची के पुनरीक्षण और सत्यापन कार्य की निगरानी करेंगे तथा किसी भी गड़बड़ी की जानकारी पार्टी को देंगे. उन्होंने कहा कि बिहार में मतदाता सूची से नाम हटाने जैसी घटनाएं देखने को मिली हैं और झारखंड में भी ऐसी आशंका है, इसलिए कांग्रेस ने पहले से ही तैयारी कर ली है ताकि कोई भी नागरिक अपने वोट के अधिकार से वंचित न हो. प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि पार्टी का उद्देश्य केवल राजनीतिक लाभ नहीं बल्कि लोकतंत्र की रक्षा है. मताधिकार छीनना या वोट चोरी लोकतंत्र पर सीधा हमला है.

उन्होंने आगे बताया कि कांग्रेस पार्टी ने संविधान, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखने वाले सभी दलों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया है. यूपीए गठबंधन इसी दिशा में सफल प्रयोग है और झारखंड में महागठबंधन एकजुट होकर काम कर रहा है. विधायक प्रदीप यादव ने कहा कि कांग्रेस का संघर्ष उन शक्तियों के खिलाफ है, जो सांप्रदायिकता फैलाकर देश को कमजोर करना चाहती हैं और जो पूंजीवादी ताकतों के हित में काम करती हैं.

घाटशिला उपचुनाव में गठबंधन जीत का दावा

प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रदेश अध्यक्ष ने घाटशिला उपचुनाव का भी जिक्र किया है. उन्होंने बताया कि गठबंधन के प्रत्याशी सोमेश कुमार सोरेन के समर्थन में कांग्रेस पूरी ताकत से चुनाव मैदान में है. सभी जिला, प्रखंड और मंडल स्तर के पदाधिकारी और कार्यकर्ता बूथ-स्तर तक सक्रिय हैं. उन्होंने कहा कि गठबंधन के सभी दल एकजुट होकर काम कर रहे हैं और भारी बहुमत से उम्मीदवार की जीत तय है.

कांग्रेस मजबूत होगी तो देश मजबूत रहेगा: प्रदीप यादव

इधर, कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव ने बताया कि कांग्रेस की मजबूती ही देश की मजबूती है. उन्होंने कहा, देश की एकता, धर्मनिरपेक्षता और संविधान की अखंडता तभी सुरक्षित रह सकती है जब कांग्रेस मजबूत रहेगी. वोट का अधिकार दलितों, पिछड़ों और आम नागरिकों का अधिकार है और इसे बचाना हम सबकी जिम्मेदारी है.

राज्यपाल ने झारखंड सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विधेयक-2025 को दी मंजूरी

शुभम संदेश रांची

झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने मंगलवार को विधानसभा से पारित झारखंड सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (विशेष छूट) विधेयक, 2025 पर अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी. इस विधेयक का उद्देश्य राज्य में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के माध्यम से औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन और निवेश को बढ़ावा देना है. इस विधेयक के तहत उद्योगों की स्थापना एवं संचालन के लिए आवश्यक विभिन्न अनुमतियों और निरीक्षणों से छूट प्रदान की गई है, जिससे नए उद्यमों की स्थापना प्रक्रिया अधिक सरल और सुगम होगी. साथ ही, 'सिंगल विंडो सिस्टम' के माध्यम से लाइसेंस एवं अनुमतियों से संबंधित सभी सुविधाएं एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराई जाएंगी. यह विधेयक राज्य में एमएसएमई क्षेत्र को गति प्रदान करने, छोटे व्यवसायों के विकास को प्रोत्साहन देने और निवेश को आकर्षित करने की दिशा में सकारात्मक पहल है.

मुख्यमंत्री ने जस्टिस रोंगोन के आवास पर उनकी माता के निधन पर जताया शोक

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने मंगलवार को झारखंड उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति रोंगोन मुखोपाध्याय के डोरंडा, रांची स्थित आवास पहुंचकर उनकी माता स्मृति -शेष रीना मुखर्जी जी के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया. मुख्यमंत्री ने परिवारजनों से मुलाकात की और इस दुखद घड़ी में उनका ढांढस बंधाया. उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोक-संतप्त परिजनों को धैर्य एवं शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की. मुख्यमंत्री ने स्वर्गीय रीना मुखर्जी जी के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी.

मझिआंव सीओ निलंबित, दुर्व्यवहार और अनुशासनहीनता के आरोप में कार्रवाई

शुभम संदेश। रांची

गढ़वा जिले के मझिआंव अंचल के अंचल अधिकारी (सीओ) प्रमोद कुमार को विभिन्न गंभीर आरोपों के आधार पर झारखंड सरकार ने निलंबित कर दिया है. इस संबंध में कर्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव चिंटू दोराईबुरू ने अधिसूचना जारी की है. निलंबन की कार्रवाई गढ़वा उपायुक्त दिनेश यादव द्वारा भेजी गई अनुशंसा और आरोप पत्र के आधार पर की गई है. सीओ पर कार्यालय में आने वाले लोगों के साथ दुर्व्यवहार, अभद्र भाषा का प्रयोग, धमकी देना, शराब सेवन करना और अवैध लेनदेन जैसे आरोप लगाए गए हैं. निलंबन अवधि में उनका मुख्यालय दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल कार्यालय, रांची निर्धारित किया गया है.

गौरतलब है कि 1 नवंबर को सीओ प्रमोद कुमार का एक व्यक्तिगत विवाद सुर्खियों में आया था, जब उनकी पत्नी श्यामा रानी अपने मायके गया (बिहार) से आकर मझिआंव स्थित सरकारी आवास पर पहुंचीं और उन्हें एक अन्य महिला के साथ आपत्तिजनक स्थिति में पाया. इसके बाद कई घंटे तक हाईवोल्टेज ड्रामा चला. सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और संबंधित महिला को गढ़वा महिला थाना ले जाया गया, जहां से बाद में उसे परिजनों के हवाले कर दिया गया.

सीओ की पत्नी ने मझिआंव थाना में दर्ज प्राथमिकी में आरोप लगाया है कि 2020 में जेपीएससी के माध्यम से सेवा में आने के बाद से उनके पति के अनेक महिलाओं से अवैध संबंध रहे हैं. विरोध करने पर उन्हें मारपीट कर घर से निकाल दिया गया.उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सीओ ने उनके पिता से 50 लाख रुपये की मांग की थी और उनके गहने जब्त कर लिए.

पाकुड़ में खनन टास्क फोर्स की छापेमारी

19 वाहनों से 89 हजार वसूला जुर्माना

शुभम संदेश। रांची

पाकुड़ जिले में खनन टास्क फोर्स की टीम ने सोमवार रात हिरणपुर थाना क्षेत्र के मुख्य मार्ग पर विशेष जांच अभियान चलाया. अभियान के दौरान टीम ने पाया कि कुछ भारी वाहन जिला प्रशासन के निर्देशों का पालन नहीं कर रहे थे और नो एंट्री क्षेत्र का उल्लंघन कर रहे थे. इसके बाद टीम ने 20–25 वाहनों की जांच की, जिसमें से 19 वाहनों पर कार्रवाई की गई और 89,800 रुपये की राशि ई-पॉस मशीन के माध्यम से दंडस्वरूप वसूली गई. वाहन चालकों को चेतावनी दी गई कि भविष्य में यदि ऐसा उल्लंघन किया गया, तो उनके वाहन को जब्त कर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी. जिला खनन पदाधिकारी राजेश कुमार ने बताया कि अवैध खनन और नियमों के उल्लंघन पर प्रशासन की शून्य सहनशीलता नीति अपनाई गई है.

उन्होंने कहा कि आम जनता की सुविधा और सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ऐसे जांच अभियान निरंतर जारी रहेंगे. इस अभियान में जिला खनन पदाधिकारी राजेश कुमार, अंचल अधिकारी हिरणपुर मनोज कुमार, माइनिंग इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह, नवीन कुजूर, जिला सड़क सुरक्षा प्रबंधक रितेश कुमार सिंह, परिवहन विभाग के कर्मचारी और हिरणपुर थाना पुलिस बल मौजूद रहे.

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मंगलवार को कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में इंडियन बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी बिनोद कुमार, महाप्रबंधक चंद्रशेखरन वी, मुख्य महाप्रबंधक विवेक एवं क्षेत्रीय प्रबंधक राजेश शरण ने मुलाकात की. मुख्यमंत्री से यह उनकी शिष्टाचार भेंट थी.

मंत्री का बेटा अब डायरेक्ट मंत्री नहीं बनेगा, तो 11वां कौन?

दशरथ गगराई, सविता और मथुरा महतो रेस में

शुभम संदेश। रांची

झारखंड में मंत्री का बेटा अब डायरेक्ट मंत्री नहीं बनेगा. पहले चुनाव लड़ेगा, जीतेगा और जब राजनीति के दांव-पेंच सीख लेगा, तब मंत्री बनाने का सोचा जाएगा. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने रामदास सोरेन के पुत्र सोमेश चंद्र सोरेन को मंत्री बनाने से मना कर दिया है. रामदास सोरेन के निधन के बाद यह कयास लगाये जा रहे थे कि उनकी पत्नी या बेटे को मंत्री बनाकर फिर चुनाव लड़ाया जाएगा, लेकिन हेमंत सोरेन ने भरी सभा में सोमेश को मंत्री बनाने से डायरेक्ट इनकार कर दिया है. पहले तो ऐसा नहीं होता था. हेमंत सरकार में दो-दो मंत्रियों के निधन के बाद उनके परिवार के लोगों को पहले मंत्री बनाया गया और फिर उन्हें चुनाव लड़वाया गया. इसका फायदा भी पार्टी को मिला. हाजी हुसैन अंसारी के निधन के बाद उनके बेटे हफीजुल हसन को हेमंत ने पहले मंत्री बनाया और फिर उपचुनाव लड़वाया. इसके बाद मंत्री जगरनाथ महतो के निधन के बाद उनकी पत्नी बेबी देवी को हेमंत ने पहले मंत्री बनाया और फिर डुमरी से उपचुनाव लड़वाया.

दोनों बार हेमंत सोरेन की यह रणनीति काम कर गई. हफीजुल और बेबी देवी दोनों उपचुनाव जीत गये. तीसरी बार रामदास सोरेन के निधन के बाद भी यही उम्मीद जताई जा रही थी कि उनकी पत्नी या बेटे को मंत्री बनाया जाएगा, लेकिन मंत्री नहीं बनाया गया. लोगों ने सोचा हो

सकता है कि उपचुनाव जीतने के सोमेश को मंत्री बना दिया जाएगा, लेकिन हेमंत ने तो साफ लहजे में कह दिया कि इस नौजवान को आज के लिए नहीं आने वाली पीढ़ी के लिए तैयार किया जाएगा. हेमंत सोरेन की यह कौन सी नई रणनीति है यह तो वही बता सकते हैं. हेमंत सोरेन के चुनावी भाषण में यह साफ नजर आया कि वे सोमेश सोरेन की क्षमता को कम आंक रहे हैं. 39 साल के सोमेश उन्हें मैच्योर नहीं लग रहे. जब पहली बार हफीजुल हसन और बेबी देवी को मंत्री बनाया गया था और उपचुनाव लड़वाया गया था उस वक्त वे दोनों राजनीति में नये खिलाड़ी थे. एक गृहणी और दूसरे सरकारी कर्मचारी थे, जबकि सोमेश के पास बीटेक की डिग्री और पिता रामदास सोरेन के साथ राजनीतिक कामकाज में हाथ बटाने का अनुभव है. तो फिर उनमें हेमंत को मंत्री बनने की योग्यता क्यों नजर नहीं आ रही है.

खैर जो भी हो, लेकिन एक सवाल जरूर खड़ा हो रहा है कि जब सोमेश मंत्री नहीं बनेंगे तो हेमंत सरकार का 11वां मंत्री आखिर कौन होगा. रामदास सोरेन के निधन के बाद 11वें मंत्री का पद अगस्त महीने से खाली है. रामदास सोरेन का प्रमुख विभाग शिक्षा मुख्यमंत्री के पास है. अभी इस सरकार का करीब 4 साल का कार्यकाल बाकी है. मंत्री तो बनाना ही होगा. अब सवाल ये उठ रहा है कि 11वां मंत्री कौन होगा. चर्चा है कि इस बार मंत्री का पद किसी कुर्मी जाति के विधायक को मिल सकता है. दरअसल हेमंत कैबिनेट में जेएमएम कोटे से एक भी कुर्मी जाति का मंत्री नहीं है. हेमंत कैबिनेट में फिलहाल सीएम समेत 4 मंत्री आदिवासी हैं, जिसमें से 3 जेएमएम से हैं. जब कैबिनेट का गठन हुआ था उस वक्त रामदास सोरेन समेत 5 मंत्री आदिवासी कोटे से थे, जबकि कुर्मी जाति से एक भी विधायक को जगह नहीं मिली थी. झारखंड में कुर्मियों को संख्या ज्यादा है. इसलिए कुर्मी जाति से जेएमएम विधायक सविता महतो या मथुरा महतो को मंत्री बनाया जा सकता है. हेमंत कैबिनेट में कांग्रेस कोटे से पहले से ही दो महिला मंत्री हैं. ऐसे में सविता महतो को मंत्री बनाकर जेएमएम महिला वोटरों को यह संदेश देना चाहेगी की जेएमएम भी महिलाओं को राजनीति में उचित भागीदारी देने की पक्षधर है, लेकिन अगर कोल्हान से किसी विधायक को मंत्री बनाया जाता है तो सबसे मजबूत दावेदारी खरसावां विधायक दशरथ गगराई की होगी.

बिहार में प्रचंड बहुमत से एनडीए की सरकार बन रही: प्रतुल शाहदेव

शुभम संदेश। रांची

बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण की 121 सीटों पर मतदान के

लिए चुनाव प्रचार अपने चरम पर है. प्रचार में वादे-इरादे और आरोप-प्रत्यारोप हैं. इसी कड़ी में भाजपा प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने बिहार में प्रचंड बहुमत से एनडीए सरकार बनने का दावा किया है. भाजपा प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने मंगलवार को कहा, 121 सीटों के लिए चुनाव प्रचार समाप्त हो गया है. हम स्पष्ट बहुमत के अपने लक्ष्य का लगभग 70 प्रतिशत हासिल करने की राह पर हैं. बिहार में एनडीए को लेकर लोगों में उत्साह है, एक बड़ी लहर प्रधानमंत्री की रैलियों, हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष के कार्यक्रमों और नीतीश कुमार की सभाओं में दिखाई दे रही है. उन्होंने कहा कि यहां लोगों में उत्साह देखने को मिल रहा है. उत्साह देखकर ही कहा जा सकता है कि बिहार की जनता तेजस्वी यादव को सत्ता में नहीं लाने वाली है. बिहार की जनता को वो जंगलराज अभी भी याद है और बिहार में जब इनके पिता लालू यादव सत्ता में थे तो बिहार कैसा था. लोग आज वो दिन याद करके डर जाते हैं. प्रतुल शाहदेव ने आगे कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार प्रगति कर रहा है. लोगों के लिए सरकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिसका फायदा भी उनको मिल रहा है. हम लोग पहले चरण में ही दो तिहाई सीटों से चुनाव जीतने वाले हैं. यह महागठबंधन को भी पता चल गया है कि उनकी सरकार नहीं बनने वाली है.

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

रांची, बुधवार 05 नवंबर 2025 I कार्तिक पूर्णिमा, संवत 2082 I रांची एवं पटना से प्रकाशित I वर्ष : 3, अंक : 205 I मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

कैंसर के कारोबारी

देश भर में प्रतिबंधित थाई मांगुर मछली की झारखंड में बेखौफ तस्करी

यादव और विपुल गिरोह में तनाव, गिर सकती हैं लाशें

रिजवान शम्स

- प्रतिबंधित मछलियों की पासिंग के लिए कई गुटों में है विवाद
- सबसे अधिक डाक बोलने वाले गिरोह को मिलता है परमिशन

किस्त - 6

धनबाद (शुभम संदेश)। थाईलैंड की प्रतिबंधित मांगुर मछली के खिलाफ शुभम संदेश की जारी मुहिम में कैंसर बांटने वाली इस मछली के अवैध कारोबार के पूरे साम्राज्य को सार्वजनिक किया गया. झारखंड, बंगाल, बिहार और यूपी तक फैले इस कारोबार के कई चेहरे सामने लाए गए. हमने बताया कि कैसे इस अवैध कारोबार को रोकने वाले हाथ नोटों के बंडल के आगे नतमस्तक हैं, वे ही इन्हें संरक्षित कर रहे हैं और इस अवैध कारोबार के व्यापक फैलाव में मददगार बन चुके हैं. आज की रिपोर्ट में हम बताएंगे कि इस अवैध कारोबार को संचालित करने वाले गिरोहों में क्या उठा-पटक चल रही है. तो फिर चलिए.... झारखंड समेत चार राज्यों में थाई मांगुर मछली की तस्करी से हो रही कमाई जानलेवा साबित हो सकती है, क्योंकि एनएच पर मैथन चेकपोस्ट से इन मछलियों से लदे ट्रकों की पासिंग कराने वाले गुटों में भारी तनाव व्याप्त है. वैसे तो अवैध कमाई के कारण इस कारोबार और विवादों के बीच काफी पुराना नाता रहा है. अब पासिंग पाने की खींचतान इस बार कुछ अधिक खतरनाक स्तर तक पहुंच चुकी है. इस तनाव से एनएच पर लाशें तक गिर सकती हैं. वहीं इन गुटों में तनाव का फायदा उन्हें मिल रहा है, जो कानूनी रूप इन्हें रोकने के लिए तैनात हैं. लेकिन पासिंग पाने के लिए इन्हें ही चढ़ावा देना पड़ता है, सबसे अधिक चढ़ावा देने वालों को ही पासिंग का काम मिलता है. हम पहले ही बता चुके हैं कि पासिंग का परमिशन लेने के लिए लाखों रुपये लगाने पड़ते हैं. बाजाप्ता इसे डाक का नाम दे दिया गया है. डाक की रकम 15 से 25 लाख तक हो सकती है. इधर जिसने अधिक बोली लगाई, पासिंग का काम उसे मिल गया. लेकिन दूसरा गुट चुप नहीं बैठता, वो पासिंग लेने वाले गुट के खिलाफ साजिश रचने का काम करता है. यही कारण है कि एनएच पर जल्द ही बड़े विवाद से इंकार नहीं किया जा सकता है. फिलहाल पासिंग में यादव और विपुल गिरोह के बीच काफी तनाव की बातें कही जा रही हैं. क्योंकि पासिंग पिछले कुछ दिनों से इन दोनों गुटों के ही झोली में आती है. इन दोनों के अलावा भी कई और भी गुट हैं, जो पूर्व में तस्करी में पासिंग कराने वाली भूमिका निभा चुके हैं. ऐसे गुट जो पहले लाखों की कमाई कर चुके हैं, वे भी अपनी बारी फिर से आने की चाहत में तरह-तरह की मेहनत करते रहते हैं.

सफेदपोश, गैंगस्टर से लेकर जनप्रतिधि तक शामिल

कैंसर बांटने वाली इस प्रतिबंधित मछली के काले कारोबार में सफेदपोश, जनप्रतिधि, गैंगस्टर और अपराध कर्मियों का गठजोड़ है. धनबाद के कई ऐसे सफेदपोश चेहरे हैं, जो इस अवैध कारोबार में संलिप्त है. निरसा क्षेत्र का एक जन प्रतिनिधि भी शामिल है, अल्पसंख्यक समुदाय के इस प्रतिनिधि के कई और भी किस्से हैं. पासिंग में यादव गुट हो या फिर विपुल गुट दोनों के बीच इनकी भूमिका कायम रहती है. दोनों गुटों के पास पूरा का पूरा गिरोह है, जो रात में हथियार से लैस होकर चार पहिया वाहनों में सवार होकर मैथन से लेकर तोपचांची तक की गश्त लगाता है. क्योंकि इन्हें मछली लदे ट्रकों को सुरक्षित तरीके से धनबाद जिला का बार्डर पार कराना होता है और उन्हें इस मेहनत की कीमत बंगाल में बैठे इस पूरे कारोबार के मास्टर माइंडों द्वारा दी जाती है.

एक साल में नहीं हो सकी बड़ी कार्रवाई

मैथन चेकपोस्ट में एक साल पूर्व छापेमारी हुई थी. एसएसपी की स्पेशल टीम ने वहां से तीन ट्रकों को पकड़ा था. इन ट्रकों में करीब 25 लाख रुपये की थाई मछलियां बरामद की गई थी. साथ ही दस लोगों को दबोचा गया था. इसके बाद से पुलिस ने कोई बड़ी कार्रवाई इस गिरोह के खिलाफ नहीं की है. जबकि ऐसा कोई दिन नहीं है और न ही कोई रात, जब एनएच से होकर इन प्रतिबंधित मछलियों को लेकर दर्जनों ट्रक नहीं गुजरते हों.

धनबाद के बरमसिया रेलवे ट्रैक पर बुजुर्ग रेलकर्मी की दर्दनाक मौत

शुभम संदेश। धनबाद

धनबाद शहर के बरमसिया रेलवे ट्रैक पर मंगलवार दोपहर एक बुजुर्ग रेलकर्मी की ट्रेन से कटकर मौत हो गई. घटना की सूचना मिलते ही धनसार थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी. शव बुरी तरह क्षत-विक्षत अवस्था में मिला है. प्राथमिक जांच में धनसार के एएसआई एन ठाकुर ने बताया कि मृतक की ट्रेन से कटने से मौत हुई है. बताया जा रहा है कि मृतक सेवानिवृत्त रेल कर्मचारी थे, जो बरमसिया क्षेत्र के ही निवासी बताए जा रहे हैं. घटना की जानकारी मिलते ही आसपास के लोग बड़ी संख्या में रेलवे ट्रैक के पास जुट गए. भीड़ के कारण कुछ समय तक रेल यातायात भी बाधित रहा. बाद में पुलिस ने लोगों को हटाकर ट्रैक को खाली कराया. मृतक के परिजन भी घटनास्थल पर पहुंचे, लेकिन उन्होंने मीडिया से कुछ भी बताने से इनकार कर दिया. पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है. जीआरपी के आउटसोर्स कर्मचारी राकेश कुमार ने बताया कि स्टेशन मास्टर से सूचना मिली थी कि बरमसिया रेलवे ट्रैक पर एक व्यक्ति की मौत हो गई है, जिससे यातायात बाधित हो रहा है. सूचना मिलते ही टीम मौके पर पहुंची और पाया कि क्षेत्र धनसार थाना के अधीन है. मृतक की पहचान एक सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी के रूप में हुई है.

65 टन अवैध कोयला किया जब्त

शुभम संदेश। हजारीबाग

- हजारीबाग में कई जगहों पर चल रहा कारोबार

वन विभाग की छापेमारी में हजारीबाग में चल रहे अवैध कोयला कारोबार का खुलासा हुआ है. यहां बड़कागांव के गोंदलपुर के जोराकाठ में छापेमारी कर वन विभाग ने 65 टन अवैध कोयला जब्त किया है. सूत्रों ने हजारीबाग के कई इलाकों में अवैध कोयले का कारोबार चलने की जानकारी दी है. बताया जाता है कि संजय सिंह और संजू सिंह नाम के लोग कोयला का अवैध कारोबार चला रहे हैं. कुछ लोगों का कहना है कि दोनों नाम एक ही व्यक्ति के है. इनके द्वारा 14 माईल, बेहरा, नानो, लुड़ंगा, नापो, जोड़ा आदि क्षेत्रों में कोयले का अवैध कारोबार कराया जा रहा है. भोलू, राजेंद्र सिंह, डब्बू सिंह आदि का नाम भी कोयला कारोबार करने वालों में है. अवैध तरीके से कोयले का खनन करके हजारीबाग के चितपुरनी स्थित एक फैक्ट्री में पहुंचाया जाता है. इसके अलावा रामगढ़ की एक फैक्ट्री में भी कोयला पहुंचाया जा रहा है. वहीं अच्छी क्वालिटी के कोयले को डेहरी मंडी पहुंचाया जाता है, ताकि कोयला जल्दी बिक जाये. अवैध कोयला कारोबार को रोकने की जिम्मेदारी जिन पर हैं, उन्हें कोयला कारोबारियों ने फिक्स कर दिया है. एक-दो तो पार्टनर ही बन गए हैं. इस कारण वह कार्रवाई नहीं कर रहे हैं. यही कारण है कि कोयले का अवैध कारोबार बेरोक-टोक चल रहा है.

18 नवंबर से 15 दिसंबर तक झारखंड में आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम

- उपायुक्तों को लगभग एक महीने तक आयोजित होनेवाले इस कार्यक्रम के दौरान पंचायत स्तर पर शिविरों का आयोजन करने और लोक कल्याणकारी योजनाओं का अधिकाधिक लाभ शिविर में ही आमजनों को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया जा रहा है.
- पूर्व की तरह शिविरों में आमजनों को राज्य सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी.

शुभम संदेश। रांची

झारखंड राज्य में इस वर्ष फिर 18 नवंबर से 15 दिसंबर तक आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा. आधिकारिक जानकारी के अनुसार मुख्य सचिव अविनाश कुमार द्वारा जल्द ही इस संबंध में सभी अपर मुख्य सचिवों, प्रधान सचिवों, सचिवों, प्रमंडलीय आयुक्त और जिला उपायुक्तों कार्यक्रम आयोजित करने का आधिकारिक निर्देश जारी कर दिया जाएगा. सरकार ने आपकी योजना, आपकी सरकार... कार्यक्रम की तिथि को 14 नवंबर को घाटशिला उप चुनाव का आने वाले परिणाम और 15 नवंबर को राज्य स्थापना दिवस जैसी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया है. साथ ही 15 दिसंबर को आपकी योजना...कार्यक्रम को इसलिए भी समाप्त किया जा रहा है, क्योंकि 20 दिसंबर से राज्य में क्रिसमस का त्योहार शुरू हो जाता है.

उपायुक्तों को निर्देश : उपायुक्तों को लगभग एक महीने तक आयोजित होनेवाले इस कार्यक्रम के दौरान पंचायत स्तर पर शिविरों का आयोजन करने तथा लोक कल्याण कारी योजनाओं का अधिकाधिक लाभ शिविर में ही आमजनों को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया जा रहा है. साथ ही उपायुक्तों और अन्य अधिकारियों को व्यक्तिगत योजनाओं को सैचुरेशन मोड में लागू करने की दिशा में पहल करने का सुझाव है. ताकि कोई भी आहर्ता प्राप्त व्यक्ति किसी योजना के लाभ से वंचित नहीं हो सके. यह भी सुनिश्चित करने का सुझाव है कि प्रत्येक पंचायत में कम से कम एक शिविर का आयोजन हो. आयोजित होनेवाले शिविर, स्थल और तिथि की जानकारी जनप्रतिनिधियों को भी देने का निर्देश दिया जा रहा है. प्राप्त शिकायतों को पोर्टल पर रजिस्टर्ड किया जाएगा एवं उसका ऑन स्पॉट निवारण की भी कोशिश की जाएगी.

शिविरों में क्या-क्या होगा : पूर्व की तरह शिविरों में आमजनों राज्य सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी. आमजनों से उन शिविरों में लोक कल्याणकारी योजनाओं एवं समस्याओं से संबंधित आवेदन प्राप्त किए जाएंगे. मौके पर ही आवेदनों का निष्पादन करने की कोशिश की जाएगी. कार्यक्रम में मुख्य रूप से झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना, अबुआ स्वास्थ्य सुरक्षा योजना, अबुआ आवास योजना, मुख्यमंत्री पशुधन योजना, बिरसा हरित ग्राम योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, सर्वजन पेंशन योजना, सावित्री बाई फूले किशोरी समृद्धि योजना, हरा राशन कार्ड, बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना, मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना, गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड, जाति-आवासीय-आय प्रमाण पत्र और किसान क्रेडिट कार्ड से जुड़े आवेदन लिए जाएं एवं उसका निष्पादन भी किया जाएगा. उपायुक्तों से कहा जा रहा है कि जिन योजनाओं को लेकर लक्ष्य से अधिक आवेदन प्राप्त होंगे, उसके लिए प्रतीक्षा सूची का निर्माण किया जाएगा. शिविरों में सभी प्रकार की पेंशन योजनजाएं, आयुष्मान कार्ड वितरण, सामुदायिक व व्यक्तिगत वन पट्टा के भी आवेदन प्राप्त किए जाएंगे. प्रत्येक शिविर में कल्याण मंच बनाया जाएगा. धोती साड़ी और एसएचजी कलस्टर सदस्यों के बीच आईडी कार्य का वितरण किया जाएगा.

स्कूली बच्चों को जाति प्रमाण पत्र और साइकिल क्रय के लिए चेक मिलेगा : पूर्व में स्कूली बच्चों को जाति प्रमाण पत्र निर्गत करने के लिए अभियान चलाया गया था. इस अभियान के तहत निर्मितजाति प्रमाण पत्रों को लैमिनेशन करा कर वितरित किया जाएगा. प्रत्येक शिविर में छात्र छात्राओं के बीच साइकिल क्रय के लिए प्रतिकात्मक रूप से चेक भी दिया जाएगा.

झारखंड के 25 हजार पीडीएस डीलरों को मिलेगा बकाया कमीशन

सरकार ने जारी किए 52 करोड़

- केंद्र सरकार ने अक्टूबर 2025 में 38.76 करोड़ रुपये की मंजूरी दी थी, जिसके बाद राज्य सरकार ने अतिरिक्त 52.03 करोड़ रुपये देने का निर्णय लिया.

शुभम संदेश। रांची

झारखंड सरकार ने राज्य के 25,000 से ज्यादा पीडीएस डीलरों को बड़ी राहत दी है. सरकार ने 14 महीने से रुके हुए डीलर कमीशन का भुगतान करने के लिए 52 करोड़ रुपये से अधिक की राशि जारी कर दी है. यह राशि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के तहत डीलर कमीशन और खाद्यान्न ढुलाई के लिए प्रदान की जाएगी. इस राशि का भुगतान एसएनए-एसपीएआरश प्रणाली के माध्यम से ऑनलाइन डीलरों के बैंक खातों में किया जाएगा. गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने अक्टूबर 2025 में 38.76 करोड़ रुपये की मंजूरी दी थी, जिसके बाद राज्य सरकार ने अतिरिक्त 52.03 करोड़ रुपये देने का निर्णय लिया. इससे पहले मई और जुलाई में कुल 72 करोड़ रुपये से अधिक की राशि का आवंटन किया गया था. रांची जिले में करीब 2000 पीडीएस डीलर हैं, जिनमें से 1800 डीलरों के बैंक विवरण पूर्ण हो चुके हैं. बाकी डीलरों के खातों में सुधार का काम चल रहा है. विभाग का कहना है कि अगले 15 दिनों में सभी डीलरों को भुगतान मिल जाएगा. यह भुगतान एसपीएआरस प्रणाली के जरिए किया जाएगा, ताकि किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो. राज्य स्तर पर खाद्य एवं उपभोक्ता निदेशालय इस भुगतान प्रक्रिया की निगरानी करेगा और जिला आपूर्ति पदाधिकारी (डीएसओ) को भुगतान की जिम्मेदारी सौंपी गई है. राशि का उपयोग सरकारी नियमों के अनुसार ही किया जाएगा, और भुगतान के बाद जिलों को उपयोगिता प्रमाणपत्र (यूसी) भेजना होगा. महालेखाकार, झारखंड द्वारा व्यय का ब्यौरा जांचा जाएगा.

नक्सल हिंसा पीड़ितों के आश्रितों को एक दशक बाद मिलेगा मुआवजा

रांची । झारखंड में नक्सल हिंसा में मारे गए लोगों के आश्रितों को एक दशक से ज्यादा समय बीत जाने के बाद आखिरकार मुआवजा मिलेगा. गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग ने इस संबंध में आदेश जारी कर दिया है. यह मुआवजा चाईबासा, गुमला, लातेहार और देवघर जिलों में नक्सली हिंसा का शिकार हुए पांच लोगों के परिवारों को दिया जाएगा. जारी आदेश के अनुसार, इन पांचों पीड़ितों के आश्रितों को एक-एक लाख रुपये की राशि बतौर मुआवजा प्रदान की जाएगी. विभाग ने संबंधित जिलों के डीसी को जल्द से जल्द यह राशि वितरित करने का निर्देश दिया है.

पांच लोगों के परिवारों को मिलेगा मुआवजा : - देवघर जिले के विष्णु प्रसाद आठ नवंबर 2008 को नक्सली हिंसा में मारे गए थे. इनकी पत्नी हमेंती देव्या को एक लाख रुपया का मुआवजा मिलेगा. - चाईबासा जिले के बुधनाथ हस्सा पूर्ति 28 जून 2012 को नक्सली हिंसा में मारे गए थे. इनकी पत्नी रामदी सोए को एक लाख रुपया का मुआवजा दिया जाएगा. - गुमला जिले के रितु बढ़ई 12 अगस्त 2013 को नक्सली हिंसा में मारे गए थे. इनकी पत्नी बालो सोय को एक लाख रुपया का मुआवजा मिलेगा. - लातेहार जिले के सलमान अंसारी 18 अगस्त 2013 को नक्सली हिंसा में मारे गए थे. इनकी पत्नी शब्बा प्रवीण को एक लाख रुपया का मुआवजा दिया जाएगा.

प्रिंस खान के गुर्गों की तलाश | वासेपुर में छापेमारी, दो संदिग्ध हिरासत में

शुभम संदेश। धनबाद

गैंगस्टर प्रिंस खान के गुर्गों की तलाश में धनबाद शहर के वासेपुर-पांडरपाला, राहमतगंज, लाला टोला, कबाड़ी पट्टी और बरवाअड्डा थाना क्षेत्र के कुर्मिडीह में मंगलवार की सुबह से ही पुलिस की दबिश ने इलाके में हड़कंप मचा दिया. पुलिस की कई टीम एसएसपी के निर्देश पर सिटी एसपी एवं ग्रामीण एसपी के नेतृत्व में छापेमारी अभियान को अंजाम दिया. इस दौरान पुलिस ने दो लोगों को हिरासत में लिया है.

इस छापेमारी में पुलिस ने वासेपुर के लाला टोला से मोहम्मद सामी को हिरासत में लिया है. इसके अलावा तौफीक नामक एक शख्स को भी पुलिस ने पूछताछ के लिए दबोचा है. वहीं कुर्मिडीह में किशन खान के घर पर भी पुलिस ने दबिश दी, जो प्रिंस खान का करीबी बताया जाता है. बैंक मोड़ थाना क्षेत्र स्थित कबाड़ी पट्टी निवासी फहीम खान के भाई परवेज के आवास पर भी पुलिस पहुंची.

पुलिस सूत्रों की माने तो रंगदारी वसूली सहित कई अन्य आपराधिक गतिविधियों के मामले का फरार आरोपित प्रिंस खान गिरोह के गुर्गों को दबोचने के लिए पुलिस यह छापेमारी कर रही है. जिससे जिले के व्यवसायी, ठेकेदार और अन्य पूंजीपतियों को कुख्यात अपराधी प्रिंस खान के आतंक से निजात दिलाया जा सके. उल्लेखनीय है कि गत 3-4 वर्षों से प्रिंस खान नामक अपराधी ने जिले में आतंक फैला कर रंगदारी वसूली को अपना व्यवसाय बना रखा है. इस अवैध मंसूबे को पूरा करने के लिए प्रिंस खान के निर्देश पर उसके गुर्गे हत्या, गोलीबारी और धमकी जैसी घटनाओं को अपना अंजाम देते रहते हैं. इसमें वासेपुर, आरा मोड़, पांडरपाला सहित कई अन्य स्थानों पर रहने वाले आपराधिक प्रवृति वाले लोग उसके गुर्गे के तौर पर काम करते है. हाल ही में धनबाद पुलिस और कुख्यात प्रिंस खान से जुड़े जमशेदपुर के गैंगस्टर भानु मांझी के बीच मुठभेड़ हुई थी. मुठभेड़ में भानु घायल हो गया था. फिलहाल भानु मांझी धनबाद पुलिस की गिरफ्त में है.

हुसैनाबाद पुलिस की बड़ी कार्रवाई, एक तस्कर गिरफ्तार, हड़कंप

दो हजार बोतल अवैध देसी शराब बरामद

शुभम् संदेश। हुसैनाबाद (पलामू)

अवैध शराब कारोबार पर नकेल कसते हुए पुलिस ने सोमवार की देर रात बड़ी सफलता हासिल की है. गुप्त सूचना के आधार पर की गई इस कार्रवाई में पुलिस ने कजरात-नावाडीह रेलवे स्टेशन के पास झाड़ियों में छिपाकर रखी गई भारी मात्रा में देशी शराब बरामद की है.

हुसैनाबाद के एसडीपीओ सह आईपीएस अधिकारी एस. मोहम्मद याकूब ने अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि सोमवार की रात करीब दो बजे दंगवार ओपी प्रभारी पुअनि सोनु कुमार गुप्ता को सूचना मिली कि झाड़ियों में अवैध शराब का बड़ा जखीरा छिपाया गया है. सूचना मिलते ही उन्होंने वरीय पदाधिकारियों को अवगत कराते हुए एक संयुक्त छापामारी टीम का गठन किया. मोहम्मद याकूब ने कहा कि टीम में दंगवार ओपी पुलिस के साथ आरपीएफ कजरात-नावाडीह की टीम भी शामिल थी. संयुक्त टीम ने मौके पर पहुंचकर छापामारी की तो झाड़ियों में छिपाकर रखे गए 23 बोरे में भरे 92 पेटी देसी शराब (छवेली और टनाका ब्रांड) के साथ एक स्प्लेंडर प्लस मोटरसाइकिल (संख्या-जेएच03एएस-4069) बरामद की गई. कुल लगभग दो हजार बोतल देशी शराब की बरामदगी हुई है. उन्होंने कहा कि छापामारी के दौरान राजन कुमार सिंह (पिता–सुरेन्द्र सिंह, ग्राम–कजरात नावाडीह, थाना–हुसैनाबाद, जिला–पलामू) को मौके से गिरफ्तार किया गया. उसे विधिवत गिरफ्तार कर थाना लाया गया और उसके खिलाफ हुसैनाबाद थाना कांड संख्या 252/25 दर्ज किया गया है. यह मामला धारा 274/275/317(5)/3(5) भा.दं.सं. एवं 47(ए) उत्पाद अधिनियम के तहत दर्ज किया गया है. छापामारी दल में शामिल पुलिसकर्मी पुअनि० सोनु कुमार गुप्ता (प्रभारी, दंगवार ओपी), आरक्षी अमर कुमार, धनश्याम प्रसाद, फेकन राम, विकास कुमार एवं आरपीएफ कजरात-नावाडीह की टीम शामिल थी. पुलिस ने जब्त शराब और बाइक को सील कर थाने में सुरक्षित रखा है. गिरफ्तार तस्कर को न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है. इस कार्रवाई को हुसैनाबाद पुलिस की बड़ी सफलता माना जा रहा है, जिसने क्षेत्र में चल रहे अवैध शराब कारोबारियों में हड़कंप मचा दिया है.

लातेहार में पारा 15 डिग्री के करीब पहुंचा अब ठंड और बढ़ेगी

रांची । झारखंड के लोगों के अब सर्दी सताने लगी है. राज्य के जिला लातेहार में तो न्यूनतम तापमान गिर कर 15.8 डिग्री तक पहुंच गया है. आने वाले दिनों में राजधानी रांची सहित राज्य के विभिन्न जिलों में ठंड के और बढ़ने की संभावना है. यह जानकारी मौसम विभाग ने मंगलवार को दी. मौसम विभाग के अनुसार, फिलहाल झारखंड में मौसम साफ रहेगा. रात और सुबह में कई जिलों में कुहासा छाया रहेगा और दिन में कभी-कभी आंशिक बादल भी रहेंगे. झारखंड में पिछले 24 घंटों के दौरान सबसे अधिक तापमान सरायकेला में 32.3 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया. इस दौरान राज्य में कहीं भी बारिश दर्ज नहीं की गई है. इससे सुबह और रात में कनकनी महसूस हो रही है. राजधानी रांची और आसपास के इलाकों में मंगलवार की सुबह से मौसम साफ रहा और धूप खिली रही.

कोडरमा: लिट्टी-चावल खाकर एक ही परिवार के पांच लोग बीमार हुए

कोडरमा । जिले में फूड पॉइजनिंग का एक मामला मंगलवार को सामने आया है. डोमचांच प्रखंड अंतर्गत बेहराडीह गांव में एक ही परिवार के पांच सदस्य फूड पॉइज़निंग के शिकार हो गए हैं. परिवार की मां सहित बच्चे दस्त की शिकायत से पीड़ित हो गए. मामले की जानकारी देते हुए फूड पॉइजनिंग की शिकार उक्त परिवार की पीड़िता 18 वर्षीया रीना कुमारी ने बताया कि परिवार के सभी सदस्यों ने चावल और लिट्टी का सेवन किया था. खाना खाने के तुरंत बाद सभी सदस्यों की धीरे-धीरे तबीयत बिगड़ने लगी. जिसके बाद पहले तो उनलोगों द्वारा घरेलू उपचार किया गया. लेकिन तबियत में सुधार नहीं होने पर वे लोग स्थानीय चिकित्सक के पास गए. जहां चिकित्सकों द्वारा दी गई दवाइयों का सेवन करने के पश्चात भी तबियत में जब सुधार नहीं हुआ और उनकी हालत गंभीर होने पर परिजनों द्वारा सबों को कोडरमा सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया. जहां अस्पताल में डॉक्टरों की ओर से आवश्यक उपचार दिया जा रहा है. फिलहाल सभी मरीजों की स्थिति स्थिर बताई जा रही है. डॉक्टर के मुताबिक सभी फूड पॉइजनिंग के शिकार हुए हैं.

ये हुए बीमार : बीमार पड़े लोगों की पहचान कंचन देवी (40), उनकी पुत्री स्वीटी कुमारी (13), रोशनी कुमारी (16), रीना कुमारी (18) और पुत्र अस्मित राजवंश (9) के रूप में हुई है.

धनबाद: दो बसों के बीच जोरदार टक्कर, 12 यात्री हुए घायल, भर्ती

धनबाद । राजगंज के चालीबंगला के समीप जामताड़ा से बोकारो लगु पहाड़ जा रही दो बसों के बीच जोरदार टक्कर हो गई. दोनों बसें आदिवासी मंच के कार्यक्रम में शामिल होने जा रही थीं. इस हादसे में 12 यात्री घायल हुए हैं, जिनमें एक की हालत गंभीर बताई जा रही है. घटना सोमवार देर रात की है. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार पीछे से आ रही बस ने आगे चल रही बस को तेज रफ्तार में टक्कर मार दी. टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों बसों के यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई. पीछे की बस के ड्राइवर को गंभीर चोटें आई हैं, जबकि आगे वाली बस में सवार एक यात्री के पैर की हड्डी टूट गई है. इसके अलावा अन्य कई यात्रियों को हल्की-फुल्की चोटें आई हैं. वहीं, घटना की सूचना मिलते ही राजगंज पुलिस दलबल के साथ मौके पर पहुंची और घायलों को एंबुलेंस की मदद से इलाज के लिए अस्पताल भेजा. हादसे के बाद सड़क पर लंबा जाम लग गया, इसके बाद पुलिस ने क्रेन की मदद से बसों को हटाकर देर रात यातायात बहाल किया. फिलहाल पुलिस दोनों बसों को कब्जे में लेकर मामले की जांच पड़ताल कर रही है.

कल्पना सोरेन ने सोमेश सोरेन के पक्ष में की जनसभा, मांगा समर्थन, कहा

रामदास सोरेन के सपनों को करें साकार

शुभम संदेश। रांची

घाटशिला विधानसभा उपचुनाव में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) प्रत्याशी सोमेश चंद्र सोरेन की जीत को लेकर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन मंगलवार को घाटशिला पहुंचीं. उन्होंने गालूडीह आंचलिक मैदान में आयोजित जनसभा को संबोधित किया, जहां हजारों शामिल हुए. इस दौरान कल्पना सोरेन के साथ मंत्री दीपक बिरुआ, मंत्री सुदित्य सोनू और झामुमो के कई वरिष्ठ नेता मौजूद थे. सभा के दौरान पूर्व मंत्री रामदास सोरेन की पत्नी मतदाताओं को संबोधित करते हुए भावुक हो गईं.

उन्होंने मौजूद लोगों से पुत्र सोमेश सोरेन को आशीर्वाद देने की अपील की. इस पर कल्पना सोरेन ने कहा कि 11 नवंबर को जनता को रामदास सोरेन के सपनों को साकार करना होगा. उन्होंने मंईयां सम्मान योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि झामुमो की सरकार ने हमेशा महिलाओं के सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है. उन्होंने जनता से अपील किया कि वे विकास और स्वाभिमान के इस संघर्ष में झामुमो उम्मीदवार सोमेश सोरेन को भारी मतों से विजयी बनाएं.

कार्यक्रम के दौरान भिलाईपहाड़ी गांव के युवा कलाकार सूरज चालक ने कल्पना सोरेन को दिशोम गुरु शिबू सोरेन की हस्तनिर्मित तस्वीर भेंट की. सूरज चालक ने बताया कि उन्होंने यह चित्र दिशोम गुरु के निधन के बाद उनकी स्मृति में बनाया था और आज उन्हें व्यक्तिगत रूप से सौंपकर उन्हें गर्व महसूस हो रहा है. उन्होंने कहा कि यह चित्र सिर्फ गुरुजी की याद में नहीं, बल्कि उस आत्मा को श्रद्धांजलि है जिसने झारखंड को उसकी पहचान और अधिकारों की लड़ाई सिखाई. सभा में विधायक संजीव सरदार, सामाजिक कार्यकर्ता दीपक रंजीत सहित कई स्थानीय नेता सहित अन्य उपस्थित थे.

कमल का फूल विकास, विश्वास और महिलाओं के सम्मान का प्रतीक : अन्नपूर्णा

शुभम संदेश। रांची

पूर्वी सिंहभूम जिले में केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने मंगलवार को घाटशिला विधानसभा क्षेत्र के गालूडीह और धालभूमगढ़ में आयोजित पंचायत स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन में भाग लेकर कार्यकर्ताओं में जोश भर दिया. अपने संबोधन में केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि कमल का फूल केवल एक चुनावी निशान नहीं, बल्कि यह विकास, विश्वास और महिलाओं के सम्मान का प्रतीक है. उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने अभूतपूर्व विकास की दिशा में कदम बढ़ाया है और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए ऐतिहासिक कार्य किए हैं.

उन्होंने बताया कि मोदी सरकार की उज्ज्वला योजना, जनधन योजना, पीएम आवास योजना और मातृ वंदना योजना जैसी योजनाओं ने करोड़ों महिलाओं के जीवन में परिवर्तन लाया है. उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी को देश की महिलाओं का आशीर्वाद इसलिए निरंतर मिलता रहा है, क्योंकि उन्होंने उनके सम्मान और सुरक्षा के लिए पूरी निष्ठा से कार्य किया है.

कार्यक्रम में हटिया विधायक नवीन जायसवाल ने कहा कि घाटशिला में बांग्लादेशी घुसपैठियों की बढ़ती आबादी बेहद चिंताजनक है और यह क्षेत्र के लिए एक बड़ी चुनौती बनती जा रही है. उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार ने बाहर की मुस्लिम महिलाओं के नाम को मईयां सम्मान योजना से जोड़ दिया है, जिससे स्थानीय महिलाओं के अधिकारों पर आंच आ रही है. उन्होंने कहा कि इस समस्या का समाधान केवल भाजपा सरकार ही कर सकती है. नवीन जायसवाल ने उपस्थित जनता से घाटशिला विधानसभा उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन के पक्ष में भारी मतदान करने की अपील की.

इस अवसर पर पूर्व मंत्री बड़कुंवर गागराई, विधायक शत्रुघन महतो, भाजपा के जिला और मंडल पदाधिकारी, कार्यकर्ता सहित सैकड़ों महिलाएं उपस्थित थीं.

वित्त मंत्री का पत्र राजनीतिक ढोंग, राज्य सरकार दलित विरोधी : विजय शंकर नायक

रांची। आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष विजय शंकर नायक ने वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर द्वारा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को लिखे पत्र को "राजनीतिक नौटंकी और पाखंड" बताया. उन्होंने कहा कि यह पत्र दलितों के दर्द का नहीं, बल्कि कांग्रेस-झामुमो गठबंधन की विफलता को छिपाने का प्रयास है. नायक ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार की दलित-विरोधी नीतियों ने राज्य में दलित समाज को भूख, गरीबी और अपमान की आग में झोंक दिया है. उन्होंने कहा कि पांच साल बीतने के बाद भी अनुसूचित जाति आयोग का गठन नहीं हुआ, जबकि एससी कल्याण विभाग में भ्रष्टाचार चरम पर है. भूमि सुधार, पोषण, शिक्षा व रोजगार की योजनाएं कागजी बनकर रह गई हैं. नायक ने भाजपा और हेमंत सरकार दोनों पर दलितों के अधिकारों की अनदेखी का आरोप लगाते हुए कहा कि आरक्षण और कल्याण योजनाओं को लूटा गया.

सेवानिवृत्ति की उम्र सीमा 60 वर्ष से बढ़ाकर 62 वर्ष की जाए : आदिल जहीर

रांची। झारखंड राज्य कर्मचारी महासंघ के राज्य अध्यक्ष आदिल ज़हीर ने राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर, मुख्य सचिव अविनाश कुमार से मांग करते हुए कहा कि आए दिन हो रही राज्यकर्मियों की सेवानिवृत्ति और उनकी कमी को देखते हुए राज्यकर्मियों (सरकारी कर्मियों) की सेवानिवृत्ति की उम्र सीमा 60 वर्ष से बढ़ाकर 62 वर्ष की जाए. साथ ही सचिवालय से लेकर मुफ्फसिल तक के योग्यता धारी चतुर्थवर्गीय कर्मियों को तृतीय वर्ग लिपिक में प्रोनोति देने, शिशु शिक्षण भत्ता देने, शिक्षकों को एमएसीपी का लाभ देने, रिम्स की नर्सों सहित अन्य को ओपीएस का लाभ देने, जनसेवकों एवं पंचायत सेवकों को प्रोनोति देने, लिपिकीय संवर्ग की वेतन विसंगति को दूर करने, आईटीआई के पदाधिकारियों की वेतन विसंगति दूर करने, बेरोजगारों को रोजगार देने के साथ अनुबंध एवं ठेकेदारी प्रथा पर रोक लगाने की मांग की है. महासंघ के राज्य अध्यक्ष आदिल ज़हीर ने कहा कि पूर्व में भी राज्य के समस्त राज्यकर्मी ने एक स्वर से एकताबद्ध होकर एकजुटता के साथ माननीय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से गुहार और फरियाद लगायी है. साथ ही महासंघ और समस्त राज्यकर्मियों को हेमंत सोरेन सरकार पर पूर्ण आशा और विश्वास है कि सहानुभूति के साथ गंभीरतापूर्वक पहल कर हमारी मांगों को शीघ्र पूरा करेंगे.

इंडियन बैंक के एमडी बिनोद कुमार के साथ झारखंड चैंबर की बैठक में कई अहम निर्णय

बैंकिंग और उद्योग जगत के सहयोग से राज्य में विकास की नई राह बनेगी

- एमएसएमई, कृषि और रियल एस्टेट सेक्टर पर फोकस; बैंक शाखा विस्तार, सिंगल विंडो लोन सिस्टम और साइबर सुरक्षा को लेकर चर्चा

शुभम संदेश। रांची

इंडियन बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर सह सीईओ बिनोद कुमार की अध्यक्षता में बैंकिंग क्षेत्र और उद्योग जगत के आपसी सहयोग को सशक्त बनाने के लिए झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के पदाधिकारियों व सदस्यों के साथ महत्वपूर्ण बैठक हुई. इसमें बैंक के निदेशक बालमुकुंद सहाय, जीएम (फील्ड जनरल मैनेजर-पटना) विवेक, जीएम (फाइनेंस एंड रूरल बैंकिंग) चंद्रशेखरन वी, रांची जोनल मैनेजर राजेश शरण, देवघर जोनल मैनेजर सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे.

बैठक के दौरान इंडियन बैंक के एमडी बिनोद कुमार ने चैंबर अध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा और महासचिव रोहित अग्रवाल को नए सत्र का कार्यभार संभालने पर बधाई दी और उद्योग जगत के साथ सहयोगी दृष्टिकोण अपनाने की बात कही. उन्होंने बताया कि झारखंड में इंडियन बैंक की 165 शाखाएं कार्यरत हैं और विस्तार की प्रक्रिया जारी है.बैंक का मुख्य फोकस एमएसएमई और कृषि क्षेत्र में वृद्धि पर है. एमडी ने कहा कि समय पर बैंकिंग कार्य पूर्ण करना हमारी प्राथमिकता है और राज्य में बैंक की विजिबिलिटी बढ़ाना हमारा लक्ष्य है. उन्होंने घोषणा की कि बैंक एमएसएमई कारोबार, रियल एस्टेट विकास और क्लस्टर डेवलपमेंट पर विशेष ध्यान देगा और चैंबर के सहयोग से मेला आयोजित कर मुद्रा लोन वितरित किए जाएंगे.

बैंक और उद्यमियों के पारस्परिक संबंधों पर जोर चैंबर अध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा ने बैंक और उद्यमियों के पारस्परिक संबंधों पर बल देते हुए जीएम ऑफिस, ट्रेनिंग सेंटर और रीजनल कॉन्क्लेव के आयोजन का सुझाव दिया. एमडी ने इस प्रस्ताव पर सहमति जताई और अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए. चेक क्लीयरिंग में हो रही तकनीकी समस्या पर उन्होंने कहा कि यह अस्थायी है और जल्द सभी बैंकों में समाधान होगा.

बैठक में रियल एस्टेट सेक्टर से जुड़ी समस्याओं, विशेष कर जेडीए फॉर्मेट में शेयर/मॉर्टगेज पर लोन न मिलने के मुद्दे पर भी चर्चा हुई, जिस पर एमडी ने सकारात्मक कार्रवाई का भरोसा दिलाया.पूर्व अध्यक्ष किशोर मंत्री ने लघु व्यापारियों तक सरकारी योजनाओं को पहुंचाने की जरूरत बताई, जबकि नवजोत अलंग के प्रश्न पर एमडी ने स्पष्ट किया कि चेक क्लोनिंग की स्थिति में ग्राहक की कोई जिम्मेदारी नहीं होती, यह बैंक की जवाबदेही है.

राम बांगड़ ने साइबर सुरक्षा को और मजबूत करने की जरूरत पर बल दिया.

बैठक के अंत में रांची जोनल मैनेजर राजेश शरण ने चैंबर के साथ निरंतर सहयोग का आश्वासन दिया. बैठक के उपरांत एमडी बिनोद कुमार ने अपने दल के साथ चैंबर भवन का दौरा किया और चैंबर की 60 वर्षों की गौरवशाली यात्रा की सराहना की.

महासचिव रोहित अग्रवाल ने कहा कि इंडियन बैंक का शीर्ष नेतृत्व झारखंड के उद्योग, व्यापार और सेवा क्षेत्र के साथ सीधे संवाद स्थापित कर रहा है, यह राज्य के आर्थिक विकास की दिशा में एक सकारात्मक कदम है. उन्होंने विश्वास जताया कि बैठक के बाद राज्य में इंडियन बैंक की पहुंच और प्रभाव दोनों और अधिक सशक्त होंगे.

बैठक में चैंबर अध्यक्ष आदित्य मल्होत्रा, उपाध्यक्ष प्रवीण लोहिया, राम बांगड़, महासचिव रोहित अग्रवाल, सह सचिव रोहित पोद्दार, नवजोत अलंग, कोषाध्यक्ष अनिल अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य विकास मोदी, पूर्व अध्यक्ष मनोज नरेड़ी, रंजीत टिबड़ेवाल, रंजीत गाड़ोदिया, धीरज तनेजा, किशोर मंत्री, तथा बैंकिंग उप समिति के चेयरमैन महेंद्र जैन और शशांक भारद्वाज उपस्थित थे.

सीएनटी-एसपीटी एक्ट से जुड़ी शाखा विस्तार की बाधाओं का मुद्दा उठा

पूर्व अध्यक्ष रंजीत टिबड़ेवाल और मनोज नरेडी ने सीएनटी-एसपीटी एक्ट से जुड़ी शाखा विस्तार की बाधाओं का मुद्दा उठाया. उन्होंने बताया कि अन्य बैंक इन भूमियों पर कोलेटरल लोन दे रहे हैं, इसलिए इंडियन बैंक को भी इस दिशा में पहल करनी चाहिए. एमडी ने सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए इसकी समीक्षा का आश्वासन दिया.

सिंगल विंडो लोन अप्रूवल सिस्टम की जरूरत पर जोर

सह सचिव रोहित पोद्दार ने सिंगल विंडो लोन अप्रूवल सिस्टम और सेक्टर-वाइज इंडस्ट्री फोकस नीति की आवश्यकता पर जोर दिया. इस पर एमडी ने कहा कि रांची की लालपुर शाखा में एमएसएमई और कृषि लोन की विशेष सुविधा उपलब्ध है और 10 करोड़ तक का लोन सिंगल प्वाइंट से स्वीकृत किया जा सकता है.

एक नजर

कूड़े के स्रोत पृथककरण को लेकर नगर निगम ने शहर के बैंक्वेट हॉल संचालकों के साथ की बैठक

रांची। नगर निगम द्वारा शहर में कूड़े के स्त्रोत पृथक्करण को बढ़ावा देने के प्रयास जारी हैं. इसी कड़ी में अपर प्रशासक संजय कुमार की अध्यक्षता में शहर के विभिन्न बैंक्वेट हॉल संचालकों के साथ बैठक की गई. अपर प्रशासक ने उपस्थित प्रतिनिधियों को गीला और सूखा कूड़ा पृथक करने के महत्व से अवगत कराया. उन्होंने बताया कि नगर निगम द्वारा कूड़े के उठाव, निस्तारण और प्रोसेसिंग की संपूर्ण प्रक्रिया एक व्यवस्थित प्रणाली के तहत की जा रही है. प्राइमरी कलेक्शन के लिए चयनित एजेंसी मेसर्स स्वच्छता कॉरपोरेशन घरों, भवनों और प्रतिष्ठानों से कूड़ा पृथक रूप में एकत्र कर रही है. अपर प्रशासक ने बताया कि एकत्रित गीला कूड़ा झिरी स्थित 150 टन प्रति दिन क्षमता वाले सीबीजी प्लांट में भेजा जाता है, जहां से ऊर्जा और जैविक खाद का उत्पादन किया जाता है. उन्होंने बैंक्वेट हॉल संचालकों से अनुरोध किया कि वे निगम की कूड़ा संग्रहण वाहनों को गीला और सूखा कूड़ा अलग-अलग ही उपलब्ध कराएं. मिश्रित कूड़ा देने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी, जिसमें पेनल्टी और रजिस्ट्रेशन रद्द करना शामिल है. बैठक में बैंक्वेट हॉल प्रतिनिधियों ने नगर निगम की इस स्वच्छता पहल की सराहना की और इसे सफल बनाने के लिए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया. बैठक में उप प्रशासक रविंद्र कुमार, पीएमसी प्रतिनिधि और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे.

कैरम प्रतियोगिता में जेवीएम श्यामली के छात्रों ने मारी बाजी

रांची। एस्कॉट इंटरनेशनल स्कूल, हरमू में मंगलवार को रांची सहोदया स्कूल कॉम्प्लेक्स की ओर से इंटर स्कूल कैरम प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें जवाहर विद्या मंदिर (जेवीएम) श्यामली के छात्रों ने असाधारण खेल कौशल का प्रदर्शन किया. प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के आठ टीमों के कक्षा छठी से दसवीं 10 तक के छात्रों ने हिस्सा लिया. जेवीएम के छात्रों ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की. आयुष कुमार (कक्षा 10-ई) ने अंडर-18 श्रेणी में विजेता बनकर स्कूल का नाम रोशन किया. वहीं, अंडर-14 लड़कों की श्रेणी में राजवीर सिंह (कक्षा 9-ई) भी विजेता रहे. लड़कियों की अंडर-14 श्रेणी में भी जेवीएम का दबदबा रहा। आराध्या सिंह (कक्षा 6-एफ) ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विजेता का खिताब जीता. इसी श्रेणी में, ज़ोबिया ज़ाफ़रीन (कक्षा 6-सी) और इशी सिंह (कक्षा 8-ए) ने दूसरा स्थान (रजत पदक) हासिल किया, जबकि इशानवी गुप्ता (कक्षा 8-एफ) ने तीसरा स्थान (कांस्य पदक) प्राप्त किया. जवाहर विद्या मंदिर, श्यामली के प्राचार्य समरजीत जाना ने छात्रों के इस शानदार सफलता पर सभी विजेता और प्रतिभागी छात्रों को बधाई दी.

श्रीमद्भागवत कथा महापुराण सप्ताह का समापन

रांची। संगरवाला परिवार के शांति प्रकाश शर्मा की पहल पर किशोरगंज में आयोजित श्रीमद्भागवत महापुराण सप्ताह का मंगलवार को भक्तिमय महौल में समापन हुआ. भागवत सप्ताह में वृंदावन के प्रसिद्ध कथावाचक भवानी शंकर शास्त्री ने हजारों श्रद्धालुओं को प्रभु श्री कृष्ण के जीवन से जुड़ी कई कथाओं का रसपान कराया. श्रीमद्भागवत महापुराण कथा सप्ताह के समापन के पश्चात गो रक्षा की कामना के साथ हवन में आहुति दी गई और महाप्रसाद का वितरण किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व मंत्री रांची के विधायक सीपी सिंह शामिल हुए. उनका स्वागत नूतन वीणा छात्र संघ के उपाध्यक्ष कौशल शर्मा ने किया. कार्यक्रम में भाजपा नेता सह प्रदेश कार्यसमिति सदस्य मुकेश मुक्ता, नूतन वीणा छात्र संघ के अध्यक्ष सच्चिदानंद सोनी, उपाध्यक्ष सोनू गुप्ता और श्री श्याम सेवा परिवार रांची के सदस्य अंकित सिंह शामिल हुए.

झामुमो के फेसबुक पेज पर अश्लील तस्वीरें पोस्ट

पार्टी के पूर्व पदाधिकारी पर एफआईआर दर्ज

शुभम संदेश। रांची

झारखंड मुक्ति मोर्चा के आधिकारिक फेसबुक अकाउंट पर आपत्तिजनक तस्वीरें अपलोड करने का मामला चाईबासा से सामने आया है. इस संबंध में पार्टी से निष्कासित पूर्व जिला संयुक्त सचिव सह ग्रामीण संवेदक संघ के अध्यक्ष सुनील सिरका के खिलाफ सदर थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है. झामुमो के चाईबासा जिला सचिव राहुल आदित्य देते हुए थाने में लिखित शिकायत देते हुए बताया कि 31 अक्टूबर की रात सुनील सिरका ने अपने व्यक्तिगत अकाउंट से पार्टी के आधिकारिक फेसबुक पेज पर चार नग्न महिलाओं की तस्वीरें पोस्ट कीं. यह वही पेज है, जिससे हजारों पार्टी कार्यकर्ता और आम लोग जुड़े हुए हैं. इस पोस्ट से पार्टी की गरिमा और साख को गहरी ठेस पहुंची है. शिकायत में कहा गया है कि सुनील सिरका को वर्ष 2024 के विधानसभा चुनाव के दौरान पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल पाए जाने पर छह वर्षों के लिए संगठन से निष्कासित किया गया था. इसके बावजूद उन्होंने दोबारा पार्टी की छवि खराब करने और जनता में भ्रम फैलाने के इरादे से यह पोस्ट किया. पार्टी नेताओं ने इस पूरे मामले को पूर्व नियोजित साजिश करार दिया है. झामुमो का कहना है कि ऐसी हरकतों से न केवल संगठन की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचा है, बल्कि सोशल मीडिया पर पार्टी की विश्वसनीयता भी प्रभावित हुई है.

भाजपा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष आदित्य साहू ने साधा निशाना, कहा-

सीएम व्यापारियों से माफी मांगें

शुभम संदेश। रांची

घाटशिला स्थित भाजपा चुनावी कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान मंगलवावर को भाजपा प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद आदित्य साहू ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर निशाना साधा. उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा व्यापारियों के खिलाफ दिया गया आपत्तिजनक बयान अत्यंत निंदनीय और अपमानजनक है. साहू ने कहा, हेमंत सोरेन जी को किसने यह अधिकार दिया है कि वे झारखंड के मेहनती, ईमानदार और समाजसेवी व्यापारियों को बार-बार गालियां दें और उनका अपमान करें? उनका यह बयान, 'व्यापारी पहले पैर पकड़ते हैं और बाद में गर्दन पकड़ते हैं. पूरे व्यापारी समाज का अपमान है. आदित्य साहू ने कहा कि मुख्यमंत्री का यह वक्तव्य सत्ता के अहंकार को दर्शाता है. उन्होंने कहा कि झारखंड का व्यापारी वर्ग हमेशा समाज की सेवा में अग्रणी रहा है, चाहे कोरोना काल की कठिन परिस्थितियां रही हों या आर्थिक चुनौतियां. जब सरकार निष्क्रिय थी, तब व्यापारियों ने गरीबों तक राशन, दवा, मास्क और छाता तक पहुंचाया. ऐसे सेवा भावी वर्ग के प्रति इस तरह की भाषा का प्रयोग बेहद शर्मनाक है.

साहू ने मांग की कि मुख्यमंत्री तुरंत व्यापारी समाज से माफी मांगें, अन्यथा झारखंड का व्यापारी वर्ग सड़कों पर उतरकर आंदोलन करेगा. उन्होंने आरोप लगाया कि वर्तमान झारखंड सरकार में बालू, कोयला, लोहा और जमीन की खुली लूट मची हुई है. उन्होंने कहा, "500 रुपये का बालू 5000 रुपये में बिक रहा है और यह सब माफियाओं के संरक्षण में हो रहा है.

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में राज्य स्तरीय रबी कर्मशाला 2025-26 का आयोजन

मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने अधिकारियों को दिए निर्देश

शुभम संदेश। रांची

राजधानी रांची स्थित बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) के सभागार में मंगलवार को राज्य स्तरीय रबी कार्यशाला 2025-26 का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने अधिकारियों और कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित किया. मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे राज्य के कम से कम 200 किसानों के जीवन में व्यक्तिगत प्रयास से सकारात्मक बदलाव लाएं. इसके लिए प्रत्येक अधिकारी की किसान सुधार सूची भी तैयार की जाएगी.

रबी फसल की जानकारी हर किसान तक पहुंचे : कार्यशाला में मंत्री ने कहा कि हर वर्ष विभाग इस तरह का आयोजन करता है ताकि किसानों को रबी फसल से संबंधित सही जानकारी और नई तकनीक उपलब्ध कराई जा सके. उन्होंने कहा कि इस बार अतिवृष्टि (भारी बारिश) से किसानों को 25 से 30% तक का नुकसान हुआ है, जो 40% तक बढ़ सकता है. ऐसे में अधिकारियों को किसानों के प्रति संवेदनशीलता और तत्परता दिखाने की आवश्यकता है. मंत्री ने यह भी कहा कि — किसानों के सामने आज कई सवाल हैं – क्या खाएंगे, बच्चों का भविष्य क्या होगा? ऐसे में अधिकारियों को आगे बढ़कर उनकी मदद करनी चाहिए.

फसल बीमा और आपदा राहत पर दिया गया जोर: मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने अधिकारियों से कहा कि फसल बीमा योजना से आच्छादित किसानों को शीघ्र मुआवजा राशि दिलाने और जो किसान बीमा योजना से बाहर हैं, उन्हें आपदा प्रबंधन विभाग से सहायता दिलाने के प्रयास करें. उन्होंने फसल नुकसान की रिपोर्ट को अंचल से जिला मुख्यालय तक तेजी से भेजने के निर्देश भी दिए.

पुस्तक का विमोचन और वैज्ञानिकों की मौजूदगी : कार्यशाला के दौरान कृषि विभाग द्वारा तैयार एक नई पुस्तक का विमोचन भी किया गया. कार्यक्रम में निदेशक जीशान कमर, निबंधक शशि रंजन, निदेशक माधवी मिश्रा, विशेष सचिव प्रदीप हजारी, संजय शांडिल्य, एसके अग्रवाल, किसान प्रतिनिधि, कृषि वैज्ञानिक और कृषि पदाधिकारी बड़ी संख्या में मौजूद रहे.

कृषि सचिव और कुलपति ने दिए महत्वपूर्ण सुझाव

कृषि सचिव अबू बक्कर सिद्दीखी ने कहा कि रबी या खरीफ – दोनों मौसमों के लिए किसानों का कृषि कैलेंडर तय होना जरूरी है ताकि हर काम समय पर पूरा हो सके. उन्होंने मिट्टी जांच और उपयुक्त फसल चयन को फसल उत्पादन बढ़ाने की कुंजी बताया. वहीं बीएयू कुलपति डॉ. एससी दुबे ने कहा कि इस बार भारी बारिश से धान की फसल को नुकसान पहुंचा है, लेकिन अतिवृष्टि से खेतों में बनी नमी का लाभ रबी फसलों के लिए उठाया जा सकता है.

बाल कवियों की कविताएं उड़ान का 13 को जमशेदपुर के रेडक्रॉस सभागार में होगा विमोचन

कविताओं का संकलन और प्रस्तुति पत्रकार विकास श्रीवास्तव ने किया है, जबकि संपादन सहयोग साहित्यकार वरुण प्रभात ने किया है.

शुभम संदेश ।रांची/जमशेदपुर

जमशेदपुर के विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों की स्व लिखित कविताओं से सजी पुस्तक बाल कवियों की कविताएं ₹उड़ान₹ का विमोचन 13 नवंबर को शाम 4 बजे साकची स्थित रेडक्रॉस भवन सभागार में किया जाएगा. पुस्तक के विमोचन समारोह में अतिथि के तौर पर शहर के शिक्षाविद, साहित्यकार, समाजसेवी, पत्रकार अन्य लोग मौजूद रहेंगे. उड़ान बाल कवियों का साझा संग्रह है. इस पुस्तक के लिए कविताओं का संकलन, संपादन और प्रस्तुति पत्रकार विकास श्रीवास्तव द्वारा किया गया है, जबकि संपादन सहयोग साहित्यकार वरुण प्रभात ने किया है. यह जमशेदपुर और झारखंड में पहला मौका होगा जब स्कूली बच्चों की कविताओं की पुस्तक का प्रकाशन किया गया है. अब तक अख़बार, पत्रिका या स्कूल की निजी पत्रिका में ही कविताओं का प्रकाशन होता रहा है. उड़ान पुस्तक को लेकर स्कूली बच्चों व शिक्षकों में काफी उत्साह है और उन्होंने इसे एक बड़ी पहल बताया है.

ब्रीफ न्यूज

जिले में ठंड का असर

गढ़वा । जिले में ठंड की दस्तक दे चुकी है, लेकिन गरीब और असहाय लोगों तक राहत पहुंचाने के लिए कंबल वितरण की प्रक्रिया अभी तक शुरू नहीं हो सकी है. विभागीय जानकारी के अनुसार, जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग को सरकार की ओर से कंबल खरीद से संबंधित कोई निर्देश अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है. ऐसे में समय पर कंबल वितरण की संभावना फिलहाल नहीं दिख रही है. पिछले वर्ष नवंबर माह में कंबल खरीद और वितरण की प्रक्रिया पूरी कर दी गई थी, जिससे जरूरतमंदों तक राहत समय पर पहुंच गई थी. लेकिन इस वर्ष नवंबर शुरू होने के बाद भी कंबल खरीद की कार्रवाई शुरू नहीं की गई है. जिले में हाल ही में हुई लगातार बारिश के कारण तापमान में अचानक गिरावट आई है.

धूमधाम से मनाया जाएगा राज्य स्थापना दिवस

शुभम संदेश । लातेहार

आगामी 15 नवंबर को राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर जिले में भव्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन की तैयारियों को लेकर उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई. बैठक में उपायुक्त ने बताया कि इस वर्ष झारखंड राज्य स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में "झारखंड@25" थीम पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे. इसके तहत 11 से 15 नवंबर तक जिले में विभिन्न सांस्कृतिक, खेलकूद और जन-जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा.

बैठक में सभी अधिकारियों को अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए. उपायुक्त ने कहा कि राज्य स्थापना दिवस को प्रभावशाली और यादगार बनाने के लिए रणनीति बनाकर कार्यक्रमों का विस्तृत आयोजन किया जाएगा. 11 नवंबर को "रन फॉर झारखंड" का आयोजन किया जाएगा और प्रचार रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाएगा. वहीं 13 नवंबर को "नो योर टूरिस्ट पैलेस" कार्यक्रम के तहत साइकिल रैली का आयोजन किया जाएगा. जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों का प्रचार-प्रसार पोस्टर, बैनर और पम्पलेट के माध्यम से किया जाएगा.

15 नवंबर को नगर भवन लातेहार में मुख्य समारोह आयोजित किया जाएगा. इसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं और उत्कृष्ट प्रतिभागियों को सम्मानित किया जाएगा. जिला के विद्यालयों और महाविद्यालयों में चित्रकला, कविता, भाषण एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे. इस अवसर पर रक्तदान शिविर भी आयोजित किया जाएगा.

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पारंपरिक नृत्य, नाटक और संगीत प्रस्तुत किए जाएंगे. इसके अतिरिक्त विकास मेले का आयोजन किया जाएगा, जिसमें सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आमजनों तक पहुंचाने हेतु विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल लगाए जाएंगे और आवश्यक परिसंपत्तियों का वितरण किया जाएगा.

सीएस ने किया निरीक्षण कई अनियमितताएं उजागर

शुभम संदेश । मेदिनीनगर

पलामू सिविल सर्जन डॉ. अनिल श्रीवास्तव ने मंगलवार को मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज एंड अस्पताल (एमएमसीएच) में औचक निरीक्षण किया. निरीक्षण के दौरान कई विभागों में खामियां और अनियमितताएं सामने आईं. मेंटल हेल्थ ओपीडी सेक्शन, टीबी विभाग और अन्य इकाइयों का बारीकी से निरीक्षण किया गया. जानकारी के अनुसार, एक्स-रे विभाग में आवश्यकता से अधिक कर्मी तैनात पाए गए, जबकि पूरे दिन केवल 52 एक्स-रे ही किए गए. मेडॉल जांच घर निरीक्षण के दौरान बंद मिला, जबकि पास के डायग्नोस्टिक सेंटर में जांच जारी थी. टीबी इनडोर वार्ड में एक मरीज भर्ती था और ड्यूटी पर परिचारिका मौजूद थी. एमसीसी बिल्डिंग की बायोमैट्रिक मशीन खराब पाई गई, जिसे शीघ्र दुरुस्त करने का निर्देश दिया गया.

सिविल सर्जन ने अधिकारियों और कर्मचारियों को आपसी सहयोग के साथ कार्य करने और नियमित उपस्थिति दर्ज करने का निर्देश दिया. उन्होंने अस्पताल प्रबंधन को सख्त निर्देश दिए कि सभी विभागों में अनुशासन, पारदर्शिता और कार्य संस्कृति को बनाए रखें. उनका कहना था कि इससे मरीजों को बेहतर और समय पर चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित की जा सकेगी.

डीसी ने समाहरणालय सभागार में विभिन्न विभागों की बैठक की

मुख्यमंत्री सारथी योजना के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर

शुभम संदेश । मेदिनीनगर

पलामू की उपायुक्त समीरा एस ने मंगलवार को समाहरणालय सभागार में विभिन्न विभागों की बैठक की जिसमें नियोजन, कौशल विकास, सामाजिक सुरक्षा और श्रम विभाग शामिल थे. बैठक का मुख्य उद्देश्य सरकारी कौशल विकास योजनाओं, विशेष रूप से मुख्यमंत्री सारथी योजना के प्रभावी क्रियान्वयन और जनता में जागरूकता बढ़ाना था.

उपायुक्त ने निर्देश दिया कि विभिन्न विभागों के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित किया जाए और स्थानीय प्लेसमेंट के अवसर बढ़ाने हेतु उद्योगों से कार्यबल और विशिष्ट कौशल आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त की जाए. उन्होंने सभी कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्रों के प्रदर्शन की समीक्षा करने पर भी बल दिया. सामाजिक सुरक्षा कोषांग की समीक्षा के दौरान विभिन्न पेंशन योजनाओं, राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना, स्पॉन्सरशिप योजना और मिशन वात्सल योजना के तहत लाभार्थियों की जानकारी ली गई.

बैठक में बाल श्रम उन्मूलन एवं पुनर्वास हेतु गठित जिला स्तरीय टास्कफोर्स ने जून के बाद विमुक्त हुए बाल श्रमिकों की जानकारी प्रस्तुत की. उपायुक्त ने बाल श्रमिकों के विमुक्ति और पुनर्वास संबंधी जानकारियों को सीडब्लूसी सदस्यों के साथ साझा करने पर जोर दिया. इसके अलावा, जिले या राज्य से बाहर कार्य करने जाने वाले श्रमिकों के लिए एजेंटों द्वारा श्रम विभाग के मानकों का पालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया. बैठक में सामाजिक सुरक्षा के सहायक निदेशक, नियोजन पदाधिकारी और अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे.

डीसी ने की नगर निगम व नगर पंचायतों के कार्यों की समीक्षा

मेदिनीनगर । डीसी समीरा एस की अध्यक्षता में जिले के सभी नगर निकायों—मेदिनीनगर नगर निगम, नगर परिषद और नगर पंचायतों—की योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित की गई. बैठक में उपायुक्त ने निर्देश दिए कि स्थानीय जनता के हित में सभी योजनाओं को त्वरित गति से क्रियान्वित किया जाए. मेदिनीनगर नगर निगम की समीक्षा के दौरान उन्होंने जुडको द्वारा संचालित योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट ली और कार्यों में तेजी लाने पर जोर दिया. वार्ड संख्या 23 में निर्माणाधीन इनडोर स्टेडियम के बारे में जानकारी लेते हुए बताया गया कि कार्यादेश निर्गत होने के बाद लगभग 10 प्रतिशत कार्य पूरा हुआ है. अमृत योजना के तहत भौतिक और वित्तीय प्रगति की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि जिन टेंडरों के बाद भी संवेदक कार्य शुरू नहीं कर रहे.

ट्रक की टक्कर से छात्रा की मौत, पति और बच्ची घायल

मेदिनीनगर । मेदिनीनगर के खनवा में बीते दिन एक भीषण सड़क हादसे में 27 वर्षीय बीएड छात्रा आशा कुमारी की मौत हो गई. वह अपने पति संदीप कुमार (32) और सात माह की बच्ची के साथ स्कूटी से घर लौट रही थीं, जब तेज रफ्तार अज्ञात ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी. घटना के समय आशा सिक्की कला विद्यालय से शिक्षण अभ्यास पूरी कर लौट रही थीं. स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी और घायलों को एमएमसीएच अस्पताल पहुंचाया. चिकित्सकों ने आशा कुमारी को मृत घोषित कर दिया, जबकि उनके पति गंभीर रूप से घायल हैं और बच्ची को हल्की चोटें आई हैं. पुलिस ने बताया कि हादसे में शामिल ट्रक एफसीआई का खाली वाहन था. ट्रक और चालक को पकड़ लिया गया है. मृतका मेदिनीनगर के भट्ठी मोहल्ला, आदर्श नगर की निवासी थी और वह जीएलए कॉलेज में बीएड (सत्र 2023-25) की छात्रा थीं.

खेलो झारखंड : लातेहार केंद्र के खिलाड़ियों ने जीते 22 पदक

शुभम संदेश । लातेहार

खेलो झारखंड, राज्य स्तरीय स्कूली एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2025-26, रांची में लातेहार जिला खेल कार्यालय द्वारा संचालित आवासीय बालक एवं बालिका प्रशिक्षण केंद्र, डे बोर्डिंग प्रशिक्षण केंद्र और खेलो इंडिया सेंटर के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 22 पदक जीते. अंडर-14 आयु वर्ग में शुभम कुमार ने 600 मीटर रेस में गोल्ड पदक जीता. अंडर-17 बालक वर्ग में अनिल उरांव ने 100 मीटर रेस में स्वर्ण, अनित उरांव ने 110 मीटर हर्डल्स में रजत, जयदीप पुरम ने 400 मीटर दौड़ में स्वर्ण और 400 मीटर हर्डल्स में रजत पदक प्राप्त किया. मोहित कुमार ने 5000 मीटर रेस वॉक में स्वर्ण, शिवम कुमार ने हाई जंप में रजत और प्रिंस तिर्की ने ट्रिपल जंप में रजत पदक जीते. 4x100 मीटर रिले में आकाश कुमार, जयदीप पुरम, राकेश कुमार और अनित उरांव ने स्वर्ण पदक जीता. अंडर-19 वर्ग में विवेक ने लंबी कूद और ट्रिपल जंप में स्वर्ण पदक प्राप्त कर राज्य का उपविजेता बने.

बालिका खिलाड़ियों ने भी कमाल दिखाया. अंडर-14 में संगीता कुमारी ने डिस्कस थ्रो में स्वर्ण और शॉट पुट में कांस्य, विनीता लकड़ा ने लॉन्ग जंप में स्वर्ण, अंतरी रानी कुजूर ने हाई जंप में स्वर्ण और 4x100 मीटर रिले में टीम ने स्वर्ण पदक जीता. अंडर-17 में अनूप उरांव ने 800 मीटर, जोसीमा कुमारी ने 3000 मीटर वॉक रेस में स्वर्ण पदक प्राप्त किया.

जिला खेल पदाधिकारी अविनेश कुमार त्रिपाठी ने खिलाड़ियों और प्रशिक्षकों की मेहनत की सराहना की और उन्हें शुभकामनाएं दी.

डीसी ने अतिरिक्त प्रभार वाले बीडीओ सीओ के कार्य दिवस तय किए

शुभम संदेश । मेदिनीनगर

उपायुक्त समीरा एस ने अतिरिक्त प्रभार वाले बीडीओ-सीओ की जवाबदेही और कार्य दिवस का निर्धारण कर दिया है. हाल के समय में देखा गया था कि अतिरिक्त प्रभार वाले प्रखंडों और अंचलों में आमजन के बीच भ्रम की स्थिति बन रही थी, जिससे कार्य प्रभावित हो रहे थे. आमजन के हित को ध्यान में रखते हुए डीसी ने यह निर्णय लिया है. आदेशानुसार, नीलांबर-पीतांबरपुर के बीडीओ सोमवार, मंगलवार और बुधवार को नीलांबर-पीतांबरपुर प्रखंड का कार्य देखेंगे और गुरुवार, शुक्रवार व शनिवार को तरहसी प्रखंड का कार्य संभालेंगे. मनातू के सीओ सोमवार से बुधवार तक मनातू प्रखंड का और गुरुवार से शनिवार तक तरहसी अंचल का कार्य करेंगे. सदर मेदिनीनगर बीडीओ सोमवार से बुधवार तक सदर प्रखंड और गुरुवार से शनिवार तक चैनपुर अंचल के कार्य निष्पादन करेंगे. चैनपुर बीडीओ सोमवार से बुधवार तक चैनपुर प्रखंड और गुरुवार से शनिवार तक रामगढ़ प्रखंड का कार्य देखेंगे. मोहम्मदगंज बीडीओ सह सीओ सोमवार से बुधवार तक मोहम्मदगंज प्रखंड/अंचल और गुरुवार से शनिवार तक पाण्डु प्रखंड/अंचल का कार्य करेंगे. छतरपुर सीओ सोमवार से बुधवार तक छतरपुर अंचल और गुरुवार से शनिवार तक पड़वा अंचल का कार्य देखेंगे. इस निर्णय से आमजन को स्पष्ट और नियमित सेवा मिलने की उम्मीद है, साथ ही प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही भी बढ़ेगी.

नीलगायों के उत्पात से फसल चौपट

हरिहरपुर । ओपी प्रखंड क्षेत्र के किसानों पर एक के बाद एक संकट टूट रहा है. हाल ही में चक्रवाती तूफान मोंथा से हुए नुकसान की भरपाई भी पूरी तरह नहीं हो पाई थी कि अब नीलगायों ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया है. प्रखंड के अधिसंख्य लोग कृषि पर निर्भर हैं और इन दिनों नीलगायों के उत्पात से खेतों में लगी फसलें पूरी तरह चौपट हो रही हैं. किसान रात-रातभर जागकर फसलों की रखवाली कर रहे हैं, लेकिन झुंड के झुंड में आने वाली नीलगायें पलक झपकते ही खेतों को उजाड़ देती हैं. मझिगावां पंचायत के किसान नर्मदेश्वर प्रसाद गुप्ता उर्फ अरुण गुप्ता ने बताया कि उन्होंने दो बीघा में टमाटर की खेती की थी.

गुरुनानक देव के 556वें प्रकाश पर्व पर पलामू में निकली भव्य शोभायात्रा

पलामू । सिखों के प्रथम गुरु श्री गुरुनानक देव के 556वें प्रकाश पर्व के अवसर पर डालटनगंज के बेलवाटिका स्थित गुरूद्वारा से मंगलवार को श्री गुरुसिंह सभा के तत्वावधान में भव्य शोभायात्रा निकाली गई. शोभायात्रा में हाथ में तलवार लिए बड़े और छोटे पंज प्यारे, फूलों से सुसज्जित रथ पर श्री गुरूग्रंथ साहिब की पालकी, पंजाब से आई गतका टीम और सिख स्त्री सत्संग शामिल थे. गतका टीम ने शहर के चौक-चौराहों पर युद्ध कलाशैली प्रस्तुत की और आकर्षक करतब दिखाए. बाल पंज प्यारे श्रद्धालुओं का ध्यान आकर्षित कर रहे थे. बड़े पंज प्यारे सरदार जरनैल सिंह, प्रताप सिंह, मंजीत सिंह, उपेंद्र सिंह, उत्तम सिंह और छोटे पंज प्यारे अंशप्रीत सिंह, रणवीर सिंह, राजवीर सिंह, हरमीत सिंह, सतनाम सिंह शोभायात्रा में शामिल थे. शोभायात्रा में पुरुष और महिलाएं रास्ता साफ करते और फूल बरसाते चल रहे थे

कुटीर उद्योग संचालिका वैजयंती देवी ने कक्षा सात की छात्राओं को दी स्वावलंबन की प्रेरणा

लातेहार। धर्मपुर पथ स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में सरस्वती यात्रा के तहत कक्षा सात की छात्राओं को कुटीर उद्योग और स्वावलंबन के बारे में जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम का आयोजन प्रधानाचार्य उत्तम कुमार मुखर्जी के निर्देशन में संपन्न हुआ. इस अवसर पर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित कुटीर उद्योग संचालिका वैजयंती देवी ने छात्राओं को पारंपरिक तरीकों से अचार, मुरब्बा, शहद, पापड़, बड़ी और चिप्स बनाने की विधि बताई. उन्होंने आम, करील, हरी मिर्च, गाजर, कटहल और अदरक से अचार बनाने का तरीका, अदरक और आंवला से मुरब्बा तैयार करने के उपाय तथा विभिन्न प्रकार के शहद और उनके स्वास्थ्य लाभों की जानकारी साझा की. बताया कि अदरक का मुरब्बा खांसी में, शहद मोटापा कम करने एवं त्वचा निखारने में सहायक है.

एक नजर

पांडू बाजार में कचरे का अंबार, लोगों को परेशानी

पांडू, पलामू । पांडू बाजार में इन दिनों कचरे का अंबार लगा होने के कारण लोग परेशान हैं. शिव मंदिर से सब्जी मंडी जाने वाले रास्ते में कचरा जमा है, जिससे दुर्गंध चरम सीमा पर पहुँच गई है. स्थानीय लोग नाक मुंह बांधकर ही सब्जी लेने जा रहे हैं. कचरे की दूरी पांडू प्रखंड से लगभग 500 गज है, फिर भी स्थानीय जनप्रतिनिधि और प्रशासन की कोई कार्रवाई नहीं हुई है. लोग चेतावनी दे रहे हैं कि यदि कचरा निस्तारित नहीं किया गया, तो डायरिया और अन्य रोग फैलने की संभावना है. ग्रामीणों ने कई बार क्षेत्रीय विधायक और स्थानीय अधिकारियों से शिकायत की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई. कचरे के कारण लोग आने-जाने में असुविधा झेल रहे हैं और स्वास्थ्य को खतरा बढ़ गया है.

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत लाभुक को दो लाख का चेक प्रदान किया गया

बालूमाथ (लातेहार) । प्रखंड मुख्यालय स्थित भारतीय स्टेट बैंक शाखा में प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत मृतक लाभुक के परिजन को दो लाख रुपये का चेक सौंपा गया. ग्राम ओकिया निवासी स्व. गजेंद्र साव की पत्नी सुनीता देवी को यह चेक शाखा प्रबंधक जयंत कुमार ने प्रदान किया. बताया गया कि गजेंद्र साव का बीते वर्ष बीमारी के कारण निधन हो गया था और उन्होंने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत बीमा कराया था. उनके निधन के बाद परिजनों ने मुआवजा राशि के लिए बैंक में आवेदन दिया था. विभागीय प्रक्रिया पूरी होने के बाद बैंक प्रबंधन ने लाभुक परिजन को बीमा राशि उपलब्ध कराई. इस अवसर पर बैंक कर्मी सोनी कुमारी, समीर बारला, आलोक कुमार, धीरज मिंज, विश्वनाथ राय, सुजीत कुमार, प्रमोद कुजूर, नंदू कुमार यादव सहित कई लोग उपस्थित थे.

ऑक्सफोर्ड स्कूल में मनायी गई गुरू नानक जयंती

मेदिनीनगर । मेदिनीनगर के पनेरीबांध स्थित ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल में गुरू नानक देव जी की 556वीं जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई. कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल के प्राचार्य आर. प्रसाद ने गुरू नानक देव की तस्वीर पर माल्यार्पण कर किया. प्राचार्य ने बताया कि गुरू नानक देव सिख धर्म के प्रथम गुरु थे, जिन्हें उनके अनुयायी नानक, नानक देव जी और नानक शाह के नाम से जानते हैं. उन्होंने कहा कि गुरू नानक देव अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्म सुधारक, समाज सुधारक, कवि, देशभक्त और विश्वबंधुत्व के गुण समेटे हुए थे. इस अवसर पर शिक्षक अनिल कुमार और शिक्षिका रश्मिता मंडल ने उनके जीवन, आदर्शों और सिख दर्शन पर प्रकाश डाला. कार्यक्रम का संचालन शिवानी तिवारी ने किया. विद्यार्थियों ने भी गुरू नानक देव के संदेशों को समझते हुए उनके योगदान का महत्व बताया. इस कार्यक्रम ने स्कूल में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना को बढ़ावा दिया.

नहीं रहे पलामू के वरिष्ठ अधिवक्ता गिरिजा प्र. सिंह

मेदिनीनगर । पलामू जिला बार एसोसिएशन के वरिष्ठ अधिवक्ता एवं पूर्व अध्यक्ष गिरिजा प्रसाद सिंह का आज सुबह 6 बजे उनके सुदना स्थित आवास पर निधन हो गया. लगभग 70 वर्षीय गिरिजा प्रसाद सिंह कल रात सामान्य रूप से भोजन करके सो गए थे. सुबह जब वे नहीं उठे, तो परिजनों ने जाकर देखा कि उनका निधन हार्ट अटैक के कारण हुआ है. गिरिजा प्रसाद सिंह लंबे समय तक पलामू जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष और महासचिव जैसे महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे. सोमवार को वे नित्य की भांति कोर्ट में मुकदमों के निपटारे के लिए उपस्थित थे. उन्होंने अपने पीछे दो पुत्र और पूरा परिवार छोड़ा है, जिनमें से एक पुत्र गोपाल प्रसाद सिंह भी अधिवक्ता हैं. पलामू जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष रामदेव प्रसाद यादव और महासचिव अजय कुमार पांडे ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया. उन्होंने कहा कि गिरिजा प्रसाद सिंह बार एसोसिएशन का वह स्तंभ थे, जिस पर संगठन की बुनियाद टिकी हुई थी. पूर्व महासचिव सुबोध कुमार सिन्हा और अधिवक्ता संजीव नयन ने कहा कि वे सदैव अधिवक्ताओं के अभिभावक की भूमिका में रहे. उनके निधन से बार एसोसिएशन और अधिवक्ताओं का परिवार गहरे आहत है.

सीओ की बर्खास्तगी को लेकर युवा मंच का प्रदर्शन

पलामू। शहर के सदर अंचल के अंचलाधिकारी (सीओ) अमरदीप बल्होत्रा की बर्खास्तगी को लेकर मंगलवार को युवा विकास मंच ने जोरदार प्रदर्शन किया. जुलूस निकालकर बड़ी संख्या में युवा समाहरणालय पहुंचे और घेराव किया. प्रदर्शनकारियों ने "भ्रष्ट सदर सीओ को बर्खास्त करो", "सदर सीओ वापस जाओ", "सदर सीओ की मनमानी नहीं सहेंगे" जैसे नारे लगाए. काफी देर तक समाहरणालय गेट जाम करने के बाद मुख्य सचिव के नाम पांच सूत्री मांग पत्र उपायुक्त समीरा एस को सौंपा गया. प्रदर्शन का नेतृत्व भाजपा के जिला महामंत्री ज्योति पांडेय और लोजपा के जिलाध्यक्ष राकेश सिंह ने किया. मेदिनीनगर शहर के को-ऑपरेटिव चौक से शुरू हुआ जुलूस नारेबाजी करते हुए समाहरणालय पहुँचा और वहां घेराव कर सरकार से तुरंत सीओ को बर्खास्त करने की मांग की. भाजपा के जिला महामंत्री ज्योति पांडेय ने कहा कि सदर सीओ ने छोटे-छोटे कार्यों के लिए लाखों-करोड़ों रुपए नाजायज तरीके से वसूले हैं और उनकी भ्रष्ट नीतियों को राज्यस्तर पर उजागर करने की जरूरत है. युवाओं के लगातार आंदोलन और विरोध को देखते हुए उपायुक्त ने तीन सदस्यीय जांच समिति का गठन किया है. प्रदर्शनकारी यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि सीओ की बर्खास्तगी और जेल भेजे जाने तक आंदोलन जारी रहेगा.

जन शिकायत कार्यालय में साप्ताहिक जन शिकायत निवारण कार्यक्रम का आयोजन

अबुआ आवास योजना से जुड़ी समस्याओं के मिले आवेदन

शुभम संदेश । लातेहार

उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी उत्कर्ष गुप्ता की अध्यक्षता में उपायुक्त कार्यालय कक्ष में साप्ताहिक जन शिकायत निवारण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से आए नागरिकों ने अपनी–अपनी समस्याओं को उपायुक्त के समक्ष रखा. जन शिकायत निवारण कार्यक्रम के दौरान उपायुक्त ने सभी उपस्थित नागरिकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और उनका त्वरित समाधान सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया. इस दौरान मुख्य रूप से भूमि विवाद, आंगनबाड़ी केंद्र से संबंधित मुद्दे और अबुआ आवास योजना से जुड़ी समस्याओं के आवेदन प्राप्त हुए.

उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता ने शिकायतों को सुनने के बाद संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए. उन्होंने कहा कि सभी आवेदनों का भौतिक सत्यापन करके त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए. इसके साथ ही उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्रत्येक शिकायत का समाधान यथाशीघ्र किया जाए ताकि नागरिकों को उनकी समस्याओं के निराकरण में विलंब न हो. इस अवसर पर उपायुक्त ने यह भी स्पष्ट किया कि जन शिकायत निवारण कार्यक्रम नागरिकों और प्रशासन के बीच संवाद का एक महत्वपूर्ण माध्यम है. इससे आमजन अपनी समस्याओं को सीधे प्रशासन के समक्ष रख सकते हैं और उनका शीघ्र समाधान प्राप्त कर सकते हैं. उन्होंने सभी विभागीय अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे शिकायतों के निपटान में संवेदनशीलता और तत्परता दिखाएँ.

उपायुक्त के निर्देशानुसार जिले में जन शिकायत निवारण कार्यक्रम नियमित रूप से जिला, अनुमंडल और प्रखंड स्तरीय कार्यालयों में आयोजित किया जाता है. इस कार्यक्रम का आयोजन प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार को किया जाता है, ताकि नागरिकों को अपनी समस्याओं के समाधान हेतु लगातार प्रशासनिक सहायता मिल सके. इस प्रकार, उपायुक्त उत्कर्ष गुप्ता के नेतृत्व में जन शिकायत निवारण कार्यक्रम नागरिकों और प्रशासन के बीच विश्वास और पारदर्शिता को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास बन गया है. इससे न केवल नागरिकों की समस्याओं का समय पर समाधान हो रहा है, बल्कि प्रशासनिक प्रक्रिया भी अधिक प्रभावी और जवाबदेह बन रही है.

सरस्वती विद्या मंदिर में श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाई गई गुरु नानक जयंती

लातेहार। धर्मपुर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में मंगलवार को गुरु नानक जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई. कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्य उत्तम कुमार मुखर्जी एवं कक्षा नवम के छात्र अभिनव कुमार की माता बैजंती देवी ने गुरु नानक देव जी के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्वलन कर किया. इसके बाद भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा छह से नौ तक के छात्र-छात्राओं ने गुरु नानक की शिक्षाओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए.

भाषण प्रतियोगिता के परिणामों में 'गुरु नानक की जीवनी' में राजलक्ष्मी ने प्रथम स्थान, प्रिंस राज द्वितीय और यश तिवारी तीसरे स्थान पर रहे। 'सिख धर्म का महत्व' में यश गुप्ता प्रथम, आरूषी कुमारी द्वितीय और अंजनी कुमारी तीसरे स्थान पर रहीं। 'गुरु नानक की शिक्षा' श्रेणी में श्रेया कुमारी को प्रथम, ऋषि कुमार को द्वितीय और पल्लवी कुमारी को तृतीय स्थान मिला.

'सिख धर्म की स्थापना' विषय में तन्मय गुप्ता ने प्रथम, खुशी कुमारी द्वितीय और सौम्या कुमारी तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन जयंती प्रमुख फूलचंद कुमार सिंह के मार्गदर्शन में किया गया। विजेताओं और प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय परिवार ने गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं को अपनाने, सेवा, सहिष्णुता और समानता के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने गुरु नानक की शिक्षाओं के महत्व को समझते हुए अपने जीवन में इन्हें अमल में लाने का प्रण किया.

चरही में ट्रेलर से 101 किलो डोडा का छिलका बरामद, एक गिरफ्तार

हजारीबाग । पुलिस ने अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत बड़ी सफलता हासिल की है. पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन को मिली गुप्त

- हजारीबाग पुलिस की बड़ी कार्रवाई

सूचना के आधार पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी विष्णुगढ़ के नेतृत्व में टीम गठित कर चरही थाना क्षेत्र के एनएच-20 पर वाहन जांच की जेएस02एएस-2906) को रोकने पर चालक भागने लगा, जिसे पीछा कर गिरफ्तार किया गया. पूछताछ में उसकी पहचान बिरेन्द्र सिंह, निवासी रायपुर (छत्तीसगढ़) के रूप में हुई. ट्रेलर की तलाशी में 09 प्लास्टिक बोरे में 101.4 किलो डोडा का छिलका बरामद हुआ. पुलिस ने ट्रेलर, एक रियलमी मोबाइल सहित मादक पदार्थ को जब्त कर एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है. कार्रवाई में एसडीपीओ वैद्यनाथ प्रसाद, थाना प्रभारी कुंदन कान्त विमल सहित पुलिस टीम शामिल थी.

डीसी ने रामगढ़ में श्रम नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा की

योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए और योग्य लाभुकों को हर हाल में लाभान्वित किया जाए

शुभम संदेश । रामगढ़

श्रम नियोजन प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग द्वारा रामगढ़ जिले में किए जा रहे कार्यों की समीक्षा के लिए मंगलवार को उपायुक्त फैज अक अहमद मुमताज की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई. बैठक उनके कार्यालय कक्ष में संपन्न हुई, जिसमें विभागीय अधिकारियों ने अपने-अपने कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की.

बैठक में श्रम अधीक्षक अनिल कुमार रंजन एवं जिला नियोजन पदाधिकारी धनंजय कुमार ने उपायुक्त को विभाग द्वारा संचालित योजनाओं और विकास कार्यों के बारे में अवगत कराया. श्रम अधीक्षक ने विशेष रूप से झारखंड असंगठित कर्मकार मृत्यु/दुर्घटना सहायता योजना, मातृत्व प्रसव सुविधा योजना, अंत्येष्टि सहायता योजना, मुख्यमंत्री असंगठित श्रमिक औजार सहायता योजना, विवाह सहायता योजना और निर्माण श्रमिक सेफ्टी किट योजना के अंतर्गत लाभुकों को दिए जा रहे लाभ की जानकारी दी.

उपायुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि इन योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए और योग्य लाभुकों को चिन्हित कर योजनाओं से लाभान्वित किया जाए. इसके साथ ही आगामी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के दौरान श्रमिकों का निबंध सुनिश्चित करने हेतु योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने का भी निर्देश दिया गया.

बैठक के दौरान जिला नियोजन पदाधिकारी धनंजय कुमार ने रामगढ़ जिले में पंजीकृत बेरोजगार युवाओं की जानकारी साझा की. उन्होंने बताया कि जिले में अब तक 10,400 बेरोजगार युवाओं का पंजीकरण किया गया है. इनके लिए समय-समय पर रोजगार मेला एवं भर्ती कैम्प आयोजित किए जाते हैं. वित्तीय वर्ष 2025-26 में कुल तीन रोजगार मेले और 12 भर्ती कैंप आयोजित किए जाने की योजना है. इसके अतिरिक्त, जिला नियोजनालय द्वारा युवाओं के लिए करियर काउंसलिंग कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं.

उपायुक्त ने रोजगार मेले और भर्ती कैंप को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए कई महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए. उन्होंने अधिकारियों को योजनाओं के सुचारू क्रियान्वयन, लाभुकों की सही पहचान, और कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने पर जोर दिया.

बैठक के दौरान उपायुक्त ने विभाग के अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा की और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए. इस समीक्षा बैठक के माध्यम से जिले में श्रम नियोजन, प्रशिक्षण और कौशल विकास विभाग की गतिविधियों की गुणवत्ता और प्रभावशीलता बढ़ाने पर विशेष ध्यान देने की पहल की गई.

श्री गुरुनानक देव जी के 557वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर निकली शोभा यात्रा

शुभम संदेश । रामगढ़

सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी के 557वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर मंगलवार को भव्य शोभा यात्रा निकाली गई. शोभा यात्रा का शुभारंभ बिजुलिया स्थित भूपेंद्र सिंह जौली के आवास से दोपहर 3 बजे हुआ. यात्रा बिजुलिया, पुराना बस स्टैंड, लोहार टोला, चट्टी बाजार, थाना चौक और सुभाष चौक से गुजरते हुए गुरुद्वारा साहिब में संपन्न हुई. फूलों से सजे वाहन पर पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सुशोभित पालकी रखी गई थी.

शोभा यात्रा में पंज प्यारे : सनप्रीत सिंह, गुरप्रीत सिंह कालरा, गुनीत सिंह, कुलवीर सिंह और गुरप्रीत सिंह चंडोक — पारंपरिक वेशभूषा में अग्रणी रूप से शामिल रहे, जिन्होंने अपनी उपस्थिति से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध किया. शबद गायक विक्की छाबड़ा मधुर कीर्तन गाते हुए यात्रा के साथ चल रहे थे, जिससे पूरा वातावरण भक्ति से गूंज उठा. विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संगठनों ने शोभा यात्रा का फल, बिस्किट और जल वितरण कर स्वागत किया. यात्रा का आकर्षण निशाने खालसा गतका पार्टी का शानदार प्रदर्शन और पंजाब से आई बैंड पार्टी रही, जिसने उपस्थित लोगों को रोमांचित कर दिया. शोभा यात्रा में प्रमुख रूप से प्रधान परमदीप सिंह कालरा, अमरजीत सिंह सैनी, हरदीप सिंह होरा, रघुवीर सिंह छाबड़ा, जोगेंद्र सिंह जग्गी, तेजेंद्र सिंह सोनी, सुरजीत सिंह छाबड़ा, डॉ. नरेंद्र सिंह सोनी सहित सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित थे. कार्यक्रम ने रामगढ़ में धार्मिक एकता और भक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया.

शबद गायक विक्की छाबड़ा मधुर कीर्तन करते हुए यात्रा के साथ चल रहे थे

हजारीबाग में कार्तिक पूर्णिमा आस्था का सैलाब : हजारीबाग । जिले का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व वाला नृसिंहस्थान कार्तिक पूर्णिमा मेला आज बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ आयोजित किया जा रहा है. प्राचीन परंपरा और आस्था का प्रतीक यह मेला हर वर्ष की तरह इस बार भी हजारों श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है. प्रशासन ने सुरक्षा और व्यवस्था की सभी तैयारियाँ पूरी कर ली हैं.

सुबह ब्रह्ममुहुर्त से ही मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं का तांता लगना शुरू हो गया. भक्तगण पवित्र जल से स्नान कर भगवान नृसिंह की पूजा-अर्चना में लीन हैं. "जय नृसिंह देव" और "हरि बोल" के जयकारों से परिसर भक्तिमय हो उठा है. स्थानीय पुजारियों के नेतृत्व में विशेष पूजा और आरती का आयोजन किया जा रहा है. कार्तिक पूर्णिमा पर स्नान और दर्शन का विशेष महत्व माना जाता है.

मंदिर समिति, प्रखंड प्रशासन और पुलिस विभाग ने संयुक्त रूप से पुख्ता सुरक्षा और व्यवस्था सुनिश्चित की है. यातायात नियंत्रण के लिए पुलिस बल तैनात किए गए हैं. मंदिर परिसर में साफ-सफाई, रोशनी और पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था की गई है. भीड़ प्रबंधन के लिए होमगार्ड और स्वयंसेवक भी सक्रिय हैं. महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए विशेष निगरानी दल और हेल्प डेस्क बनाए गए हैं. स्वास्थ्य विभाग की ओर से एम्बुलेंस और प्राथमिक उपचार केंद्र की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है. सीसीटीवी कैमरे पूरे परिसर में स्थापित किए गए हैं. कटकमदाग अंचलाधिकारी जयनारायण पासवान और थाना प्रभारी प्रमोद कुमार राय ने मेला क्षेत्र का दौरा कर स्वयं निगरानी की. धार्मिक आयोजन के साथ-साथ मेला स्थानीय व्यापारियों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण अवसर है. ग्रामीण क्षेत्रों से आए हस्तशिल्पकारों और दुकानदारों ने अपने स्टॉल लगाए हैं. मिठाइयाँ, खिलौने, बर्तन और पारंपरिक वस्त्रों की दुकानों पर श्रद्धालुओं की भीड़ देखी जा रही है. बच्चों के मनोरंजन के लिए झूले, नौटंकी और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं.

जिला प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे मेला परिसर में शांति और अनुशासन बनाए रखें, किसी भी असामाजिक गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें और स्वच्छता अभियान में सहयोग करें. कार्तिक पूर्णिमा का यह मेला न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि हजारीबाग की सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक एकता का भी जीवंत प्रतीक बन गया है. आज नृसिंहस्थान में भक्ति, उल्लास और परंपरा का अद्भुत संगम देखने को मिलेगा.

रामगढ़ में आज कार्तिक पूर्णिमा पर होगी गंगा महाआरती

रामगढ़ । माँ छिन्नमस्तिका सेवा समिति, रजरप्पा के तत्वावधान में 05 नवंबर 2025 को कार्तिक पूर्णिमा पर भव्य गंगा महाआरती, भजन संध्या एवं भोग वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा. समिति के अध्यक्ष राजीव जायसवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि यह कार्यक्रम सायं 4:00 बजे माँ छिन्नमस्तिका मंदिर, भैरवी नदी तट पर आयोजित होगा. श्री जायसवाल ने बताया कि दूर-दराज़ से श्रद्धालु दीपदान और आरती में सम्मिलित होंगे. कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विद्युत, प्रकाश, साउंड सिस्टम, सफाई, सुरक्षा, पार्किंग, चिकित्सीय सुविधा और यातायात प्रबंधन के लिए विशेष टीम बनाई गई है. इस बार की महाआरती में स्थानीय कलाकारों के साथ प्रसिद्ध भजन गायिका शालिनी दुबे और गायक विवेक नायक भक्ति संगीत प्रस्तुत करेंगे. जमशेदपुर की झांकी टीम द्वारा भव्य झांकी भी प्रदर्शित की जाएगी. इसके उपरांत हजारों श्रद्धालुओं के लिए भोग वितरण की विशेष व्यवस्था की गई है. राजीव जायसवाल ने कहा कि आयोजन का उद्देश्य धार्मिक आस्था, एकता, स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण की जागरूकता बढ़ाना है. उन्होंने सभी से अधिक संख्या में शामिल होकर माँ छिन्नमस्तिका एवं माँ गंगा का आशीर्वाद प्राप्त करने और कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया.

प्रकाश पर्व पर दुल्हन की तरह सजा हजारीबाग गुरुद्वारा

हजारीबाग । सिख धर्म के प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर हजारीबाग का गुरुद्वारा परिसर आज भक्ति और आनंद से झूम उठा. पूरे परिसर को दुल्हन की तरह सजा गया है, जहाँ लाइटिंग, पुष्प सज्जा और श्रद्धा का सुंदर संगम देखने को मिल रहा है. प्रकाश पर्व के अवसर पर विशेष दीवान का आयोजन किया गया, जिसमें प्रसिद्ध रागी जत्थे भाई सुरजीत सिंह जी (कानपुर), भाई बलप्रीत सिंह जी (लुधियाना), भाई परमजीत सिंह जी (हजारीबाग) और भाई परमजीत परम जी ने अपनी मधुर कीर्तन सेवा से संगत को निहाल किया. श्री गुरु सिंह सभा के अध्यक्ष स. परमवीर सिंह कालरा और उनकी टीम ने सभी श्रद्धालुओं को दीवान में शामिल होने का आमंत्रण दिया. मीडिया प्रभारी रोहित बजाज ने बताया कि आयोजन का उद्देश्य गुरु नानक देव जी के संदेश "एक ओंकार सतनाम" को जन-जन तक पहुंचाना और प्रेम, सेवा व एकता का संदेश फैलाना है.

केबीएसएस +2 उच्च विद्यालय चौपारण में बाल संसद का गठन, चयनित मंत्रियों को बैच प्रदान

चौपारण । केबीएसएस +2 उच्च विद्यालय चौपारण में बाल संसद के नवगठित मंत्रियों को बैच प्रदान करने के लिए विद्यालय परिसर में एक गरिमामय कार्यक्रम आयोजित किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष दिलीप कुमार राणा ने की. इस अवसर पर शिक्षक और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और नव चयनित बाल मंत्रियों को शुभकामनाएं दीं. विद्यालय प्रांगण उत्साहपूर्ण और अनुशासित माहौल से भरा रहा. प्राचार्य ने छात्रों को नेतृत्व क्षमता, जिम्मेदारी और लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास के लिए प्रेरित किया. शिक्षकों ने कहा कि बाल संसद छात्रों में समाज में नेतृत्व निभाने की भावना को बढ़ावा देती है और विद्यालय के वातावरण को सकारात्मक बनाती है. इस पहल से छात्र अपनी सामाजिक और नेतृत्व योग्यताओं को विकसित करने के साथ-साथ लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों को भी आत्मसात कर रहे हैं.

चार्य ने बच्चों को नेतृत्व और जिम्मेदारी की सीख दी : केबीएसएस +2 उच्च विद्यालय चौपारण में आयोजित बाल संसद कार्यक्रम में प्राचार्य कालीचरण राम ने कहा कि बाल संसद छात्रों को जिम्मेदारी, नैतिकता और नेतृत्व गुण सिखाने का प्रभावी माध्यम है. उनका प्रयास है कि छात्र केवल पढ़ाई तक सीमित न रहें, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति संवेदनशील नागरिक बनें. कार्यक्रम में महेश प्रसाद वर्णवाल, नागेश्वर वर्मा, राजेंद्र कुमार, कमाल अहमद अंसारी सहित कई शिक्षक उपस्थित थे. यह कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न हुआ, जिसमें छात्रों में भविष्य के लिए उत्साह, आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा दिखाई दी. विद्यालय प्रशासन लगातार विद्यार्थियों को नई पहलों और सामाजिक कार्यों से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध रहेगा.

आदर्श डीएवी विष्णुगढ़ के छात्रों ने नेशनल एथलेटिक्स में दिखाया दम, राहुल कुमार वर्मा ने जीता रजत पदक

विष्णुगढ़ । दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 29-30 अक्टूबर को आयोजित नेशनल एथलेटिक्स मीट 2025 में आदर्श डीएवी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया. कक्षा 10 के राहुल कुमार वर्मा ने 400 मीटर रिले दौड़ में रजत पदक जीतकर विद्यालय का परचम लहराया. कक्षा 7ए के कृष्णा महतो ने 200 मीटर दौड़ में छठा और कक्षा 8 की अक्षरा सिंह ने चौथा स्थान प्राप्त किया. खेल शिक्षक व कोच सौरभ कुमार यादव ने छात्रों को प्रशिक्षण दिया. प्राचार्य दिग्विजय नारायण, प्रबंध निदेशक सागर कुमार, अध्यक्ष कृष्ण राणा समेत विद्यालय प्रशासन ने विजेताओं को बधाई दी. सभी शिक्षकों ने भी छात्रों को सराहा और भविष्य में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया.

तेलियामारन बिरहोर टोला में शिविर आयोजित बिरहोर समुदाय को मिली स्वास्थ्य व राशन सुविधा

मरकच्चो (कोडरमा)। उपायुक्त ऋतुराज के निर्देशानुसार मंगलवार को मरकच्चो दक्षिणी पंचायत के तेलियामारन बिरहोर टोला में विशेष शिविर का आयोजन किया गया. यह शिविर विलुप्तप्राय बिरहोर आदिम जनजाति के संरक्षण और कल्याण के उद्देश्य से आयोजित किया गया था. शिविर में 75 लोगों की स्वास्थ्य जांच, 42 का बीपी व शुगर टेस्ट, 62 का खून जांच और 48 व्यक्तियों की टीबी स्क्रीनिंग की गई. कुल 75 लोगों का हेल्थ कार्ड बनाया गया. आपूर्ति विभाग की ओर से 31 बिरहोर परिवारों के बीच चावल और नमक का वितरण किया गया. शिविर में प्रखंड विकास पदाधिकारी हुलास महतो, चिकित्सा प्रभारी डॉ. मोनिका मिश्रा, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी लक्ष्मी नाथ लोहारा सहित कई अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित रहे. इसी कार्यक्रम के तहत मूर्कमनाय पंचायत के बिरहोर कॉलोनी बरियारडीह में भी शिविर आयोजित किया जाएगा.

जयनगर में ई-रिक्शा हादसा : सचिवालय के पास चालक और महिला सवारी गंभीर रूप से घायल

जयनगर (कोडरमा)। मंगलवार दोपहर थाना क्षेत्र के पूर्वी पंचायत सचिवालय के पास एक तेज रफ्तार ई-रिक्शा (टोटो) अनियंत्रित होकर सड़क किनारे गड्ढे में जा गिरी, जिससे चालक और सवारी दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए. जानकारी के अनुसार, ई-रिक्शा सरमाटांड से सवारी लेकर जयनगर की ओर जा रही थी, तभी अचानक संतुलन बिगड़ने से वाहन पलट गया. हादसे में ककरचोली निवासी चालक इरशाद अंसारी और सतडीहा निवासी सवारी द्रौपदी देवी (पति सुरेश दास) घायल हुए. आसपास के लोगों ने तुरंत दोनों को बाहर निकालकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जयनगर पहुंचाया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उन्हें बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल कोडरमा रेफर कर दिया. बताया गया कि दोनों को सिर में गंभीर चोटें आई हैं. स्थानीय लोगों ने हादसे का कारण वाहन की तेज रफ्तार और सड़क की खराब स्थिति बताया.

जनता दरबार में डीसी ने इटखोरी बीडीओ को पेयजल की शिकायत के निवारण का दिया निर्देश

शुभम संदेश । चतरा

उपायुक्त कार्यालय कक्ष में मंगलवार को आयोजित जनता दरबार में उपायुक्त श्रीमती कीर्तिश्री ने जिले के विभिन्न प्रखंडों से आए नागरिकों की समस्याओं और जनशिकायतों को सुना। इस दौरान जनशिकायत कोषांग के पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जनता दरबार में पीएम किसान, भूमि विवाद, आपूर्ति व्यवस्था, स्वास्थ्य, शिक्षा, दिव्यांगजन पेंशन, पेयजल आपूर्ति सहित अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर आवेदन प्राप्त हुए।

इटखोरी प्रखंड के ग्राम हुरनाली से प्राप्त एक आवेदन में सरकारी जलमीनार से पेयजल न मिलने और निजी उपयोग में पानी लेने की शिकायत शामिल थी। उपायुक्त ने दूरभाष पर प्रखंड विकास पदाधिकारी इटखोरी सोमनाथ बाँकिरा को मौके पर जाँच कर नियमसंगत निष्पादन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके अलावा, अन्य मामलों पर भी उपस्थित अधिकारियों को ऑन द स्पॉट आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। उपायुक्त ने कहा कि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सही और पात्र व्यक्तियों तक समयबद्ध रूप से पहुंचे, यह जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी विभागीय अधिकारियों को प्राप्त आवेदनों के त्वरित निवारण हेतु निर्देशित किया गया। जनता दरबार हर सप्ताह मंगलवार और शुक्रवार को सुबह 11:30 बजे से 01:00 बजे तक समाहरणालय में आयोजित होता है, जहाँ नागरिक सीधे जिला प्रशासन के समक्ष अपनी समस्याएँ रख सकते हैं।

एक नजर

गुरुनानक जयंती पर विद्यार्थियों ने गुरुनानक देव जी के जीवन पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया

रामगढ़ । डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बरकाकाना में गुरु नानक देव जी की जयंती उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाई गई. कार्यक्रम की शुरुआत गायत्री मंत्र से हुई, उसके बाद अतिथियों का स्वागत और पुष्पांजलि अर्पित की गई. विद्यार्थियों ने गुरु नानक देव जी के जीवन पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया, जबकि छोटे बच्चों ने पंज प्यारे की वेशभूषा में कीर्तन और अरदास में भाग लिया. गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा के उपप्रधान निर्मल सिंह और संगत सदस्य उपस्थित रहे. प्राचार्य मोहम्मद मुस्तफा मजीद ने विद्यार्थियों को गुरु नानक के उपदेशों—समानता, सत्य, करुणा और सेवा—को जीवन में अपनाने का संदेश दिया. कार्यक्रम में प्रभात फेरी और लंगर का आयोजन भी किया गया. आयोजन में भक्ति, एकता और अनुशासन का सुंदर समन्वय देखने को मिला.

हजारीबाग डेली मार्केट का विधायक ने किया निरीक्षण, प्रभावित व्यापारियों से की मुलाकात

हजारीबाग । हजारीबाग के सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने शहर के व्यस्ततम डैली मार्केट का निरीक्षण कर स्थानीय दुकानदारों और व्यापारियों से मुलाकात की. हाल ही में हुई आगजनी से प्रभावित व्यापारियों को हरसंभव सहायता देने का आश्वासन उन्होंने दिया. निरीक्षण के दौरान विधायक ने नगर निगम के अधिकारियों को प्रभावित दुकानदारों को त्वरित राहत उपलब्ध कराने के निर्देश दिए. प्रदीप प्रसाद ने बाजार की सुरक्षा और व्यवस्था सुधारने के लिए सीसीटीवी कैमरे, दो सुरक्षा गार्ड और बेहतर प्रकाश व्यवस्था की आवश्यकता पर जोर दिया. उन्होंने सफाई की स्थिति सुधारने के लिए अतिरिक्त सफाईकर्मियों की तैनाती, अग्निशमन उपकरण और आपातकालीन निकास मार्गों की व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश भी दिया.

शहीद सोना -सोबरन शहादत दिवस को ऐतिहासिक बनाने की तैयारी, झामुमो की रणनीति तैयार

रामगढ़ । चितरपुर प्रखंड के भुचुंगडीह पंचायत में मंगलवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की बैठक आयोजित की गई. बैठक का आयोजन संयोजक मंडली के अध्यक्ष बिनोद किस्कू के निर्देश पर किया गया. बैठक में झामुमो नेता तनवीर आलम मुख्य रूप से उपस्थित रहे. बैठक में आगामी 27 नवंबर को बरलंगा लुकैयाटांड़ में दिवंगत दादाजी और शहीद सोना सोबरन के शहादत दिवस को ऐतिहासिक बनाने का निर्णय लिया गया. तनवीर आलम ने सभी कार्यकर्ताओं से मिलकर इसे सफल बनाने का आह्वान किया. बैठक की अध्यक्षता शिवलाल हांसदा और संचालन समसुल अंसारी ने किया. मौके पर नौशाद अख्तर, निसार अंसारी, महिला नेत्री बिराजो देवी, कालीचरण महतो, मकसूद खान, महेश्वरी कुमारी और मो खुशबाल सहित कई लोग उपस्थित थे.

टाटा स्टील वेस्ट बोकारो डिवीजन में 'ग्राहक अनुभव' पर केंद्रित गुणवत्ता माह की शुरुआत

रामगढ़ । टाटा स्टील के वेस्ट बोकारो डिवीजन में आज गुणवत्ता माह (क्वालिटी मंथ) का शुभारंभ किया गया. उद्घाटन समारोह जीएम कार्यालय में आयोजित हुआ, जिसमें नरेंद्र कुमार गुप्ता, चीफ, क्वारी एसई, वेस्ट बोकारो डिवीजन, मुख्य अतिथि रहे. इस वर्ष की थीम है – "ग्राहक अनुभव की गुणवत्ता – हर संवाद महत्वपूर्ण है." समारोह की शुरुआत गुणवत्ता ध्वज फहराने और सामूहिक प्रतिज्ञा के साथ हुई. महीने भर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें स्मॉल ग्रुप इम्प्रूवमेंट एक्टिविटीज, सजेशन मेला, नॉलेज शेयरिंग सत्र, क्विज़, 1-मिनट वीडियो कॉन्टेस्ट और वेंडर पैनल डिस्कशन शामिल हैं. इसके साथ ही डेली मैनेजमेंट में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले सर्वश्रेष्ठ विभाग को भी सम्मानित किया जाएगा.

हजारीबाग में प्रवासी श्रमिकों की समस्याओं पर नव झारखंड फाउंडेशन की महत्वपूर्ण पहल

हजारीबाग । प्रवासी श्रमिकों की बिगड़ती स्थिति और उनके सुरक्षा, पुनर्वास एवं रोजगार सुनिश्चित करने के लिए नव झारखंड फाउंडेशन ने महत्वपूर्ण पहल की है. संगठन के केंद्रीय अध्यक्ष किशोरी राणा ने लेबर कमिश्नर रवि शंकर से मुलाकात कर प्रवासी मजदूरों से जुड़े अहम मुद्दों पर चर्चा की. किशोरी राणा ने बताया कि हजारीबाग, चतरा, कोडरमा और गिरिडीह के हजारों मजदूर हर साल दिल्ली, पंजाब, गुजरात और तमिलनाडु जैसे राज्यों में रोजगार के लिए जाते हैं, जहां उन्हें अक्सर बिचौलियों के माध्यम से ठेकेदारों के पास भेजा जाता है. कई बार मजदूरी समय पर नहीं मिलती और रहने-सुरक्षा की व्यवस्था भी ठीक नहीं होती. बीमार या दुर्घटना का शिकार मजदूर बिना सहायता घर लौटते हैं.

पिपरवार में रैयतों ने सीसीएल प्रबंधन के खिलाफ किया अंचल का घेराव, जम कर की नारेबाजी

चतरा । रुढ़िवादी संयुक्त ग्रामसभा मंच के तत्वावधान में पिपरवार व टंडवा अंचल के आदिवासी रैयतों ने सीसीएल प्रबंधन के खिलाफ एक दिवसीय धरना-प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने बाहरी लोगों को नौकरी देने, जमीनों का फर्जीवाड़ा और मनमानी को लेकर जमकर नारेबाजी की। सुष्मिता उरांव की अध्यक्षता में 25 सूत्री मांग पत्र पर चर्चा की गई। रैयतों ने आरोप लगाया कि सीसीएल ने पूर्व में भूमि अधिग्रहण कानून को दरकिनार कर फर्जीवाड़ा कर जमीनें 25-30 वर्षों के लिए लीज पर लीं और कई बाहरी व्यक्तियों को नौकरी दे दी। प्रदर्शनकारियों ने राज्य सरकार से आदिवासी रैयतों के अधिकार सुनिश्चित करने, विस्थापितों के लिए नौकरी, मुआवजा और पुनर्वास की मांग की।

विभाग की बड़ी कार्रवाई, कोयले से भरे चार ट्रक जब्त

चौपारण (हजारीबाग)। प्रादेशिक वन विभाग ने अवैध कोयला तस्करी पर कड़ा प्रहार करते हुए चौपारण चेकनाका क्षेत्र में देर रात चार कोयले से भरे ट्रकों को जब्त किया। यह कार्रवाई गुप्त सूचना के आधार पर की गई थी। सूचना मिली कि अवैध कोयला लदा काफिला बिहार की ओर जा रहा है। ट्रक चालकों को कार्रवाई की भनक लगते ही वे वाहन सड़क किनारे छोड़कर फरार हो गए। वन विभाग ने तत्काल कार्रवाई करते हुए चारों ट्रकों को कब्जे में लिया और रेंज कार्यालय लाया। ट्रकों से लदे कोयले और दस्तावेजों की वैधता की जांच की जा रही है। अधिकारी ने कहा कि क्षेत्र में अवैध खनन और परिवहन के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा।

अवैध अफीम तस्करी की साजिश विफल की

चतरा । जिले में सक्रिय नशा तस्करों के खिलाफ पुलिस अभियान लगातार जारी है. एसपी सुमित कुमार अग्रवाल को मिली गुप्त सूचना के आधार पर हंटरगंज थाना पुलिस ने झारखंड-बिहार बॉर्डर के पास गोसाईडीह से अंतरराज्यीय अफीम तस्करी का बड़ा खेल फेल कर दिया. कार्रवाई में पांच तस्करों को गिरफ्तार किया गया और 2.800 किलो अवैध अफीम, पांच मोबाइल, एक बिना नंबर टीवीएस अपाचे मोटरसाइकिल और एक स्कूटी जब्त की गई. पूछताछ में गिरफ्तार तस्करों ने स्वीकार किया कि वह लंबे समय से यूपी, हरियाणा, दिल्ली और पंजाब में अफीम तस्करी में संलिप्त थे. गिरोह के अन्य सदस्यों के नाम भी पुलिस के रडार पर हैं. एसपी ने बताया कि हंटरगंज-डोभी मार्ग पर सघन वाहन जांच के दौरान गौतम कुमार और ललन कुमार के पास से 1.510 किलो और 1.290 किलो अफीम बरामद हुई.

हजारीबाग में अवैध महुआ शराब निर्माण पर छापेमारी

हजारीबाग । उपायुक्त हजारीबाग के निर्देश पर जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में अवैध महुआ शराब निर्माण और बिक्री केंद्रों पर संयुक्त छापामारी अभियान चलाया गया. विष्णुगढ़ थाना अंतर्गत नागी, करोंज मोड़, उर्गी, आठ माइल, दारू थाना अंतर्गत झुमरा बाजार और मुफ्फसिल थाना अंतर्गत मेरु ग्रामों में छापामारी की गई. अभियान के दौरान 2400 किलो जावा महुआ को नष्ट किया गया और 160 लीटर अवैध महुआ शराब जब्त की गई. आठ माइल और करोंज मोड़ से दो अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया, जबकि अन्य फरार अभियुक्तों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया. अवर निरीक्षक (उत्पाद) कृष्णा प्रजापति के नेतृत्व में यह अभियान गृहरक्षक बल के जवानों की मौजूदगी में संपन्न हुआ.

ब्रीफ न्यूज

पूर्व डीसी का भाजपा जिला महामंत्री ने किया स्वागत

सिमडेगा। पूर्व उपायुक्त विजय कुमार सिंह मंगलवार को रामरेखा राजकीय महोत्सव में शामिल होने पहुंचे. इस दौरान भारतीय जनता पार्टी के जिला महामंत्री मुकेश कुमार श्रीवास्तव ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया. महोत्सव स्थल पर पहुंचे से पहले सिमडेगा परिसदन में विजय कुमार सिंह ने मीडिया से बातचीत में कहा कि श्रीराम की पावन धरती सिमडेगा में आगमन का सौभाग्य मिला और इस राजकीय महोत्सव में हिस्सा लेने का अवसर प्राप्त हुआ इसके लिए मैं सिमडेगा जिला प्रशासन और यहां के लोगों के स्नेह व सहयोग के लिए हार्दिक शुभकामनाएं और आभा प्रकट करता हूं.

जिला प्रशासन ने चालकों से वसूला 2.52 लाख रुपये जुर्माना

- गुमला में सड़कों पर बढ़ती दुर्घटनाओं और मौतों पर जिला प्रशासन ने कड़ा रुख अपनाया

शुभम संदेश। गुमला

जिले की सड़कों पर बढ़ती दुर्घटनाओं और मौतों को देखते हुए जिला प्रशासन ने कड़ा रुख अपनाया है. जनवरी से सितंबर तक गुमला जिले में 204 सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 186 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं और 76 लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं. इस भयावह स्थिति को देखते हुए उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर मंगलवार को जिला परिवहन पदाधिकारी ज्ञान शंकर जायसवाल के नेतृत्व में ब्लैक स्पॉट करमडीपा पर एक सघन जांच अभियान चलाया गया. जांच अभियान का मुख्य उद्देश्य सड़क पर हो रही मौतों को कम करना और दुर्घटनाओं की रोकथाम करना था. अभियान के दौरान नियम तोड़ने वाले 200 से अधिक बाइक चालकों को यातायात नियमों के बारे में जानकारी दी गई और कानून का पालन कराने पर जोर दिया गया. इस दौरान विभिन्न उल्लंघनों के लिए कुल 2.52 लाख रुपये का जुर्माना वसूला गया.

जिला परिवहन पदाधिकारी ज्ञान शंकर जायसवाल ने स्पष्ट किया कि यह अभियान केवल जुर्माना वसूलने के लिए नहीं, बल्कि सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता देने और हादसों को रोकने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है. उन्होंने बताया कि दोपहिया वाहन पर हेलमेट न पहनने या चारपहिया वाहन में सीट बेल्ट न लगाने पर 1000 रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा. इसके अलावा, टेंपो या पिकअप में क्षमता से अधिक व्यक्तियों या सामान ले जाने पर प्रति व्यक्ति 200 रुपये का जुर्माना, ट्रिपल राइडिंग, अमान्य कागजात, और बिना वैध लाइसेंस वाहन चलाने पर अलग-अलग जुर्माने का प्रावधान है. उदाहरण के तौर पर, बिना वैध लाइसेंस चल रहे स्कार्पियो वाहन पर सात हजार रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा. इस अभियान में मोटरयान निरीक्षक रॉबिन अजय सिंह, गुमला थाना प्रभारी महेंद्र कुमार करमाली, डीटीओ कार्यालय के कर्मचारी और पुलिस बल भी शामिल थे. अभियान के दौरान सड़क पर नियमों का पालन सुनिश्चित करने के लिए लगातार निगरानी रखी गई और जनता को यातायात नियमों का पालन करने की सलाह दी गई.

प्रशासन मस्त, ग्रामीण त्रस्तः ओरामार में 'एकता' ने तोड़ी 'व्यवस्था' की चुप्पी

बिना सरकारी मदद के 4 किमी कच्ची सड़क का किया निर्माण

शुभम संदेश। गुमला

सरकारी योजनाओं में वर्षों की देरी और प्रशासनिक लापरवाही के बीच, चैनपुर प्रखंड के बामदा पंचायत के ओरामार गांव ने एक मिसाल पेश की है. गांव के पुरुष और महिलाओं ने अपनी अद्भुत एकजुटता का परिचय देते हुए, बिना किसी सरकारी मदद के, लगभग 4 किलोमीटर लंबी कच्ची सड़क का निर्माण कर दिखाया. यह सड़क गांव को मुख्य मार्ग से जोड़ती है, लेकिन लंबे समय से इसकी हालत इतनी जर्जर थी कि बरसात के मौसम में यह पूरी तरह कीचड़ और पानी से भर जाती थी. ग्रामीणों ने बताया कि स्कूली बच्चों को विद्यालय पहुंचने में भारी कठिनाई होती थी. बीमार लोगों को अस्पताल ले जाना लगभग असंभव था, और कई बार एंबुलेंस भी खराब रास्ते के कारण गांव तक नहीं पहुँच पाती थी. इन कठिन परिस्थितियों ने ग्रामीणों को स्वयं पहल करने के लिए प्रेरित किया. इस सामूहिक प्रयास में गांव के सभी वर्ग—बुजुर्ग, महिलाएं, युवा और बच्चे—ने भाग लिया. किसी ने फावड़ा चलाया, किसी ने मिट्टी ढोई, और किसी ने रास्ते की सफाई की.

यह दृश्य वास्तव में प्रेरणादायक था, जो ग्रामीण एकता और सामूहिक संघर्ष का प्रतीक बन गया.

ओरामार गांव की इस पहल में महिलाओं की भागीदारी विशेष उल्लेखनीय रही. अंजलि टेट, कलिस्ता खड़िया, किरण देवी, जयमणी देवी, बिमला देवी और कुशमानिया देवी सहित कई महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया. उनकी मेहनत ने ग्रामीण एकता और महिला सशक्तिकरण का जीवंत उदाहरण पेश किया. पुरुषों में मुनेश्वर खड़िया, मांगेलेश्वर खड़िया, देवशय खड़िया, लाहरो मुंडा, अर्जुन गोप, देवेंद्र खड़िया और दुर्गा खड़िया सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण शामिल हुए. उनका कहना है कि इस सड़क के बनने से केवल आवागमन ही सुगम नहीं होगा, बल्कि गांव की अर्थव्यवस्था में भी गति आएगी. अब किसान अपनी फसल, सब्जियां और उत्पाद आसानी से बाजार तक पहुंचा सकेंगे.

ग्रामीणों का आक्रोश स्पष्ट हैः ₹प्रशासन मस्त है और ग्रामीण त्रस्त. जनप्रतिनिधि और नेता केवल वोट के समय वादे करते हैं, लेकिन गांव की जीवनरेखा कहे जाने वाले रास्ते की उन्हें कोई चिंता नहीं. यह सड़क सरकारी लापरवाही का जीता-जागता उदाहरण है.₹ हालांकि सड़क श्रमदान से बन गई है, ग्रामीणों ने सरकार और प्रशासन से अपील की है कि इसे जल्द से जल्द पक्की सड़क में परिवर्तित किया जाए, ताकि यह आने वाले वर्षों में भी टिकाऊ और उपयोगी बनी रहे. ओरामार गांव की यह आत्मनिर्भर पहल साबित करती है कि इच्छाशक्ति और सामूहिक एकता से बिना सरकारी मदद के भी गांव के विकास की राह स्वयं तय की जा सकती है. यह घटना न केवल ओरामार बल्कि पूरे गुमला और आसपास के क्षेत्रों के लिए प्रेरणास्रोत बन गई है.

लोहरदगा प्रीमियर लीग का उद्घाटन, सांसद सुखदेव भगत ने खिलाड़ियों को दी शुभकामनाएं

लोहरदगा। लोहरदगा प्रीमियर लीग 2025 का भव्य उद्घाटन सांसद व लोहरदगा जिला फुटबॉल संघ के अध्यक्ष सुखदेव भगत, उपायुक्त डॉ. ताराचंद, पुलिस अधीक्षक सादिक अनवर रिजवी और संयोजक अभिनव सिद्धार्थ भगत द्वारा किया गया. समारोह की शुरुआत खिलाड़ियों से परिचय और शांति का प्रतीक कबूतर उड़ाने के साथ हुई. इससे पूर्व सभी अतिथियों का आयोजन समिति की ओर से गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया. उद्घाटन समारोह में सांसद सुखदेव भगत ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि लोहरदगा प्रीमियर लीग केवल फुटबॉल का आयोजन नहीं है, बल्कि खिलाड़ियों के सपनों को ऊँचाई तक पहुंचाने का माध्यम भी है. उन्होंने खिलाड़ियों से अनुशासन, मेहनत और खेल भावना बनाए रखने का आग्रह किया. उपायुक्त डॉ. ताराचंद ने कहा कि सांसद भगत के प्रयासों से जिले के खिलाड़ियों को एक बेहतर प्लेटफार्म मिल रहा है, जिससे उनका विकास संभव होगा. उन्होंने यह भी कहा कि जिला प्रशासन हमेशा खिलाड़ियों को बढ़ावा देने और उनके मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए तत्पर रहेगा. एसपी सादिक अनवर रिजवी ने कहा कि लोहरदगा जिले में होनहार खिलाड़ियों की कोई कमी नहीं है.

रायडीह में गर्भवती नाबालिग प्रेमिका की धारदार हथियार से की हत्या, आरोपी प्रेमी गिरफ्तार

गुमला। रायडीह थाना क्षेत्र अंतर्गत पुराना रायडीह गांव में मंगलवार की सुबह सुमन यादव ने अपने ही नाबालिग प्रेमिका अंशिका तिर्की को धारदार हथियार से काट कर हत्या कर दिया. मृतक अंशिका गर्भवती थी. घटना मंगलवार सुबह करीब सात बजे की बताई जा रही है. मृतका अंशिका तिर्की शांति नगर, धर्मजयगढ़ (छत्तीसगढ़) की रहने वाली थी और करीब पांच माह की गर्भवती थी. दोनों पिछले एक सप्ताह से सुमन के घर में ही लीव इन रिलेशनशिप में रह रहे थे. ग्रामीणों के अनुसार घटना को अंजाम देने के बाद सुमन यादव घर पर ही था. घटना की सूचना मिलते ही रायडीह के थाना प्रभारी संदीप कुमार यादव दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे और आरोपी युवक को हिरासत में ले लिया. शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल गुमला भेजा गया. प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी युवक ने अपराध स्वीकार किया है. कहा कि गर्भवती नाबालिग प्रेमिका को अपने घर में रखने से अच्छा नहीं लग रहा था. गुस्सा में आकर उसकी हत्या कर दी. आरोपी युवक की मां ने पुलिस को बताया कि उसका बेटा तीन-चार दिन से नहीं सो रहा था और उसकी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं थी.

एक नजर

राष्ट्रीय सनातन युवा मंच ने 101 परिवारों के बीच नाश्ता, मिठाई और बिस्किट का वितरण किया

रांची। "सेवा में सुकून है, सेवा में ईमान है, जो करे समाज का भला, वही इंसान महान है." इस सूत्रवाक्य के तहत राष्ट्रीय सनातन युवा मंच के संस्थापक अध्यक्ष करण कर्मकार के नेतृत्व में संस्था के सभी सदस्य समाज सेवा के लिए आगे आए. उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर नन्हे-मुन्हे बच्चों के बीच 101 जरूरतमंद परिवारों को नाश्ता, मिठाई और बिस्किट वितरित किए. इस निस्वार्थ सेवा कार्यक्रम में मुख्य रूप से सोनू कुमार, राहुल कर्माकर, प्रियांशु पवार, मनीष कुमार ज्योतिष पाठक, राजकुमार, शुभम चौधरी और अन्य सदस्य मौजूद थे.

मनरेगा आम बागवानी योजना में धोखाधड़ी

गुमला। जिले के डुमरी प्रखंड अंतर्गत टांगरडीह गांव में मनरेगा के तहत आम बागवानी योजना में कथित धोखाधड़ी का मामला सामने आया है. कांग्रेस नेता और असंगठित कामगार कांग्रेस के अध्यक्ष सह 20 सूत्री सदस्य मुख्तार आलम ने मंगलवार को गुमला उपायुक्त से मुलाकात कर लिखित आवेदन सौंपा और निष्पक्ष उच्च स्तरीय जांच की मांग की. मुख्तार आलम ने बताया कि टांगरडीह के किसान खोडे भगत, सुरेंद्र भगत, श्रीराम भगत, रतिसाम भगत, कल्याण भगत, पूनिया देवी आदि ने उनसे शिकायत की.

मनमानी टैक्स वसूली पर छात्र संघ ने जताई आपत्ति

गुमला। ऑल झारखंड आदिवासी छात्र संघ ने गुमला के साप्ताहिक हाट व टेंपो स्टैंड में ठेकेदार द्वारा की जा रही मनमानी टैक्स वसूली पर गंभीर आपत्ति जताई है. छात्र संघ के जिला प्रभारी अशोक कुमार भगत, जिला अध्यक्ष महावीर उरांव, रायडीह प्रखंड अध्यक्ष अजय खलखो सहित अन्य नेताओं ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर आरोप लगाया कि ठेकेदार नियमों की अवहेलना कर बाजार को अव्यवस्थित बना रहा है. छात्र संघ का कहना है कि साप्ताहिक हाट मुख्य रूप से कृषि उत्पादों के क्रय-विक्रय के लिए आयोजित किया जाता है और नगर परिषद द्वारा टेंडर प्रक्रिया के तहत यह व्यवस्थित किया गया था. लेकिन वर्तमान ठेकेदार द्वारा हाट में मनमानी कर किसानों और छोटे विक्रेताओं को परेशान किया जा रहा है. उनके आरोप हैं कि ठेकेदार किनारे-किनारे गैरेज और मुर्गा विक्रेताओं को स्थायी दुकान दिलवाकर भारी किराया वसूल कर रहा है.

जनगणना 2027 को लेकर प्री-टेस्ट प्रशिक्षण जारी

गुमला। भारत की जनगणना 2027 की तैयारी के तहत गुमला प्रखंड सभागार में आयोजित तीन दिवसीय प्री-टेस्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन मंगलवार को प्रगणक एवं पर्यवेक्षकों को व्यवहारिक जानकारियां दी गई. इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन पांच नवबंर बुधवार को होगी. कार्यक्रम के प्रथम दिन सोमवार को प्रशिक्षण का शुभारंभ अपर समाहर्ता शशिन्द्र कुमार बड़ाईक, जिला सांख्यिकी पदाधिकारी माधुरी बेक, चार्ज पदाधिकारी-सह-प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक कुमार चोपड़ा एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया था.

ब्राउन शुगर के साथ तीन युवक गिरफ्तार

गुमला। पुसो थाना पुलिस ने मादक पदार्थ तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन युवकों को ब्राउन सुगर के साथ गिरफ्तार किया है. पुलिस अधीक्षक गुमला को गुप्त सूचना मिली थी कि गढ़वा से तीन युवक एक मारुति ईको कार में सवार होकर ब्राउन सुगर लेकर पुसो की ओर आ रहे हैं. सूचना मिलते ही थाना प्रभारी मो जहांगीर को अलर्ट किया गया. टीम ने पुसो थाना गेट के सामने मुख्य सड़क पर नाकाबंदी कर वाहनों की सघन जांच शुरू कर दी. इसी दौरान रात करीब 6 बजे संदिग्ध ईको मारुति कार दिखाई दी. जिसे पुलिस ने रोक लिया. गाड़ी में सवार तीनों युवकों की तलाशी लेने पर उनके पास से ब्राउन सुगर के कुल 30 ग्राम पुड़िया बरामद की गई. जिसकी बाजार में कीमत लगभग 69 हजार बताई जा रही है. गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अभिषेक लकड़ा (24 वर्ष, ग्राम कुम्हारी), अजय कंसारी (27 वर्ष, ग्राम रामजडी) और रंजीत कंसारी (36 वर्ष, ग्राम रामजडी) के रूप में हुई है.

झामुमो का प्रचार अभियान, शफीक घाटशिला पहुंचे

सिमडेगा/घाटशिला। आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपने प्रचार अभियान को गति दे दी है. इसी कड़ी में सिमडेगा जिला सचिव सफीक खान अपनी पूरी टीम के साथ चुनावी प्रचार के लिए घाटशिला विधानसभा क्षेत्र के लिए रवाना हो गए .

ग्राम रक्षा दल ने प्रमाण पत्र जारी करने की मांग की

राहे। ग्राम रक्षा दल के सदस्यों ने अपने वर्षों के सेवाकाल को मान्यता देने और अनुभव प्रमाण पत्र जारी करने की मांग को लेकर रांची डीसी को आवेदन सौंपा है. दल के सदस्यों का कहना है कि उन्होंने गांवों में सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने, सामाजिक विवाद सुलझाने और आपात परिस्थितियों में प्रशासन की मदद करने जैसे कार्य वर्षों तक किए हैं, लेकिन उनके अनुभव का कोई औपचारिक प्रमाण नहीं दिया गया है. उनके कार्यकाल और सेवा रिकॉर्ड के आधार पर सभी सदस्यों को अनुभव प्रमाण पत्र प्रदान किया जाए. उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांग पूरी नहीं हुई, तो 12 नवंबर को राहे प्रखंड कार्यालय परिसर में धरना प्रदर्शन किया जाएगा.

झामुमो संयोजक पर चाकू से हमला, केस दर्ज

रातू। रातू प्रखंड झामुमो के संयोजक बेलाल अंसारी ने रातू थाना में पुटकलटोली ग्राम निवासी खैरूद्दीन अंसारी के विरुद्ध चाकू से जानलेवा हमला करने एवं हत्या के धमकी देने के संबंध में प्राथमिकी दर्ज कराई है. अपने आवेदन में उन्होंने कहा है कि वह निजी काम से हाजी चौक गए थे, वहां अचानक खैरूद्दीन अंसारीआ पहुंचा तथा चाकू से हमला करते हुए उसे धक्का देकर गिरा दिया. प्रत्यक्षदर्शियों ने उन्हें उठाकर खड़ा किया. किसी तरह उन्होंने भाग कर अपनी जान बचाई. आवेदन में उन्होंने कहा है कि इससे पूर्व भी तीन बार वह उन पर हमला कर चुका है. पुलिस ने मामला दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी है.

कार्तिक पूर्णिमा पर महाअनुष्ठान के साथ रामरेखा मेले का शुभारंभ

सिमडेगा। कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल रामरेखा धाम में मंगलवार को महा अनुष्ठान के साथ भव्य रामरेखा मेला शुरू हुआ. इस अवसर पर श्रद्धालुओं में आस्था और भक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला. मेला का विधिवत शुभारंभ जिला उपायुक्त कंचन सिंह, पुलिस अधीक्षक एम. अर्शी, रामरेखा धाम विकास समिति के अध्यक्ष एवं महंत अखंड दास जी महाराज, मुख्य संरक्षक दुर्ग विजय सिंह देव, संरक्षक कौशल राज सिंह देव, और सचिव ओमप्रकाश साहू सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में हुआ. सभी ने संयुक्त रूप से पूजन-अर्चन और नारियल फोड़कर धार्मिक मेले का उद्घाटन किया. इसके पश्चात उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक ने भगवान श्रीराम के विग्रह में पूजन कर जिले की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की. इस अवसर पर रामरेखा धाम से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों पर आधारित स्मारिका का भी विमोचन किया गया.

धाम के अध्यक्ष महंत अखंड दास जी महाराज ने कहा कि राम सबके हैं और रामत्व को अपने जीवन में लाना आवश्यक है. उन्होंने बताया कि केवल राम नाम की भक्ति ही जीवन को पवित्र और सफल बना सकती है. वहीं, संरक्षक कौशल राज सिंह देव ने कहा कि रामरेखा धाम आस्था और आध्यात्मिकता का प्रतीक स्थल है, जहां हर वर्ष लाखों श्रद्धालु आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करते हैं. उपायुक्त कंचन सिंह ने रामरेखा धाम को धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से सिमडेगा का प्रमुख स्थल बताते हुए कहा कि राज्य सरकार के निर्देशानुसार इस वर्ष मेला राजकीय रामरेखा महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है. पुलिस अधीक्षक एम. अर्शी ने बताया कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया गया है. भक्ति, आस्था और सांस्कृतिक विविधता से परिपूर्ण यह मेला आने वाले दिनों में भी जिले में धार्मिक उत्साह का केंद्र बना रहेगा.

मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति से सफलता सुनिश्चित होती हैः किष्टो कुमार बेसरा

बुंडू। मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति से सफलता सुनिश्चित होती है. यह संदेश बुंडू एसडीएम किष्टो कुमार बेसरा ने साउथ प्वाइंट पब्लिक स्कूल, बुंडू में दो दिवसीय झारखंड मॉडल यूनाइटेड नेशंस 2025 के समापन समारोह में दिया. कार्यक्रम के दूसरे दिन छात्रों ने वैश्विक मुद्दों पर वाद-विवाद, कूटनीति और नेतृत्व कौशल का शानदार प्रदर्शन किया. इस आयोजन में विभिन्न समितियों—लोकसभा, जेएलए, एआईपीपीएम और आईपीसी—ने अपनी उत्कृष्टता दिखाई. सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में लक्ष्य जैन, अक्षरा कुमारी, वीर बिरसा सेन, रिशु मिश्रा, प्रियांशी साहू, प्राची दास, आरव जायसवाल, अनिकेत कुजूर, हर्षित राज, दीपिका कुमारी, आनवी महानंदी बड़ाईक, आस्था जायसवाल, आयुष्मान दत्ता, दिवाकर कुमार सिंह, शानवीर हल्दार और वैभव निखिल को नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र और मैडल देकर सम्मानित किया गया. साउथ प्वाइंट पब्लिक स्कूल को सर्वश्रेष्ठ

स्कूल के पुरस्कार से नवाजा गया और विजेताओं को ट्रॉफी बुंडू एसडीएम किष्टो कुमार बेसरा ने सौंपा. प्रतियोगिता में साउथ प्वाइंट के अलावा एनडी ग्रोवर डीएवी, बुंडू और सेंट जोंस, रांची के विद्यार्थी भी शामिल हुए. साउथ प्वाइंट के प्राचार्य सुभाष कुमार पाटनी ने सभी प्रतिभागियों की सराहना की और विजेताओं को बधाई दी. उन्होंने कार्यक्रम की सफलता का श्रेय पूर्ववर्ती छात्र शांतनु पॉल और उनकी टीम को दिया. इस आयोजन ने छात्रों में वैश्विक मुद्दों को समझने और नेतृत्व कौशल विकसित करने का एक अनोखा अवसर प्रदान किया.

एबीवीपी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद गुमला नगर और कॉलेज इकाई का पुनर्गठन

ज्योतिष राम बने नगर मंत्री व आदित्य सिंह अध्यक्ष

शुभम संदेश। गुमला

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद गुमला की नगर और कॉलेज इकाई का पुनर्गठन मंगलवार को किया गया. इस अवसर पर आयोजित बैठक में संगठन की नई कार्यकारिणी घोषित की गई. ज्योतिष राम को नगर मंत्री और आदित्य सिंह को कॉलेज इकाई का अध्यक्ष नियुक्त किया गया. कॉलेज टीम के गठन के दौरान कार्यकर्ताओं को विभिन्न जिम्मेदारियां सौंपी गई. उपाध्यक्ष के पद पर सचिन सिंह, नवीन कुमार गोप, प्रीति कुमारी और किशन भगत को नियुक्त किया गया. कॉलेज मंत्री का दायित्व आलोक प्रजापति को सौंपा गया, जबकि सह मंत्री के रूप में हर्ष कुमार, निलकेश्वर यादव और सपना टोपो को जिम्मेदारी दी गई. खेलो भारत प्रमुख के पद पर संदीप उरांव और होलिका कुमारी, एस एफ डी प्रमुख सुलेखा कुमारी और एस एफ एस प्रमुख नवीन कुमार बनाए गए. स्टडी सर्किल प्रमुख सुमाया परवीन, कॉलेज कार्यालय मंत्री सुशील भूमिका और कॉलेज कोष प्रमुख रोहित महतो को भी जिम्मेदारी सौंपी गई.

कला मंच के प्रमुख साजिया परवीन और पल्लवी कुमारी, भूगोल विभाग प्रमुख पूजा कुमारी, हिंदी विभाग प्रमुख शशि बाल उरांव, अंग्रेजी विभाग प्रमुख अंजुला कुमारी, नागपुरी विभाग प्रमुख सुनैना कुमारी, साइंस विभाग प्रमुख रवि महतो और कुड़ूख विभाग प्रमुख सुरेश उरांव को भी टीम में शामिल किया गया. इसके अलावा, सदस्य के रूप में सविता कुमारी, प्रतिमा कुमारी, रूपा कुमारी, तपेश नायक, रिया कुमारी, लकी तिग्गा, आकाश तिग्गा, सूरज उरांव, नवीन उरांव, हेमंत, राज लोहार आदि को जिम्मेदारी दी गई. संगठन मंत्री देवी सिंह ने छात्रों को संबोधित करते हुए परिषद के स्थापना उद्देश्य, कार्य और लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी. उन्होंने कहा कि परिषद का उद्देश्य छात्रों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्र का पुनर्निर्माण करना है. इसके तहत संगठन विभिन्न कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों के विकास के लिए नए प्रयोग करता है और उन्हें उचित मंच प्रदान करता है. नगर मंत्री ज्योतिष राम ने नवीन कार्यकारिणी को बधाई देते हुए कहा कि कॉलेज की समस्याओं के समाधान और छात्रों के हित में सामूहिक प्रयास किए जाएंगे. उन्होंने कार्यकर्ताओं से सहयोग और सक्रिय भागीदारी की अपील की.

डीसी प्रेरणा दीक्षित ने चंदाली स्थित ईवीएम वेयरहाउस का किया निरीक्षण, दिए निर्देश

गुमला। जिला निर्वाचन पदाधिकारी एवं सह उपायुक्त प्रेरणा दीक्षित ने मंगलवार को चंदाली स्थित ईवीएम वेयरहाउस का निरीक्षण किया. निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने वेयरहाउस की सुरक्षा व्यवस्थाओं की विस्तृत जानकारी हासिल की और विभिन्न आवश्यक मानकों की जांच की. उपायुक्त ने सीसीटीवी कैमरों सहित अन्य सुरक्षा उपकरणों की स्थिति और रख-रखाव की समीक्षा की. इसके अलावा उन्होंने संपूर्ण परिसर का भ्रमण करते हुए विद्युत व्यवस्था, बैलेट यूनिट हॉल, अग्निशमन यंत्र, कमरों की सीलिंग और डबल लॉक की स्थिति का भी जायजा लिया. उपायुक्त ने निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित सभी मानकों के पालन की पुष्टि करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए. इस दौरान उन्होंने सुरक्षा व्यवस्था, उपकरणों की स्थिति और कर्मचारियों की तत्परता पर विशेष

ध्यान दिया. उपायुक्त ने कर्मचारियों को मतदाता इलेक्ट्रॉनिक मशीन (ईवीएम) और वीवीपीएटी की सुरक्षा सुनिश्चित करने और किसी भी आपात स्थिति में तत्पर रहने के लिए निर्देशित किया. इस मौके पर उप निर्वाचन पदाधिकारी, विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि एवं निर्वाचन कार्यालय के कर्मी भी उपस्थित थे. सभी उपस्थित लोगों को वेयरहाउस की कार्यप्रणाली और सुरक्षा उपायों से अवगत कराया गया. उपायुक्त का मानना था कि चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ईवीएम वेयरहाउस का निरीक्षण समय-समय पर किया जाना आवश्यक है.

मंथन

नियुक्ति में पारदर्शिता की दिशा में उठे बड़े कदम

राज्य मंत्रिपरिषद द्वारा बहुद्देश्यीय कर्मी नियुक्ति एवं सेवा शर्त नियमावली (एमपीएस) को मंजूरी मिलना झारखंड सरकार की नियुक्ति प्रक्रिया में पारदर्शिता और एकरूपता लाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है. लंबे समय से सचिवालयों और समहरणालयों में चतुर्थ वर्गीय पदों की नियुक्ति पर रोक लगी थी, जिससे निचले स्तर पर कार्य निष्पादन प्रभावित हो रहा था. अब नई नियमावली से इन पदों पर नियमित और निष्पक्ष बहाली का रास्ता खुल गया है. बता दें कि पलामू में नियुक्तियों को लेकर हुए विवाद ने यह स्पष्ट कर दिया था कि बिना एकसमान नियमों के चयन प्रक्रिया विवादों में फंस सकती है. नई व्यवस्था में झारखंड कर्मचारी चयन आयोग (जेएसएससी) को परीक्षा की जिम्मेदारी सौंपना स्वागतयोग्य निर्णय है. इससे नियुक्तियों पर पारदर्शिता का भरोसा बढ़ेगा और राजनीतिक या स्थानीय दबाव की गुंजाइश कम होगी. सरकार ने संविदा या दैनिक मजदूर के रूप में वर्षों से कार्यरत कर्मियों को ग्रेस अंक और आयु सीमा में छूट का जो प्रावधान किया है, वह भी व्यावहारिक है. इससे अनुभव और निष्ठा को मान्यता मिलेगी. वहीं, मैट्रिक पास की अनिवार्यता से न्यूनतम शैक्षिक स्तर भी तय हुआ है. मल्टी पर्पस स्टाफ को सौंपे गए कार्य विविध और जिम्मेदार हैं-कार्यालय प्रबंधन से लेकर दस्तावेजों की निगरानी, बैंक-पोस्ट ऑफिस के कार्य तक। ऐसे में यह वर्ग प्रशासनिक ढांचे की बुनियाद साबित होगा. अब जरूरत है कि सरकार इस नियमावली के तहत नियुक्तियों को समयबद्ध ढंग से पूरा करे और प्रक्रिया को पूरी पारदर्शिता से संचालित करे. क्योंकि यह केवल नियुक्ति नहीं, बल्कि प्रशासन में जनता के विश्वास को पुनर्स्थापित करने का अवसर भी है.

नजरिया

राज्य में कानून के रक्षक ही जब बन जाएं अपराधी

झारखंड पुलिस की सब इंस्पेक्टर मीरा सिंह के खिलाफ ईडी की रिपोर्ट न केवल चौंकाने वाली है, बल्कि यह पुलिस की साख पर सवाल भी खड़ा करती है. ईडी ने मीरा सिंह के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोप में प्राथमिकी दर्ज करने की अनुशंसा की है और धन शोधन निवारण अधिनियम के तहत ठोस सबूत साझा किए हैं. यह मामला इसलिए गंभीर है क्योंकि इसमें एक ऐसे अधिकारी पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा है, जिसे कानून की रक्षा का दायित्व सौंपा गया था. ईडी की जांच में जो तथ्य सामने आए हैं-बिना ब्याज के कर्ज लेने के फर्जी दावे, कोड वर्ड में लेनदेन, नौ मोबाइल से बरामद संदिग्ध चैट और पति के खातों में भारी नकद जमा-ये सब इस बात के प्रमाण हैं कि भ्रष्टाचार अब विभागीय सीमाओं को लांघ चुका है. जब रक्षक ही नियमों का उल्लंघन करने लगें, तो जनता का भरोसा डगमगाना स्वाभाविक है. यह भी चिंताजनक है कि मीरा सिंह ने अपनी संपत्तियों और निवेश की जानकारी सरकार से छिपाई, जो सेवा नियमों का उल्लंघन है. ऐसे मामलों में सिर्फ विभागीय कार्रवाई पर्याप्त नहीं, बल्कि कठोर कानूनी दंड आवश्यक है ताकि भविष्य में कोई अधिकारी पद का दुरूपयोग करने का साहस न करे. यह घटना पुलिस तंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने की सख्त जरूरत का संकेत देती है. सरकार को इस प्रकरण को एक मामले के रूप में नहीं, बल्कि व्यवस्था सुधार के अवसर के रूप में लेना चाहिए-क्योंकि अगर कानून के रखवाले ही भ्रष्ट हो जाएं, तो न्याय की नींव हिलना तय है.

गुरुनानक का जीवन दर्शन व नैतिकता की सीख

विजय केसरी

कार्तिक पूर्णिमा, सिख धर्म के संस्थापक गुरुनानक की जयंती पर विशेष

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक जी का जीवन दर्शन सहज - सरल रहने के साथ नैतिकता की सीख प्रदान करता है. उनका जीवन बहुत ही सहज सरल और सत्य निष्ठा पर आधारित था. उन्होंने कभी भी ऐसा कोई कार्य नहीं किया, जिससे मानव मन व्यथित हो. उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि जीवन को सत्य की राह पर ले जाना ही जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य होना चाहिए. मनुष्य को कदापि वह कार्य नहीं करना चाहिए, जो असत्य पर आधारित हो. ईमानदारी की सूखी रोटी ही अच्छी है. बेईमानी का मालपूआ का भी कोई अर्थ नहीं रह जाता है. अर्थात उन्होंने सत्य मार्ग को ही जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण बताया. वहीं असत्य के मार्ग पर न चलने की हिदायत दी. आज संपूर्ण विश्व को गुरु नानक देव का जीवन दर्शन आत्मसात कर, मिलजुल कर आगे बढ़ना चाहिए. गुरु नानक देव जी को सिख धर्मावलंबियों का प्रथम गुरु होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. वे बचपन से ही दयालु प्रवृत्ति के थे.

वे सदैव गरीबों के कल्याण के लिए तत्पर रहा करते थे. वे भूखे व्यक्तियों की भूख मिटाने के प्रति बहुत ही सजग रहा करते थे. इस कारण उन्हें कई बार अपने परिवार वालों का कोपभाजन बनना पड़ता. लेकिन उन्होंने इसकी तनिक भी परवाह नहीं की. उनका जन्म 15 अप्रैल, 1469, कार्तिक पूर्णिमा को राय भोई की तलवंडी, ननकाना साहिब, पंजाब, पाकिस्तान में हुआ था. वे इस धरा पर 70 वर्षों तक रहे थे. उनका निर्वाण 22 सितंबर 1539 को हुआ था. उनके अनुयायी उन्हें प्रेम से नानक, नानक देव जी, बाबा नानक और नानक शाह नामों से बुलाते हैं.

गुरु नानक देव जी का व्यक्तित्व और कृतित्व दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्म सुधारक, समाज सुधारक, कवि, देशभक्त और विश्व बंधुत्व आदि गुण से हो ओतप्रोत ह. इनके पिता का नाम मेहता कालू चन्द खत्री ब्राह्मण तथा माता का नाम तृप्ता देवी था. गुरु नानक देव बचपन से ही प्रखर बुद्धिमत्ता के लक्षण दिखाई देने लगे थे. लड़कपन ही से वे सांसारिक विषयों से उदासीन रहा करते थे. पढ़ने-लिखने में उनका मन नहीं लगा. इसी कारण उनका सात-आठ की उम्र में स्कूल छूट गया था. तत्पश्चात् सारा समय वे आध्यात्मिक चिन्तन और सत्संग में व्यतीत करने लगे. बचपन में कई चमत्कारिक घटनाएं घटीं, जिन्हें देखकर गांव के लोग इन्हें दिव्य व्यक्तित्व मानने लगे थे. बचपन के समय से ही उनमें श्रद्धा रखने वालों में इनकी बहन नानकी तथा गांव के शासक राय बुलार आदि प्रमुख थे. गुरु नानक का विवाह 16 वर्ष की आयु में गुरदासपुर जिले के लाखौ मूला की कन्या सुलक्खनी कर दिया गया था.

32 वर्ष में उनके प्रथम पुत्र श्रीचन्द का जन्म हुआ. चार वर्ष बाद दूसरे पुत्र लखमी दास का जन्म हुआ. दोनों लड़कों के जन्म के बाद 1507 में गुरु नानक देव अपने परिवार का भार अपने श्वसुर पर छोड़कर मरदाना, लहना, बाला और रामदास इन चार साथियों को लेकर तीर्थयात्रा के लिए निकल पड़े. गुरु नानक 1507 से लेकर 1539 तक सिर्फ और सिर्फ ईश्वरीय कृपा का प्रसाद ही बांटते रहे. उनके प्रवचन का विषय यह रहता था कि ईश्वर क्या है? ईश्वर की कृपा क्या है? ईश्वर के प्रति मनुष्य की क्या कर्तव्य होनी चाहिए? मनुष्य का जीवन कैसा होना चाहिए?

उनके प्रवचन में धीरे-धीरे कर श्रोताओं की संख्या बढ़ने लगी. यही श्रोता आगे चलकर उनके शिष्य बने. यहीं से सिख धर्म का उदय हुआ. गुरु नानक देव जी के जन्म और मृत्यु के संबंध में कई विवादास्पद तिथियां इतिहास में अंकित हैं. इस पर विवाद होता रहता है, लेकिन अधिकांश साहित्यकारों का वर्तमान में जो तिथि प्रचलित है, वही मान्य है. गुरु नानक देव की यात्राओं के बारे में उपन्यास के दावे, साथ ही उनकी मृत्यु के बाद उनके शरीर के गायब होने जैसे दावे भी बाद के संस्करणों में मिलते हैं. गुरु नानक देव की यात्रा के आसपास की किंवदंतियों से संबंधित सिख जन मसाखियों में अन्य प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष उदार हिंदू काव्यों, पुराणों और बौद्ध जातक कहानियां में दर्ज है. गुरु नानक देव जी के जीवन दर्शन को सर्वेश्वर वादी दर्शन के रूप में जाना जाता है. मूर्तिपूजा के संदर्भ में उन्होंने सनातन मत की मूर्तिपूजा की शैली के विपरीत एक परमात्मा की उपासना का एक अलग मार्ग मानवता को दिया. उन्होंने हिन्दू पंथ में सुधार के लिए कार्य किया था. इसलिए उन्हें एक प्रखर दूरदृष्टा समाज सुधारक के नाम से भी जाना जाता है.

उन्होंने तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक स्थितियों पर भी दृष्टि डाली. संत साहित्य में नानक उन सतों की श्रेणी में हैं जिन्होंने नारी को बड़प्पन दिया. हिन्दी साहित्य में गुरु नानक देव भक्तिकाल के अन्तर्गत आते हैं. वे भक्तिकाल में निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा से संबंध रखते हैं. उनकी कृति के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में दर्ज किया हैं कि- भक्तिभाव से पूर्ण होकर वे जो भजन गाया करते थे, उनका संग्रह, संवत् 1661 में ग्रन्थ साहब में किया गया है. जीवन के अन्तिम दिनों में गुरु नानक देव की ख्याति बहुत बढ़ गई थी.

उनके विचारों में भी परिवर्तन हुआ था. उनके विचारों में नया दर्शन था, जो मनुष्य को मनुष्यता से परिचय करवाता था. उन्होंने धर्म के अर्थ को मानवता की सेवा से जोड़ कर में प्रस्तुत किया. उन्होंने करतारपुर नामक नगर बसाया, जो कि अब पाकिस्तान में है. उन्होंने एक बड़ी धर्मशाला उसमें बनवाई. इसी स्थान पर उनका परलोक वास हुआ. मृत्यु से पहले उन्होंने अपने शिष्य भाई लहना को अपना वारिस घोषित किया जो बाद में गुरु अंगद देव के नाम से जाने गए.

गुरु नानकदेव भेदा भेद वादी कवि थे. साथ ही वे एक अच्छे सूफी कवि भी थे. उनके भावुक और कोमल हृदय ने प्रकृति से एकात्म होकर जो अभिव्यक्ति की है, वह निराली है. उनकी भाषा 'बहता नीर' थी, जिसमें फारसी, मुल्तानी, पंजाबी, सिंधी, खड़ी बोली, अरबी के शब्द समा गए थे. गुरु ग्रन्थ साहिब में सम्मिलित 974 शब्दों में, 19 रागों में, गुरबाणी को शामिल किया गया.

गुरुनानक देव जी भेदा वादी कवि थे. उनके भावुक और कोमल हृदय ने प्रकृति से एकात्म होकर जो अभिव्यक्ति की, वह निराली है. उनकी भाषा बहता नीर थी. गुरुग्रंथ साहिब में सम्मिलित 974 शब्दों, 19 रागों को, गुरबाणी में शामिल किया गया.

आज का इतिहास

1556 : पानीपत की दूसरी लड़ाई में बैरम खान की हार के बाद मुगल ताकत बहाल.
1914 : फ्रांस-ब्रिटेन ने तुर्की पर हमला बोला. इससे पहले विश्व युद्ध का दायरा बढ़ा.
1930 : आलोचक सिंक्लेयर लुइस ने साहित्य के लिए नोबेल जीता. वह यह सम्मान हासिल करने वाले पहले अमेरिकी बने.
1940 : फ्रेंकलिन डी रूजवेल्ट तीसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए.
1956 : मिस्र और इजरायल के बीच स्वेज नहर संघर्ष में ब्रिटेन-फ्रांस की सेनाएं पहुंचीं.
1994 : जार्ज फोरमैन ने माइकल मूर को हराकर 45 वर्ष की आयु में विश्व हेवीवेट चैंपियन का खिताब जीता.
2006 : सद्दाम हुसैन को मानवता के खिलाफ अपराधों पर मौत की सजा सुनाई गई.
2013 : भारत ने मंगल अभियान की शुरुआत की. पहले ही प्रयास में देश का मंगलयान अपने मिशन में सफल हुआ.

एक गुस्सैल का गुस्सा और बाबा की बड़ी सीख

चिंतन

पंकज एक गुस्सैल लड़का था. एक दिन पंकज के पेरेंट्स को एक संन्यासी बाबा का पता चला. अगले दिन वे पंकज को बाबा के पास ले गए. बाबा बोले, जाओ और चिकनी मिट्टी के दो ढेर तैयार करो. पंकज को बात अजीब लगी लेकिन माता-पता के डर से वह ऐसा करने को तैयार हो गया. कुछ ही देर में उसने ढेर तैयार कर लिया. बाबा बोले, अब इन दोनों ढेरों से दो दिल तैयार करो.पंकज ने दो दिल बनाए और बोला, हो गया बाबा, क्या अब मैं जा सकता हूं? बाबा बोले, अब इनमें से एक को कुम्हार के पास लेकर जाओ और कहो कि वो इसे भट्टी में डाल कर पका दे. दो-तीन घंटे बाद पंकज यह काम कर के लौटा. यह लो रंग और अब इस दिल को रंग कर मेरे पास ले आओ.बाबा बोले. आखिर आप क्या चाहते हैं? इन सब टोटकों से मेरा गुस्सा बढ़ ही रहा है. पंकज बड़बड़ाने लगा.

बाबा बोले, बस पुत्र यही आखिरी काम है. पंकज ने चैन की सांस ली और भट्टी में पके उस दिल को लाल रंग से रंगने लगा. रंगे जाने के बाद वह बड़ा ही आकर्षक लग रहा था. तो हो गया तुम्हारा काम पूरा? बाबा ने पूछा. जी, पंकज बोला. ठीक है, ये लो हथौड़ा और मारो इस दिल पर.बाबा ने कहा.पंकज ने विरोध किया. बाबा बोले, मैंने कहा न मारो हथौड़ा. पंकज ने गुस्से से दिल पर वार किया. एक झटके में उस दिल के टुकड़े-टुकड़े हो गए. बाबा ने मिट्टी का दूसरा दिल निकाला और बोले, मिट्टी का यह दिल भी तुमने तैयार किया. लो अब इस पर भी जोर लगाओ.पंकज ने उस दिल पर भी वार किया. पर, नर्म व नम होने के कारण इस दिल का कुछ ख़ास नहीं बिगड़ा बस हथौड़े का एक निशान भर उभर गया.

देखो पुत्र, बाबा पंकज से बोले-जिस दिल पर तुमने मेहनत की वो तुम्हारा दिल था. तुम भी क्रोध की भट्टी में अपने दिल को जला कर कठोर बना रहे हो नासमझी के कारण. तुम्हें लगता है तुम मजबूत बन रहे हो, लेकिन जब हथौड़े की तरह ज़िंदगी तुम पर वार करेगी, तुम संभल नहीं पाओगे और उस कठोर दिल की तरह तुम्हारा भी दिल चकनाचूर हो जाएगा. समय है संभल जाओ! कच्ची मिल्टी के दिल की तरह विनम्र बनो. देखो, इस पर वार का असर तो हुआ पर ये टूटा नहीं. ये फिर अपने पहले रूप में आ सकता है. पंकज बाबा समझ चुका था कि अब उसे कैसा व्यवहार करना है.

इंडिया पर ट्रेंडिंग

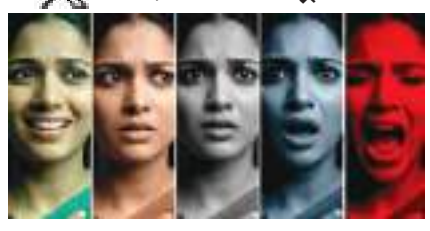

1. #WomenSafetyMattersTN
2. ChatGPT Go
3. #BraveheartDevoutWarrior
4. #Kaantha
5. Public Sab Janati Hai
6. Innocent Sant
7. #WeTVAlwaysMore2026
8. #Daksha
9. पूर्व प्रदेश
10. Autopay

बहुरंग

कार्तिक आर्यन बने 'इच्छाधारी नाग', फिल्म नागजिला की पूजा के साथ शुरू हुई शूटिंग

बॉलीवुड एक्टर कार्तिक आर्यन इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म 'नागजिला' को लेकर सुर्खियों में हैं. हाल ही में फिल्म की शूटिंग से पहले टीम ने सेट पर पूजा की, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है. ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श ने यह वीडियो साझा करते हुए बताया कि फिल्म की टीम ने शूटिंग शुरू करने से पहले शुभकामना के तौर पर पूजा-अर्चना की. इस वीडियो में कार्तिक आर्यन के साथ निर्माता करण जौहर भी नजर आ रहे हैं. फिल्म नागजिला का निर्देशन मृगदीप सिंह लांबा कर रहे हैं, जिन्होंने इससे पहले फुकरे जैसी सुपरहिट फिल्में दी हैं. फिल्म का निर्माण करण जौहर, महावीर जैन, अदार पूनावाला, अपूर्व मेहता, मृगदीप सिंह लांबा और सुजीत जैन मिलकर कर रहे हैं. यह फिल्म एक फिक्शनल एंटरटेनमेंट ड्रामा होने वाली है, जिसमें पौराणिकता और आधुनिक हास्य का अनोखा मिश्रण देखने को मिलेगा. कार्तिक आर्यन इस फिल्म में इच्छाधारी नाग प्रियंवदेश्वर प्यारे चंद की भूमिका निभा रहे हैं. कुछ समय पहले कार्तिक ने फिल्म की शूटिंग शुरू होने की जानकारी खुद दी थी. उन्होंने हाथ में क्लैपबोर्ड पकड़े अपनी मुस्कुराती तस्वीर शेयर की थी, जिसमें फिल्म का नाम 'नागजिला' और निर्देशक मृगदीप सिंह लांबा का नाम साफ दिखाई दे रहा था. इससे पहले, करण जौहर ने फिल्म का मोशन पोस्टर जारी करते हुए लिखा था – "इंसानों वाली पिचरें तो बहुत देख ली, अब देखो नागों वाली पिचर! नागजिला – नाग लोक का पहला कांड, मजा फैलाने आ रहा है प्रियंवदेश्वर प्यारे चंद नाग पंचमी पर आपकी नजरें 14 अगस्त 2026 को!" हालांकि फिल्म की कहानी को लेकर अभी ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन बताया जा रहा है कि नागजिला में रहस्य, रोमांच और हास्य का दिलचस्प संगम देखने को मिलेगा.

'हक' को सेंसर बोर्ड से मिली बड़ी राहत, बिना किसी कट के यूए सर्टिफिकेट के साथ 7 को होगी रिलीज

यामी गौतम और इमरान हाशमी स्टारर फिल्म 'हक' को सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन से बड़ी राहत मिली है. फिल्म को किसी भी तरह का कट नहीं झेलना पड़ा और इसे यूए (13+) सर्टिफिकेट के साथ रिलीज की मंजूरी मिल गई है. यानी 13 साल से ऊपर के दर्शक इसे परिवार सहित देख सकेंगे. सुपर्ण एस वर्मा के निर्देशन में बनी यह फिल्म 7 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है. जंगली पिक्चर्स के बैनर तले बनी 'हक' को इंसोम्निया फिल्म्स और बवेजा स्टूडियोज़ ने भी प्रोड्यूस किया है. फिल्म को न केवल भारत में बल्कि यूएई, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और यूके के सेंसर बोर्ड से भी क्लीन चिट मिल चुकी है. भारत में जहां इसे यूए 13+ सर्टिफिकेट दिया गया है, वहीं यूएई में इसे पीजी15 और बाकी देशों में पीजी रेटिंग प्राप्त हुई है. फिल्म ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श ने सोशल मीडिया पर जानकारी साझा करते हुए बताया कि 28 अक्टूबर को सेंसर बोर्ड ने फिल्म को औपचारिक मंजूरी दी. यामी गौतम ने हाल ही में टाइम्स नाउ से बातचीत में बताया कि फिल्म में किसी भी देश में कोई कट नहीं लगाया गया है. उन्होंने कहा, "खास बात यह है कि यूएई जैसे संवेदनशील बाजार में भी फिल्म को बिना किसी आपत्ति के 15+ सर्टिफिकेट मिला है. अगर वहां किसी समुदाय को लेकर कोई विवाद नहीं है, तो भारत में भी चिंता की कोई बात नहीं होनी चाहिए." यामी के मुताबिक, 'हक' किसी धर्म या विचारधारा के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह समाज में एक स्वस्थ बहस की जरूरत को सामने लाती है. फिल्म की कहानी भारतीय संविधान के अनुच्छेद 44 (समान नागरिक संहिता) और दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 से प्रेरित है. कहानी एक ऐसी मां की है जो अपने और अपने बच्चों के अधिकारों के लिए अदालत में संघर्ष करती है. यह फिल्म धर्म, परिवार, पहचान और न्याय जैसे गंभीर सामाजिक मुद्दों को संवेदनशीलता से प्रस्तुत करती है. फिल्म में यामी गौतम और इमरान हाशमी के साथ शीबा चड्ढा, वार्तिका सिंह, दानिश हुसैन और असीम हट्टनगड़ी जैसे कलाकार भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नजर आएंगे. संवेदनशील विषय और दमदार कलाकारों के साथ 'हक' दर्शकों में पहले से ही उत्सुकता का विषय बन चुकी है.

'मस्ती 4' का धमाकेदार ट्रेलर रिलीज: रितेश-विवेक-आफताब के साथ अरशद वारसी और तुषार कपूर की एंट्री ने बढ़ाई मस्ती

एडल्ट कॉमेडी फ्रेंचाइजी 'मस्ती' का चौथा भाग 'मस्ती 4' का ट्रेलर आखिरकार रिलीज हो गया है. दर्शकों को एक बार फिर रितेश देशमुख, विवेक ओबेरॉय और आफताब शिवदसानी की मस्ती भरी तिकड़ी देखने को मिलेगी. पिछली फिल्मों की तरह इस बार भी फिल्म में भरपूर कॉमेडी, ड्रामा और एंटरटेनमेंट का तड़का देखने को मिलेगा. खास बात यह है कि इस बार फ्रेंचाइजी में दो नए सितारे, अरशद वारसी और तुषार कपूर, भी शामिल हुए हैं, जिनकी मौजूदगी फिल्म को नया ट्विस्ट और ताजगी देती नजर आ रही है. फिल्म के ट्रेलर में पुराने किरदारों की मस्ती और नए कलाकारों के कॉमिक अंदाज़ का बेहतरीन मेल देखने को मिलता है. कहानी के मोर्चे पर ट्रेलर में वही पुराना कॉमेडी जोन और कन्फ्यूजन का खेल नजर आता है, जिसके लिए 'मस्ती' सीरीज़ जानी जाती है. लेकिन अरशद और तुषार की एंट्री ने दर्शकों की उत्सुकता और भी बढ़ा दी है. फिल्म का निर्देशन 'एक दीवाने की दीवानियत' फेम मिलाप जावेरी ने किया है, जबकि प्रोडक्शन की जिम्मेदारी इंदर कुमार ने संभाली है. इंदर कुमार इससे पहले भी 'मस्ती' फ्रेंचाइजी से जुड़े रहे हैं, इसलिए दर्शकों को इस बार भी उसी मजेदार ट्रीट की उम्मीद है. 'मस्ती 4' 21 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी. उसी दिन फरहान अख्तर की वॉर ड्रामा '120 बहादुर' और विजय वर्मा व फातिमा सना शेख की रोमांटिक ड्रामा 'गुस्ताख दिल' भी रिलीज हो रही हैं. ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि बॉक्स ऑफिस पर 'मस्ती 4' इन फिल्मों के बीच कैसा प्रदर्शन करती है.

बॉक्स ऑफिस रिव्यू

माधुरी दीक्षित की लेट एंट्री ने बटोरी सुर्खियां, सोशल मीडिया पर मचा हंगामा

बॉलीवुड की 'धक-धक गर्ल' माधुरी दीक्षित आमतौर पर अपनी सादगी और प्रोफेशनल रवैये के लिए जानी जाती हैं. लेकिन इस बार अभिनेत्री को अपने ही प्रशंसकों की नाराज़गी का सामना करना पड़ रहा है. दरअसल, हाल ही में कनाडा में आयोजित उनके डांस टूर के एक इवेंट में देर से पहुंचने के कारण सोशल मीडिया पर हंगामा मच गया है. माधुरी दीक्षित के इस कनाडा टूर का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा था. रिपोर्ट्स के मुताबिक, शो शुरू होने से पहले ही हज़ारों प्रशंसक वेन्यू पर पहुंच गए थे, लेकिन अभिनेत्री के कार्यक्रम में पहुंचने में तीन घंटे की देरी हो गई. इंतजार से परेशान दर्शकों का गुस्सा धीरे-धीरे फूटने लगा और कई लोगों ने सोशल मीडिया पर आयोजकों और अभिनेत्री दोनों पर नाराजगी जताई. इवेंट का एक वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें माधुरी स्टेज पर परफॉर्म करती नजर आ रही हैं. वीडियो शेयर करने वाले यूजर ने कैप्शन में लिखा, ₹अगर मैं एक सलाह दे सकता हूं, तो वो ये कि माधुरी दीक्षित का शो अटेंड मत कीजिए. अपना पैसा बचाइए.₹ उन्होंने इस इवेंट को ₹अव्यवस्थित, समय की बर्बादी और खराब तरीके से आयोजित₹ बताया. माधुरी के साथ हुआ यह विवाद नया नहीं है. इसी साल की शुरुआत में गायिका नेहा कक्कड़ को भी मेलबर्न में हुए अपने एक कॉन्सर्ट में देर से पहुंचने पर जमकर ट्रोल किया गया था.

आचार्य प्रणव मिश्रा
मोबाइल नंबर
8210075897

मेष : व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है. लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी. बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा. कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी. लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी. रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है. धार्मिक स्थलों की यात्रा का योग. शुभांक-4-6-8

वृष : सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा. स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें. व्यापार में वृद्धि होगी. नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा. यात्रा का योग हैं. पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी. कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा. मेहमानों का आगमन होगा. शुभांक-5-7-9

मिथुन : प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे. मनोरथ सिद्धि का योग है. सम्मान मिलेगा. प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे. कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे. आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी. शुभांक-7-8-8

कर्क : शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे. व्यापार में स्थिति नरम रहेगी. संतोष रखने से सफलता मिलेगी. धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा. कारोबारी काम में बाधा बनी रहेगी. लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे. शुभांक-4-6-7

सिंह : शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी. जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा. व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी. कल का परिश्रम आज लाभ देगा. कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी. बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा. पर प्रपंच में ना पड़े अपने काम पर ध्यान दीजिए. शुभांक-4-5-6

कन्या : परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए. कल का परिश्रम आज लाभ देगा. लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं. खान-पान में सावधानी रखें. स्वास्थ्य लाभ में व्यय होगा. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे. शुभांक-7-8-9

तुला : लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे. धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा. कारोबारी काम में बाधा बनी रहेगी. स्वास्थ्य मध्यम रहेगा. व्यापार में स्थिति नरम रहेगी. शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे. संतोष रखने से सफलता मिलेगी. शुभांक-3-6-7

वृश्चिक : अपना कार्य दूसरों के सहयोग से बना लेगें. प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले सामाजिक कार्य संपन्न होंगे. आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी. ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा. कुछ कार्य भी सिद्घ होंगे. किसी अपने की सलाह उपयोगी सिद्घ होगी. शुभांक-3-5-7

धनु : सुख आरोग्य प्रभावित होगा. जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती है. अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें. वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा. किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव. शत्रुभय, ड्क्षचता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. शुभांक-3-6-7

मकर : स्वविवेक से कार्य करें. किसी से कहा सुनी न हो यह ध्यान रहें. कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा. धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी. श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी. कार्यक्षेत्र में तनाव पैदा होगा. माता पक्ष से विशेष लाभ होगा. पूजा-पाठ आदि धार्मिक कार्य संपन्न होंगे. शुभांक-2-5-7

कुंभ : प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा. कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी. कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा. अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा. धर्म-कर्म में रुचि जागृत होगी. मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी. भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा. शुभांक-4-7-8

मीन : श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी. अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे. परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा. लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी. समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है. बहुत सावधानी से आगे बढ़ें. पड़ोसियों की आप पर नजर है. शुभांक-5-7-8

बिना पानी के ऐसे करें सफाई

सर्दियों का मौसम आते ही काम करने में आफत आने लगती है। इस मौसम में घर का काम करना सबसे ज्यादा मुश्किल लगता है। पानी वाले काम और साफ-सफाई करना किसी चैलेंज से कम नहीं होता। ठंड में पानी को हाथ लगाना बहुत ही मुश्किल लगता है। इस कड़ाके की ठंड में पानी इतना ज्यादा ठंडा हो जाता है कि उसे हाथ लगाने में ही नानी याद आ जाती है। अगर आपको भी इस मौसम में घर की सफाई करने में दिक्कत आती है, तो आज हम आपको ऐसे आसान हैक्स के बारे में बताएंगे, जिनकी मदद से आप बिना पानी को हाथ लगाए ही घर की सफाई चुटकियों में कर सकते हैं।

डंडे वाले मोप से करें सफाई

अगर आप ठंडे पानी में हाथ डालकर पोछा नहीं लगाना चाहती हैं, तो डंडे वाले मोप से पूरे घर की सफाई करें। इससे आप बिना पानी को छूए ही घर को चकाचक कर सकती हैं। इस पानी में कोई भी होममेड क्लीनर मिलाकर सफाई करें। इससे फर्श के दाग भी साफ हो जाएंगे।

बेबी वाइप्स आएंगी काम

बेबी वाइप्स छोटी-मोटी गंदगी को साफ करने के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। आप इनका इस्तेमाल टेबल, स्विच बोर्ड या अन्य छोटी सतहों को साफ करने के लिए कर सकते हैं। इसकी मदद से आप पानी वाले कई काम बिना किसी परेशानी के कर सकती हैं।

वैक्यूम क्लीनर

जिन लोगों को पानी से सफाई करने में डर लगता है और झुककर पोछा लगाने में कमर दर्द की शिकायत होती है, उन्हें वैक्यूम क्लीनर से सफाई करनी चाहिए। ये घर की सफाई का सबसे आसान तरीका है। इससे आप मिनटों में घर के पर्दे, सोफा और फर्श साफ कर पाएंगी।

पानी गरम करें

अगर आपको मजबूरन पानी से सफाई करनी पड़ रही है, तो इस कंडीशन में आप गरम पानी में नींबू के इस्तेमाल किए हुए छिलकों को मिलाकर उनकी मदद से सफाई कर सकती हैं। इससे आपको काफी कफर्ट मिलेगा।

माइक्रोफाइबर कपड़ा

माइक्रोफाइबर कपड़े धूल और गंदगी को बेहद आसानी से सोख लेते हैं। इन्हें पानी में भिगोने की जरूरत नहीं होती। बस इन कपड़ों से फर्नीचर, टेबल, खिड़कियां और घर की कई चीजों को आप ड्राय क्लीन कर सकती हैं। ये न केवल धूल हटाते हैं बल्कि उससे हर चीज बहुत अच्छे से चमक जाती है।

क्या आप भी आईवीएफ ट्रीटमेंट करवाने की सोच रहे हैं....

आईवीएफ ट्रीटमेंट का सक्सेसफुल होना कई बातों पर डिपेंड करता है और इससे पहले कपल्स को कई बातों का ध्यान रखना भी जरूरी है। आईवीएफ ट्रीटमेंट में महिला के एग्स और पुरुष के स्पर्म को एक साथ मिलाकर लैब में फर्टिलाइज किया जाता है और इसके मैच्योर होने पर इसे महिला के गर्भाशय में ट्रांसफर कर दिया जाता है। अगर आप भी आईवीएफ ट्रीटमेंट करवाने की सोच रहे हैं जो इससे पहले यह जान लें कि आईवीएफ से पहले कपल्स को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

सबसे पहले प्रक्रिया को समझें

आईवीएफ ट्रीटमेंट शुरू करवाने से पहले आप इसकी प्रक्रिया को समझ लें वरना प्रोसेस के दौरान मन में बैठे सवालों से आपका मन बेचैन हो सकता है या आपको डर लग सकता है। आईवीएफ की एक साइकिल पूरी होने में दो हफ्ते लगते हैं। इस प्रोसेस के लिए आपके शरीर में हार्मोंस की मात्रा ठीक होनी चाहिए। दुखी होने पर, एंग्जायटी होने और चिंता में रहने पर आईवीएफ ट्रीटमेंट लेने का फैसला न लें।

निर्देशों का पालन करें

आईवीएफ ट्रीटमेंट लेने के दौरान खानपान, एक्सरसाइज, नींद और दवाओं को लेकर डॉक्टर द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करें। आईवीएफ ट्रीटमेंट के लिए जरूरी सभी दवाओं का समय पर सेवन करना जरूरी है। यह ट्रीटमेंट महंगी होती है इसलिए फाइनेंशियली तौर पर इसके लिए तैयार रहें। आप चाहें तो इंश्योरेंस पॉलिसी भी ले सकते हैं।

स्ट्रेस से बिलकुल दूर रहें

नैचुरली कंसीव न कर पाने पर तनाव होना स्वाभाविक है। मां न बन पाने पर महिलाओं को स्ट्रेस घेर लेता है जिसका असर उनकी सेहत के साथ-साथ फर्टिलिटी पर भी पड़ता है। आईवीएफ लेने से पहले और इसके दौरान, हर तरह के तनाव से दूर रहने की कोशिश करें। ऐसा सोचें कि खुश रहकर आप ट्रीटमेंट के सफल होने के चांसेस को बढ़ा सकती हैं और शिशु को भी स्वस्थ रख सकती हैं। तनाव से दूर रहने के लिए मेडिटेशन करें, गाने सुनें और अपनी पसंद का काम करें।

क्या न करें

ट्रीटमेंट को सफल बनाने के लिए धूम्रपान, शराब और ड्रग्स आदि न लें। इस तरह आप आईवीएफ ट्रीटमेंट के सक्सेस रेट को बढ़ा सकती हैं। महिलाओं को प्रेग्नेंसी में या ट्रीटमेंट के दौरान अपनी इच्छाओं को नहीं मारना है। फिट रहें, संतुलित आहार लें और जरूरी विटामिन लेना न भूलें। इसके अलावा डॉक्टर की सलाह को हल्के में न लें। डॉक्टर की मदद और सलाह के बिना आईवीएफ ट्रीटमेंट को सफल नहीं बनाया जा सकता है इसलिए इस पर ध्यान दें।

सही आईवीएफ सेंटर चुनें

आईवीएफ ट्रीटमेंट लेने में सबसे ज्यादा जरूरी है कि आप एक सही आईवीएफ सेंटर का चुनाव करें। किसी भी फर्टिलिटी सेंटर में जाने से पहले उसके बारे में अच्छे से पता कर लें। जान लें कि उस सेंटर में क्या सुविधाएं मिलती हैं और वहां पर ट्रीटमेंट का सक्सेस रेट क्या है। इसके अलावा सेंटर का स्टाफ भी अच्छा होना चाहिए ताकि आपको ट्रीटमेंट के दौरान कोई दिक्कत न हो।

सर्दियों में लगाएं मधुकामिनी का फूल

खुशबू से महक जाएगा घर

सर्दियों के मौसम में मधुकामिनी का पौधा आराम से लग जाता है। ये देखने में जितना खूबसूरत होता है, उतनी ही सुगंधित भी। इस पौधे को आप इंडोर और आउटडोर कहीं भी डेकोरेट कर सकते हैं। आइए जानें घर पर मधुकामिनी का पौधा लगाने का तरीका...

मधुकामिनी का पौधा देखने में जितना खूबसूरत लगता है, उतनी ही इसकी खुशबू जबरदस्त होती है। ऐसी मान्यताएं हैं कि ये पौधा स्वर्ग से धरती पर आया था। ये पौधा खिलने के बाद बहुत ही अच्छी महक फैलाता है। ये हर जगह को अपनी सुगंध से महका देता है। माधुकामिनी के फूल गुच्छे में खिलते हैं। इसे ऑरेंज जैस्मीन के नाम से भी जाना जाता है। ये पौधा बहुत ही अच्छे इंडोर और आउटडोर प्लांट्स की लिस्ट में आता है। इसे आप गार्डन से लेकर बालकनी तक कहीं भी सजा सकते हैं। ये पौधा आपके पूरे घर को शोभा बढ़ा सकता है। अगर आप भी पूरे साल अपने घर को इसकी खुशबू से महकाना चाहते हैं, तो सर्दियों का मौसम इसे प्लांट करने के लिए सबसे बेहतर है। इस फूल की खासियत ये है कि ये पूरे साल फूल देता है। आइए जानें मधुकामिनी का पौधा लगाने का सही तरीका...

नर्सरी से लाकर लगाएं पौधा

- अगर आप घर पर मधुकामिनी का पौधा लगाना चाहते हैं, तो इसके लिए आप नर्सरी से इसका छोटा सा पौधा लेकर लगा सकते हैं।
- इसके लिए एक अच्छे से गमले का चुनाव करें, जिसमें से पानी की निकासी सही से होती हो। इसमें मिट्टी और कोकोपीट बराबर मात्रा में मिलाकर भरें।
- अब तैयार गमले में सावधानी से नर्सरी से लाए पौधे को लगा लें। इसमें थोड़ा-थोड़ा पानी डालें। ध्यान रहे सर्दियों में इसमें ज्यादा पानी डालने की जरूरत नहीं होती।

बीज से उगाएं

- अगर आप खुद ही पूरा पौधा उगाना चाहते हैं, तो इसके लिए आप बीज की मदद ले सकते हैं। बीज की मदद से भी आप आसानी से पौधा उगा सकते हैं।
- इसके लिए नर्सरी से मधुकामिनी के पौधे के बीज मंगवाएं। बीजों को रातभर पानी में भिगोकर रखें। सुबह इसे टिशू पेपर में लपेट लें।
- अब एक गमले में रेतीली मिट्टी और गोबर खाद को मिक्स कर लें। इसमें थोड़ी सी कोकोपीट भी डाल लें।
- मिट्टी और गमला तैयार होते ही इसमें सूखे हुए बीजों को सावधानी से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर मिट्टी में दबा दें। रोजाना इसमें जरूरत के हिसाब से पानी और धूप दिखाएं।

इस तरह करें देखभाल

- इस पौधे को बहुत ज्यादा देखभाल की जरूरत होती है। इस पौधे को बहुत ज्यादा ठंडी हवाओं से बचाना जरूरी होता है।
- पौधे को धूप दिखाना बहुत जरूरी है, तो इसे रोजाना अच्छी धूप में रखें।
- इसे ज्यादा हवाएं चलने पर किसी साफ कपड़े से ढककर रखें।

सर्दियों में घर की सफाई के लिए अपनाएं ये सीक्रेट हैक्स, बिना ज्यादा मेहनत के घर लग सकता है खूबसूरत

हम सभी अपने घर को साफ-सुथरा रखना चाहते हैं। घर को साफ और सलीके से रखने के लिए, मेहनत भी करते हैं। फर्श साफ करना हो, घर की चीजों को करीने से लगाना हो, सामान को जगह पर रखना है या घर के हर कोने को सजाना, अपने आशियाने को खूबसूरत बनाने में हम कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते हैं। लेकिन, सर्दी आते ही आलस की वजह से घर की सफाई करना हमें किसी बड़े टास्क से कम नहीं लगता है। खासकर, पानी से सफाई करने में तो ठंड भी लगती है और बीमार होने के चांसेज भी रहते हैं। ऐसे में हम घर की सफाई के लिए आसान हैक्स ढूंढते हैं, जिनमें पानी में हाथ भी न डालना पड़े और ज्यादा मेहनत भी न लगे। यहां हम आपको कुछ ऐसे ही आसान हैक्स के बारे में बता रहे हैं, जिनकी मदद से सर्दियों में बिना ज्यादा मेहनत के आपका घर खूबसूरत लग सकता है।

सर्दियों में कम मेहनत में घर की सफाई के आसान हैक्स

- सर्दियों में सेंटर टेबल, डाइनिंग टेबल, रैक्स या अन्य हिस्सों की सफाई करते वक्त, हाथ में सिलिकॉन ग्लव्स पहन सकती हैं। क्लीनर को एक बॉटल में लेकर स्प्रे करें। अगर आप पानी से साफ कर रही हैं, तो इसे भी स्प्रे बोतल में डाल लें।
- हाथों में सिलिकॉन ग्लव्स पहनकर घर के इन हिस्सों को साफ करें। इससे आपके हाथ गीले नहीं होंगे और सफाई भी आसानी से हो जाएगी।
- फर्श को साफ करने के लिए, आप पोछा लगाने के बजाय वैक्यूम क्लीनर का इस्तेमाल कर सकती हैं।
- पानी से साफ-सफाई करना ठंड में ज्यादा मुश्किल होता है। ऐसे में पहले साफ कपड़े से डस्टिंग करें। जहां धूल ज्यादा लगे या जहां सूखे कपड़े से साफ न हो, वहीं गीले कपड़े का इस्तेमाल करें।
- पानी से होने वाली सफाई को हफ्ते में 1-2 बार दोपहर में करने की कोशिश करें। अगर आप वर्किंग हैं, तो छुट्टी वाले दिन ऐसा कर सकती हैं।
- सोफे और सिटिंग एरिया को अच्छे से साफ करें। इसे करने में वक्त और मेहनत कम लगती है लेकिन कोई भी मेहमान जब घर आता है, तो सबसे पहल इसी हिस्से को नोटिस करता है। इसलिए, इसे क्लीन करना बहुत जरूरी है।
- सोफे के कुशन, टेबल और सिटिंग एरिया के आस-पास ज्यादा सामान न रखें ताकि इसे साफ करने में दिक्कत न आए। इसे कॉर्नर और कम्फर्टिंग बनाने की कोशिश करें। इसके लिए आप हैवी कुशन्स, कालीन और कुछ ऐसे बड़े डेकोरेटिव आइटम्स रखें जिन्हें साफ करना भी आसान हो।
- सर्दियों में सफाई करने के लिए सिंथेटिक क्लीनर का उपयोग करें। इससे घर जल्दी और आसानी से साफ होता है।

वेडिंग फंक्शन्स में आपको स्टाइलिश दिखाएंगे ये टिप्स

वेडिंग में कई फंक्शन्स होते हैं, जिनके लिए अलग-अलग ड्रेसेस पहनने का मजा ही कुछ और है। इनमें हल्दी फंक्शन का क्रेज लड़कियों के बीच खूब देखा जाता है। हल्दी के दौरान पीले कपड़े पहनने से न सिर्फ फैशन के नजरिए से कॉम्बिनेशन काफी अच्छा लगता है बल्कि पीले रंग के साथ ज्यादातर ज्वैलरी भी अच्छी लगती है। आप भी अगर अपनी हल्दी पर स्टाइलिश दिखना चाहती है, तो ये टिप्स आपके काम आएंगे।

हल्दी सेरेमनी पीले रंग के कपड़े क्यों पहनें

हल्दी छुड़ाना काफी मुश्किल हो सकता है, इसलिए क्यों न इस दिन पीली ड्रेस ही पहनी जाए। पीले के अलग-अलग शेड्स में से आप चुन सकती हैं। मस्टर्ड येलो, ऐंबर येलो, लेमन येलो में से आप चुन सकती हैं। यदि आपको येलो नहीं पहनना हो, तो आप क्रीम या कोई और लाइट कलर पहन सकती हैं।

हल्दी सेरेमनी के लिए टिप्स

- अगर आपकी हल्दी सेरेमनी है, तो ऐसे में आप स्लीव्स कट स्प्लिट और प्लेन लहंगा-चोली पहनें, जिसके किनारे पर गोल्डन या सिल्वर कलर का बॉर्डर हो।
- हल्दी सेरेमनी पर पटियाला सलवार के साथ शार्ट कॉटन कुर्ती भी बेहद स्टाइलिश लगेगी। पटियाला सूट के साथ आप अपनी पसंदानुसार एम्ब्रॉयडरी जैकेट या फिर कोई लाइट दुपट्टा कैरी करना अच्छा ऑप्शन रहेगा।
- आपको अगर साड़ी पहननी है, तो पीले रंग की सिम्पल साड़ी पहनें या फिर लाल, नारंगी रंग की साड़ी भी काफी अच्छी लगेगी। इसके साथ मैचिंग पर्ल ज्वैलरी या फूलों की ज्वैलरी भी काफी टैडिंग लगेगी

हैवी दुपट्टा

हल्दी के मौके पर दुपट्टा आपके लिए आफत बन सकता है, इसलिए लाइट स्टोल या स्कॉर्फ तक ठीक है लेकिन हैवी दुपट्टा लेने से बचें।

स्टोन, हैवी ज्वैलरी

स्टोन या हैवी ज्वैलरी पर अगर हल्दी लग गई, तो आपके लिए खासी दिक्कत हो जाएगी।

लौरा आईसीसी वनडे रैंकिंग की नंबर वन बल्लेबाज

दुबई । महिला विश्व कप 2025 में उत्कृष्ट प्रदर्शन के बाद दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट आईसीसी वनडे बल्लेबाजों की रैंकिंग में नंबर वन बन गई हैं. वोल्वार्ड्ट ने भारत की स्मृति मंधाना से यह स्थान छीना. विश्व कप में वोल्वार्ड्ट ने 9 मैचों में 2 शतक और 3 अर्धशतक लगाकर कुल 571 रन बनाए. सेमीफाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ 169 और फाइनल में भारत के खिलाफ 101 रन की पारी खेली. मंधाना 434 रन के साथ दूसरे स्थान पर रहीं. आईसीसी रैंकिंग में भारत की जेमिमा रोड्रिग्स ने 9 स्थान की छलांग लगाते हुए दसवां स्थान हासिल किया. ऑस्ट्रेलिया की एश्ले गार्डनर तीसरे, इंग्लैंड की नेट सेवियर ब्रंट चौथे, ऑस्ट्रेलिया की बेथ मूनी पांचवें, एलिसा हिली छठे, न्यूजीलैंड की सोफी डिवाइन सातवें, ऑस्ट्रेलिया की एल्सी पेरी आठवें और वेस्टइंडीज की हिली मैथ्यू नौवें नंबर पर हैं.

विश्व कप विजेता खिलाड़ी शेफाली वर्मा को नॉर्थ जोन का कप्तान नियुक्त किया गया

सीनियर महिला इंटर-जोनल टी20 लिए टीमों की घोषणा

एजेंसियां । मुंबई

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की क्षेत्रीय चयन समितियों ने मंगलवार को सीनियर महिला इंटर-जोनल टी20 ट्रॉफी के लिए छह टीमों की घोषणा की. यह टूर्नामेंट 4 से 14 नवंबर तक नागालैंड में खेला जाएगा. इस प्रतियोगिता में नॉर्थ, साउथ, ईस्ट, वेस्ट, सेंट्रल और नॉर्थ-ईस्ट जोन की टीमें हिस्सा लेंगी. सबसे अधिक चर्चा में रहने वाली खबर यह है कि भारत की विश्व कप विजेता खिलाड़ी शेफाली वर्मा को उत्तर क्षेत्र (नॉर्थ जोन) की कप्तान नियुक्त किया गया है. 21 वर्षीय शेफाली हाल ही में महिला विश्व कप में शानदार प्रदर्शन कर 'प्लेयर ऑफ द मैच' बनी थीं. उन्होंने फाइनल में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 87 रनों की शानदार पारी खेली थी और दो विकेट भी झटके थे. शेफाली भारत की उस विश्व कप विजेता टीम की एकमात्र सदस्य हैं जो इस घरेलू टी20 टूर्नामेंट में हिस्सा ले रही हैं.

उत्तर क्षेत्र टीम में शेफाली के साथ श्वेता सहरावत (उपकप्तान), तानिया भाटिया (विकेटकीपर), मन्नत कश्यप, भारती रावल, दीया यादव, आयुषी सोनी, बावनदीप कौर, अमनदीप कौर, कोमलप्रीत कौर, अनन्या शर्मा, सोनी यादव, नज़मा और नंदिनी जैसी प्रतिभाशाली खिलाड़ी शामिल हैं. इस टीम में हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर की खिलाड़ी हैं.

दक्षिण क्षेत्र (साउथ जोन) की कप्तानी भारत की अंडर-19 विश्व कप विजेता कप्तान निकी प्रसाद करेंगी, जबकि सब्बिनेनी मेघना

उपकप्तान होंगी. इस टीम में आशा सोभना, वृंदा दिनेश, कमलिनी जी (विकेटकीपर), प्रणवी चंद्रा, सजना सजीवन, सहाना पवार, शबनम शकील और मोनिका पटेल जैसी अनुभवी खिलाड़ी शामिल हैं.

सेंट्रल जोन की कमान नुजहत परवीन के हाथों में होगी, जो टीम की विकेटकीपर भी हैं. निकिता सिंह उपकप्तान होंगी. टीम में सिमरन दिलबहादुर, नेहा बडवाइक, अनुष्का शर्मा, दिशा कसाट और मोना मेश्राम जैसी खिलाड़ी शामिल हैं.

ईस्ट जोन की कप्तान मीता पॉल होंगी, जबकि अश्वनी कुमारी उपकप्तान होंगी. इस टीम में बंगाल, झारखंड, असम, ओडिशा और त्रिपुरा की खिलाड़ी शामिल हैं, जिनमें सैका इशाक, रश्मी डे, प्रियंका लूथरा और जिन्तिमणि कलिता जैसे नाम प्रमुख हैं.

नॉर्थ-ईस्ट जोन की कप्तान देबस्मिता दत्ता होंगी और नबाम यापू उपकप्तान. इस टीम में मणिपुर, नागालैंड, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश की खिलाड़ी शामिल हैं, जिनमें किरणबाला हाओरुंगबाम, रितिसिया नोंगबेट, नजमीन खातून और प्रिमुला छेत्री जैसे नाम हैं.

वहीं, वेस्ट जोन की कप्तान अनुजा पाटिल होंगी और सयाली सतघरे उपकप्तान. इस टीम में महाराष्ट्र, मुंबई, गुजरात और सौराष्ट्र की खिलाड़ी जैसे किरण नवगिरे, तेजल हसब्निस, हुमैरा काजी और पूनम खेमनार शामिल हैं.

इस टूर्नामेंट का उद्देश्य घरेलू स्तर पर महिला क्रिकेट को मजबूती देना और युवा खिलाड़ियों को राष्ट्रीय टीम में प्रवेश के अवसर प्रदान करना है.

अंडर-19 वन-डे चैलेंजर ट्रॉफी

राहुल द्रविड़ के बेटे अन्वय टीम में

एजेंसियां । मुंबई

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की जूनियर चयन समिति ने मंगलवार को आगामी पुरुष अंडर-19 वन-डे चैलेंजर ट्रॉफी के लिए टीमों की घोषणा की. यह टूर्नामेंट 5 से 11 नवंबर तक हैदराबाद में खेला जाएगा. घोषित टीमों में सबसे अधिक ध्यान आकर्षित करने वाला नाम अन्वय द्रविड़ का है, जो भारत के पूर्व हेड कोच और महान बल्लेबाज राहुल द्रविड़ के छोटे बेटे हैं. अन्वय को टीम 'सी' में जगह मिली है, जिसकी कप्तानी हैदराबाद के एरॉन जॉर्ज करेंगे. अन्वय द्रविड़ हाल ही में सुर्खियों में रहे जब उन्होंने विनोद मांकड़ ट्रॉफी में कर्नाटक अंडर-19 टीम की कप्तानी करते हुए शानदार प्रदर्शन किया था. फाइनल मुकाबले में उन्होंने 93 गेंदों में नाबाद 82 रन बनाकर अपनी टीम को 236 रनों के लक्ष्य का सफल पीछा करवाया और जीत दिलाई. अंडर-19 चैलेंजर ट्रॉफी में चार टीमें — ए, बी, सी और डी — भाग ले रही हैं. हर टीम में देश के अलग-अलग क्रिकेट संघों से चुने गए उभरते खिलाड़ी शामिल किए गए हैं. इस टूर्नामेंट का उद्देश्य प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को राष्ट्रीय अंडर-19 स्तर पर प्रतिस्पर्धा का अनुभव दिलाना है. अन्वय का चयन यह दर्शाता है कि वे अपने पिता की तरह क्रिकेट की राह पर आगे बढ़ रहे हैं. सभी की नजरें अब उनके प्रदर्शन पर टिकी होंगी, जब वे हैदराबाद में होने वाले इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में उतरेंगे.

घुटने की चोट के कारण अश्विन बिग बैश लीग से बाहर हुए

एजेंसियां । नई दिल्ली

भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन आगामी बिग बैश लीग (बीबीएल) सीज़न से बाहर हो गए हैं. चेन्नई में टूर्नामेंट की तैयारी के दौरान उन्हें घुटने में चोट लग गई, जिसके बाद उनकी सर्जरी की गई. बिग बैश लीग का नया सीज़न 14 दिसंबर से शुरू होना है और अश्विन इस बार सिडनी थंडर के लिए खेलने वाले थे. अश्विन ने मंगलवार को सोशल मीडिया के माध्यम से इस बात की पुष्टि की और ऑस्ट्रेलियाई प्रशंसकों के लिए एक भावनात्मक संदेश साझा किया. उन्होंने लिखा, "मैं इस टीम का हिस्सा बनने और आपके सामने खेलने को लेकर बहुत उत्साहित था. फिलहाल मेरा पूरा ध्यान रिहैब और रिकवरी पर है ताकि मैं मजबूत वापसी कर सकूं. क्लब, स्टाफ और प्रशंसकों से जो स्नेह मिला, उसने मुझे घर जैसा महसूस कराया."

उन्होंने आगे कहा, "मैं बीबीएल के सभी मैच देखूंगा और हमारी पुरुष व महिला दोनों टीमों का समर्थन करूंगा. अगर रिहैब और यात्रा की स्थिति अनुकूल रही तथा डॉक्टरों की अनुमति मिली, तो सीज़न के अंत में टीम से मिलने की कोशिश करूंगा." 39 वर्षीय अश्विन ने पिछले साल दिसंबर में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट और इस साल अगस्त में आईपीएल से संन्यास लिया था. बीबीएल में यह उनका पहला सीज़न होने वाला था. उनकी अनुपस्थिति से सिडनी थंडर को बड़ा झटका लगा है, क्योंकि टीम उनके अनुभव और स्पिन कौशल पर निर्भर थी. फिलहाल अश्विन का लक्ष्य पूरी तरह से स्वस्थ होकर मैदान पर वापसी करना है.

आईसीसी की टीम ऑफ द टूर्नामेंट में तीन भारतीय खिलाड़ी

महिला वनडे विश्व कप 2025 की 'टीम ऑफ द टूर्नामेंट' घोषित

एजेंसियां । नई दिल्ली

आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 की 'टीम ऑफ द टूर्नामेंट' की घोषणा कर दी गई है. दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट को टीम की कप्तान बनाया गया है. इस 12 सदस्यीय टीम में भारत की तीन स्टार खिलाड़ी — स्मृति मंधाना, जेमिमा रॉड्रिग्स और दीप्ति शर्मा — को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए चुना गया है. इस टीम में दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, पाकिस्तान और भारत की खिलाड़ियों को जगह मिली है. दक्षिण अफ्रीका की ओर से कप्तान वोल्वार्ड्ट के साथ मारिजान काप और नादिन डी क्लर्क, जबकि ऑस्ट्रेलिया से एश्ले गार्डनर, एनेबल सदरलैंड और अलाना किंग का चयन किया गया है. इंग्लैंड की नेट सिवर-ब्रंट और सोफी एक्लेस्टोन, तथा पाकिस्तान की विकेटकीपर सिद्रा नवाज भी इस टीम में शामिल हैं.

भारतीय खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन : भारत की तीनों खिलाड़ियों ने टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन कर सबका दिल जीता. दीप्ति शर्मा ने 22 विकेट लेकर टूर्नामेंट की सबसे सफल गेंदबाज रहीं. फाइनल में उनके 5 विकेट भारत की खिताबी जीत में निर्णायक साबित हुए. स्मृति मंधाना ने पूरे टूर्नामेंट में 434 रन बनाए, जिसमें न्यूजीलैंड के खिलाफ शतक भी शामिल है. जेमिमा रॉड्रिग्स ने सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ नाबाद 127 रनों की यादगार पारी खेली और भारत को फाइनल में पहुंचाया.

अन्य देशों की स्टार परफॉर्मर: दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट 571 रनों के साथ टूर्नामेंट की सर्वाधिक रन स्कोरर रहीं, जिन्होंने सेमीफाइनल और फाइनल दोनों में शतक जमाए. उनकी साथी मारिजान काप ने 12 विकेट लेने के साथ दो अर्धशतक भी लगाए, जबकि नादिन डी क्लर्क ने भारत के खिलाफ 84 नाबाद रन बनाए और 9 विकेट भी हासिल किए. ऑस्ट्रेलिया की अलाना किंग ने इतिहास रचा, जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 7/18 का शानदार स्पेल डालकर महिला विश्व कप इतिहास का सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन दर्ज किया. एनेबल सदरलैंड ने 17 विकेट और 98* रन बनाए, जबकि एश्ले गार्डनर ने दो शतक और 7 विकेट अपने नाम किए. पाकिस्तान की सिद्रा नवाज ने विकेट के पीछे 3 कैच और 4 स्टंपिंग कर टीम में जगह बनाई.

आईसीसी महिला विश्व कप 2025 'टीम ऑफ द टूर्नामेंट': स्मृति मंधाना (भारत), लौरा वोल्वार्ड्ट (द. अफ्रीका)(कप्तान), जेमिमा रॉड्रिग्स (भारत), मारिजान काप (द. अफ्रीका),गार्डनर (ऑस्ट्रेलिया), दीप्ति शर्मा (भारत), एनेबल सदरलैंड (ऑस्ट्रेलिया), नादिन डी क्लर्क (द. अफ्रीका), सिद्रा नवाज (पाकिस्तान) (विकेटकीपर),अलाना (ऑस्ट्रेलिया), सोफी एक्लेस्टोन (इंग्लैंड); नेट सिवर-ब्रंट (इंग्लैंड) — 12वीं खिलाड़ी.

नेविल व हजार्ड प्रीमियर लीग हॉल ऑफ फेम में शामिल

एजेंसियां । लंदन

इंग्लैंड के पूर्व डिफेंडर गैरी नेविल और बेल्जियम के स्टार ईडन हज़ार्ड को मंगलवार को प्रीमियर लीग हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया. यह सम्मान उन खिलाड़ियों और प्रबंधकों को दिया जाता है जिन्होंने 1992 में लीग की स्थापना के बाद असाधारण योगदान दिया हो. इस वर्ष नेविल और हज़ार्ड का चयन 24 मौजूदा सदस्यों के मतदान से हुआ, जिनमें सर एलेक्स फर्ग्यूसन, पॉल स्कोल्स, डिडिएर ड्रोग्बा और डेनिस बर्गकैंप जैसे दिग्गज शामिल हैं.

गैरी नेविल, जिन्होंने पूरा करियर मैनचेस्टर यूनाइटेड के साथ बिताया, ने 1992 से 2011 तक 400 प्रीमियर लीग मैच खेले और टीम को 8 लीग खिताब दिलाने में अहम भूमिका निभाई. उन्होंने क्लब के स्वर्ण युग में नेतृत्व और निरंतरता का उदाहरण पेश किया. नेविल ने कहा, "उन दिग्गजों की सूची में शामिल होना जिनसे मैं प्रेरित रहा, मेरे लिए गर्व की बात है." वहीं, ईडन हज़ार्ड ने 2012 से 2019 तक चेल्सी के लिए 245 मैचों में 85 गोल और 54 असिस्ट किए. उन्होंने 2014/15 और 2016/17 में टीम को लीग खिताब जिताया और 2015 में प्रीमियर लीग प्लेयर ऑफ द सीज़न चुने गए. हज़ार्ड ने कहा, "प्रीमियर लीग हॉल ऑफ फेम में शामिल होना एक सपना सच होने जैसा है."

दोनों को 4 नवंबर 2025 को आयोजित समारोह में औपचारिक रूप से सम्मानित किया जाएगा. प्रत्येक खिलाड़ी को स्मृति पदक और 10,000 (लगभग 10 लाख) की राशि उनके चुने हुए चैरिटी संगठन को दान के रूप में दी जाएगी.

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर क्लार्क ने स्किन कैंसर से अपनी लड़ाई का किया खुलासा

एजेंसियां । नई दिल्ली

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर माइकल क्लार्क ने स्किन कैंसर से अपनी चल रही लड़ाई के बारे में खुलकर बात की है. उन्होंने बताया कि पिछले कुछ वर्षों में उनके चेहरे और शरीर के अन्य हिस्सों से कई बार मेलेनोमा (एक तरह का गंभीर स्किन कैंसर) और अन्य तरह के कैंसर निकाले जा चुके हैं. क्लार्क को पहली बार 2006 में स्किन कैंसर का पता चला था. उन्होंने 'द काइल एंड जैकी ओ शो' में अपनी हालत पर खुलासा करते हुए बताया कि उनके चेहरे से कई बार कैंसरस सेल्स को काटकर निकाला गया है. उन्होंने कहा, लगभग चार हफ्ते पहले मेरी नाक से एक चीज निकाली गई थी, और मैं हर छह महीने में अपने डर्मेटोलॉजिस्ट से मिलता हूं. सनस्पॉट को मैं फ्रीज करवा लेता हूं. आमतौर पर, अगर वे बेसल सेल होते हैं, तो मैं उन्हें कटवाकर निकालवा देता हूं... मुझे लगता है कि मेरे चेहरे से सात चीजें काटकर निकाली गई हैं.

इस अगस्त की शुरुआत में, वर्ल्ड कप जीतने वाले पूर्व कप्तान ने स्किन कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इंस्टाग्राम पर एक फोटो शेयर की थी. क्लार्क ने 2019 में भी अपने चेहरे से तीन नॉन-मेलानोमा हटवाए थे. सर्जरी के बाद उन्होंने लिखा,

स्किन कैंसर असली है! खासकर ऑस्ट्रेलिया में. आज मेरी नाक से एक और चीज काटकर निकाली गई. अपनी स्किन की जांच करवाने के लिए एक फ्रेंडली रिमाइंडर. रोकथाम इलाज से बेहतर है, लेकिन मेरे मामले में, रेगुलर चेक-अप और जल्दी पता चलना जरूरी है. मैं बहुत शुक्रगुजार हूं कि डॉ. बिश सोलिमन ने इसे जल्दी पकड़ लिया. शो में बात करते हुए, क्लार्क ने अपने जोखिम का कारण क्रिकेटर के तौर पर लंबे समय तक धूप में रहना बताया. उन्होंने कहा,

सोचिए भारत में पूरे दिन फील्डिंग करना, आठ घंटे धूप में रहना. बहुत से लोग बैगी ग्रीन कैप पहनते हैं, इसलिए आप अपने कान या चेहरे को प्रोटेक्ट नहीं कर रहे होते हैं. छोटी आस्तीन वाली शर्ट पहनने की वजह से आपकी बाहें और हाथों के ऊपरी हिस्से खुला रहता है.

क्लार्क उन कई जाने-माने क्रिकेटरों में शामिल हैं, जैसे रिची बेनोड, सैम बिलिंग्स, एंडी फ्लावर और लॉरेन चीटल, जिन्होंने स्किन कैंसर से लड़ाई लड़ी है.

माइकल क्लार्क अपने समय के सबसे शानदार बल्लेबाजों में से एक माने जाते हैं और वह ऑस्ट्रेलिया की बेहतरीन व्हाइट-बॉल टीम के अहम सदस्य रहे हैं. उनका खुलासा स्किन कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने और नियमित जांच की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित करता है.

इंग्लैंड के अनुभवी स्पिनर जैक लीच ने समरसेट के साथ करार बढ़ाया, ईसीबी सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट से हुए बाहर

एजेंसियां । लंदन

इंग्लैंड के अनुभवी स्पिनर जैक लीच ने अपने काउंटी क्लब समरसेट के साथ नया अनुबंध कर लिया है. यह फैसला उन्होंने उस समय लिया जब उन्होंने खुलासा किया कि इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने उन्हें अपने सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट से रिलीज़ कर दिया है. लीच 2021-22 सीजन से ईसीबी के सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट का हिस्सा थे और अब वे केवल समरसेट की ओर से खेलते रहेंगे. क्लब ने सोमवार को घोषणा की कि लीच ने अपना करार दो साल बढ़ाकर 2028 तक कर लिया है. लीच ने अब तक इंग्लैंड के लिए 39 टेस्ट मैच खेले हैं और पिछला अंतरराष्ट्रीय मैच उन्होंने पिछले साल पाकिस्तान दौरे पर खेला था. इस काउंटी सीजन में उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए 50 विकेट झटके और वे ऐसा करने वाले एकमात्र स्पिनर रहे. इसके बावजूद इंग्लैंड चयनकर्ताओं ने आगामी सत्र के लिए उन्हें टीम में शामिल नहीं किया और उनकी जगह विल जैक्स को बैकअप स्पिनर चुना गया है.

बीबीसी से बातचीत में लीच ने बताया कि ईसीबी के मैनेजिंग डायरेक्टर रॉब की ने उन्हें सूचित किया कि उनका अनुबंध नवीनीकृत नहीं किया जाएगा. लीच ने कहा, "मेरा कॉन्ट्रैक्ट खत्म हो गया था और रॉब की ने बताया कि मुझे एशेज़ स्क्वॉड में भी जगह नहीं मिलेगी. यह मेरे लिए काफी निराशाजनक था क्योंकि मेरा लक्ष्य टीम में वापसी करना था. अब मैं खुद को बेहतर बनाकर दोबारा मौका हासिल करने की कोशिश करूंगा."

इंग्लैंड के मुख्य स्पिनर शोएब बशीर के समरसेट छोड़ने की संभावना जताई जा रही है, क्योंकि उन्होंने इस सीजन क्लब के लिए किसी भी प्रारूप में भाग नहीं लिया. माना जा रहा है कि उन्हें ईसीबी की ओर से नया सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट मिलेगा.

पाक के खिलाफ वनडे सीरीज से बाहर हुए ब्रेविस, दक्षिण अफ्रीका को झटका

एजेंसियां । फैसलाबाद

पाकिस्तान के खिलाफ मंगलवार से शुरू हुई तीन वनडे मैचों की सीरीज से पहले दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम को बड़ा झटका लगा है. टीम के विस्फोटक युवा बल्लेबाज डेवाल्ड ब्रेविस कंधे की चोट के कारण पूरी वनडे सीरीज से बाहर हो गए हैं. क्रिकेट साउथ अफ्रीका ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर इस बात की पुष्टि की. बोर्ड ने बयान में कहा,

"डेवाल्ड ब्रेविस कंधे की मांसपेशियों में हल्की खिंचाव के कारण पाकिस्तान के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज से बाहर हो गए हैं. उन्हें शनिवार को लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में तीसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले के दौरान कंधे में चोट लगी थी." बोर्ड ने आगे कहा कि ब्रेविस अब पाकिस्तान में ही प्रोटियाज मेडिकल टीम के साथ रहेंगे और भारत के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज की तैयारी के लिए रिहैबिलिटेशन प्रक्रिया से गुजरेंगे. वनडे सीरीज के लिए उनके स्थान पर रिप्लेसमेंट खिलाड़ी का ऐलान जल्द किया जाएगा.

फैसलाबाद में शुरू हो रही वनडे सीरीज: पाकिस्तान और दक्षिण अफ्रीका के बीच तीन वनडे मैचों की यह सीरीज मंगलवार से फैसलाबाद के इकबाल स्टेडियम में शुरू हो रही है. दोनों टीमों ने इससे पहले तीन टी20 मैचों की सीरीज खेली थी, जिसमें दक्षिण अफ्रीका ने 2-1 से जीत दर्ज की थी.

ब्रेविस का अब तक का करियर: सिर्फ 21 वर्षीय डेवाल्ड ब्रेविस, जिन्हें 'बेबी एबी' के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिण अफ्रीका के सबसे प्रतिभाशाली युवा क्रिकेटरों में से एक हैं. उन्होंने अपने आक्रामक खेल और 360-डिग्री शॉट्स की क्षमता से हर किसी को प्रभावित किया है. उन्हें तीनों फॉर्मेट में मौका मिल चुका है और उन्हें दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट का भविष्य माना जा रहा है. ब्रेविस ने अब तक 6 वनडे मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 110 रन बनाए हैं. उनका स्ट्राइक रेट 159.42 और औसत 22.00 रहा है. वनडे में उनका सर्वोच्च स्कोर 49 रन है. हालांकि ये आंकड़े उनके टैलेंट को पूरी तरह नहीं दर्शाते. टेस्ट फॉर्मेट में उन्होंने 4 मैचों की 6 पारियों में 138 रन बनाए हैं, जिसमें 2 अर्धशतक शामिल हैं. वहीं टी20 अंतरराष्ट्रीय में उनका प्रदर्शन काफी प्रभावशाली रहा है — 15 मैचों में 400 रन, जिसमें 1 शतक और 1 अर्धशतक शामिल हैं. ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उन्होंने नाबाद 125 रन की पारी खेलकर अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी की झलक दिखाई थी.

भारत सीरीज पर ध्यान केंद्रित करेंगे ब्रेविस: ब्रेविस के चोटिल होने से दक्षिण अफ्रीका को पाकिस्तान दौरे पर जरूर नुकसान हुआ है, लेकिन टीम प्रबंधन और फैंस उम्मीद कर रहे हैं कि वे जल्द फिट होकर भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज में वापसी करेंगे. उनका फिट रहना दक्षिण अफ्रीका के लिए बेहद अहम होगा, क्योंकि टीम आने वाले महीनों में व्यस्त अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम के दौर से गुजरेगी.

क्रिकेट | राइजिंग स्टार्स एशिया कप के लिए भारत 'ए' टीम की घोषणा

बल्लेबाज जितेश शर्मा करेंगे भारत 'ए' की कप्तानी

एजेंसियां । मुंबई

भारतीय सीनियर पुरुष चयन समिति ने एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के राइजिंग स्टार्स एशिया कप के लिए भारत 'ए' टीम की घोषणा कर दी है. यह बहुप्रतीक्षित टूर्नामेंट कतर के दोहा स्थित वेस्ट एंड इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में 14 से 23 नवंबर तक खेला जाएगा. इस टूर्नामेंट में कुल आठ टीमें भाग लेंगी जिन्हें दो समूहों में विभाजित किया गया है. ग्रुप ए में अफगानिस्तान, बांग्लादेश, हांगकांग और श्रीलंका शामिल हैं, जबकि ग्रुप बी में भारत 'ए', ओमान, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और पाकिस्तान 'ए' को रखा गया है. इस प्रतियोगिता का उद्देश्य एशिया के उभरते खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर का अनुभव प्रदान करना है.

भारत 'ए' टीम की कमान अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज जितेश शर्मा के हाथों में सौंपी गई है. जितेश ने हाल के वर्षों में टी20 क्रिकेट में अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी और तेज विकेटकीपिंग से खास पहचान बनाई है. पंजाब के ऑलराउंडर नमन धीर टीम के उपकप्तान होंगे.

टीम में कई प्रतिभाशाली युवा खिलाड़ी शामिल किए गए हैं. इनमें सबसे बड़ा आकर्षण 14 वर्षीय बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी हैं, जिन्हें पहली बार भारत 'ए' टीम में चुना गया है. वैभव ने हाल ही में ऑस्ट्रेलिया में शानदार प्रदर्शन करते हुए इयान हीली ओवल में खेले गए यूथ टेस्ट मैच में मात्र 78 गेंदों में शतक लगाकर इतिहास का चौथा सबसे तेज़ यूथ टेस्ट शतक जड़ा था. इसके अलावा, उन्होंने यूथ वनडे क्रिकेट में सबसे ज्यादा करियर

छक्कों का नया रिकॉर्ड भी बनाया है. टीम में आईपीएल 2025 के ब्रेकआउट स्टार प्रियांश आर्य को भी शामिल किया गया है. प्रियांश ने केवल 24 वर्ष की आयु में पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) के लिए पदार्पण करते हुए अपनी शानदार स्ट्राइक रेट और आक्रामक अंदाज से सभी का ध्यान खींचा था. उनके चयन से टीम को मध्यक्रम में मजबूती मिलने की उम्मीद है.

भारत 'ए' टीम में बल्लेबाजी, ऑलराउंडर और गेंदबाजी विभाग में बेहतरीन संतुलन दिख रहा है. टीम में नेहल वढेरा, सूर्यांश शेडगे, रमनदीप सिंह, हर्ष दुबे, आशुतोष शर्मा, यश ठाकुर, गुरजापनीत सिंह, विजय कुमार वैश्य, युद्धवीर सिंह चरक, अभिषेक पोरेल (विकेटकीपर) और सुयश शर्मा जैसे खिलाड़ी शामिल हैं.

भारत 'ए' की पूरी टीम इस प्रकार है जितेश शर्मा (कप्तान और विकेटकीपर), नमन धीर (उपकप्तान), प्रियांश आर्य, वैभव सूर्यवंशी, नेहल वढेरा, सूर्यांश शेडगे, रमनदीप सिंह, हर्ष दुबे, आशुतोष शर्मा, यश ठाकुर, गुरजापनीत सिंह, विजय कुमार वैश्य, युद्धवीर सिंह चरक, अभिषेक पोरेल (विकेटकीपर) और सुयश शर्मा.

स्टैंड-बाय खिलाड़ी: गुरनूर सिंह बराड़, कुमार कुशाग्र, तनुश कोटियन, समीर रिज़वी और शेख रशीद.

सीफर्ट उंगली में फ्रैक्चर के कारण वेस्टइंडीज टी20 सीरीज से बाहर

एजेंसियां । क्राइस्टचर्च

न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम को वेस्टइंडीज के खिलाफ आगामी टी20 इंटरनेशनल सीरीज से पहले बड़ा झटका लगा है. विकेटकीपर-बल्लेबाज टिम सीफर्ट उंगली में फ्रैक्चर के कारण पूरी सीरीज से बाहर हो गए हैं. उनकी जगह मिच हे को टीम में शामिल किया गया है. न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज के बीच पांच मैचों की टी20 इंटरनेशनल सीरीज बुधवार से ऑकलैंड के ईडन पार्क में शुरू होगी. न्यूजीलैंड क्रिकेट (एनजेडसी) ने एक बयान में बताया कि सीफर्ट को सोमवार को वेलिंगटन फायरबर्ड्स के खिलाफ नॉर्दर्न डिस्ट्रिक्ट्स की ओर से बल्लेबाजी करते समय उंगली में चोट लगी थी. वह रिटायर्ड हर्ट होकर मैदान से बाहर गए और एक्स-रे में उनकी दाहिनी तर्जनी उंगली में फ्रैक्चर पाया गया.

टीम के मुख्य कोच रॉब वाल्टर ने कहा, "हम सब टिम के लिए बेहद दुखी हैं. वह हमारी टी20 टीम के अहम खिलाड़ी हैं, जो टॉप ऑर्डर में पावरफुल बल्लेबाजी करते हैं और विकेटकीपिंग में भी अहम भूमिका निभाते हैं. हाल की सीरीज में उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया था, जिससे यह चोट और भी निराशाजनक हो गई है. हम उम्मीद करते हैं कि वह जल्द ठीक होकर मैदान पर लौटेंगे."

न्यूजीलैंड क्रिकेट ने बताया कि मिच हे सोमवार रात ही टीम से जुड़ गए हैं. हे ने पिछले साल नवंबर में दांबुला में श्रीलंका के खिलाफ अपना अंतरराष्ट्रीय डेब्यू किया था. अब तक वह न्यूजीलैंड के लिए 11 टी20 इंटरनेशनल मैच खेल चुके हैं और एक मैच में सबसे ज्यादा छह डिसमिसल्स का वर्ल्ड रिकॉर्ड उनके नाम है.

कोच वाल्टर ने कहा, "मिच हे टिम के लिए एक तैयार और सक्षम रिप्लेसमेंट हैं. उन्होंने अपने सीमित मौकों में दिखाया है कि वह एक टॉप-क्वालिटी विकेटकीपर-बल्लेबाज हैं और टीम को महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं. यह हमारे टी20 सेटअप की गहराई को दर्शाता है कि हमारे पास इतने मजबूत विकल्प मौजूद हैं."

न्यूज अपडेट

गया में 17 पेटी विदेशी शराब बरामद चुनावी माहौल में इलाके में हड़कंप

गया। गुरारू थाना क्षेत्र में गुरारू स्टेशन के पास पुलिस ने एक वाहन से 17 पेटी विदेशी शराब बरामद की है. यह वाहन हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) पार्टी के प्रचार में इस्तेमाल हो रहा था, जिस पर इमामगंज विधानसभा से हम पार्टी की प्रत्याशी दीपा मांझी का पोस्टर लगा हुआ था. स्थानीय ग्रामीणों ने संदिग्ध रूप से घूम रहे इस वाहन को रोका और जांच के दौरान शराब की पेटियां बरामद कीं. ग्रामीणों ने इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर साझा किया, जो तेजी से वायरल हो गया. वीडियो की सूचना मिलने पर गुरारू थाना पुलिस मौके पर पहुंची और वाहन को जब्त कर लिया. पुलिस ने बताया कि वाहन से कुल 17 पेटी विदेशी शराब मिली है. वाहन चालक को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है. साथ ही, चुनाव आचार संहिता उल्लंघन और अवैध शराब परिवहन के मामले में केस दर्ज करने की प्रक्रिया चल रही है. उधर, हम पार्टी ने अपने आधिकारिक बयान में कहा है कि उक्त वाहन का पार्टी से कोई संबंध नहीं है. पार्टी प्रवक्ता ने आरोप लगाया कि कुछ असामाजिक तत्व पार्टी की छवि धूमिल करने की साजिश कर रहे हैं.

पुलिस ने छापेमारी कर 60 लीटर महुआ शराब लदी बाइक जब्त की

नवादा। नवादा जिले के रजौली थाना क्षेत्र के केंदुआ गांव के खेल मैदान के समीप से मंगलवार को पुलिस ने छापेमारी कर 60 लीटर महुआ शराब जब्त किया है. इस दौरान धंधेबाज बाइक छोड़कर फरार हो गया. पुलिस ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर की गई छापेमारी में यह सफलता मिली है. पुलिस ने फरार धंधेबाज की पहचान रजौली थाने के भाईजी भित्ता गांव निवासी वासुदेव के पुत्र राकेश कुमार के रूप में की है. उत्पाद अधिनियम के तहत उसे नामजद अभियुक्त बनाते हुए प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है.थानाध्यक्ष राजेश कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी जिसके आलोक में छापेमारी की गई. छापेमारी के दौरान धंधेबाज शराब लदे बाइक छोड़कर फरार हो गया. तलाशी के दौरान 60 लीटर महुआ शराब जब्त की गई है. आगे की कार्रवाई की जा रही है. बिहार में शराबबंदी कानून का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है. इस मामले में भी पुलिस ने कड़ी कार्रवाई करते हुए अभियुक्त के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली है.

एसआई पर लगा मजदूर को पीटने का आरोप, तत्काल गिरफ्तारी की मांग की

समस्तीपुर। एक सब-इंस्पेक्टर पर मानवता को शर्मसार करने का आरोप लगा है. आरोप है कि उसने मनीष कुमार (27) नामक एक मजदूर को बेरहमी से पीटा. बताया जाता है कि नशे की हालत में एसआई की चौक पर मनीष से कहासुनी हो गई. इसके बाद, एसआई उसे जबरन घसीटकर पीटीसी टीचर ट्रेनिंग कॉलेज के हॉस्टल में ले गया. हॉस्टल के कमरे में लाठी और पिस्टल के बट से मनीष को पीटा. बर्बरता की हद तो तब पार हो गई जब उसे छात्रावास की तीसरी मंजिल से नीचे फेंक दिया गया. आक्रोशित ग्रामीणों ने कॉलेज परिसर में जमकर बवाल काटा, तोड़फोड़ की और आरोपी एसआई की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की. पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित किया है और मामले की उच्चस्तरीय जांच शुरू कर दी है.

योगी के रोड शो में जय श्रीराम व भारत माता की जय के नारों से गूंज उठी दरभंगा की धरती, कहा

अब देश आतंकवाद और तुष्टिकरण के युग से निकल चुका है

शुभम संदेश। दरभंगा

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और भाजपा के फायरब्रांड नेता योगी आदित्यनाथ ने दरभंगा में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) उम्मीदवारों के समर्थन में रोड-शो और विशाल जनसभा कर राजनीतिक माहौल को गरमा दिया. पूरा शहर भगवा रंग में रंगा दिखा, जहां जनसैलाब उमड़ पड़ा. लोहिया चौक से बाकरगंज तक सड़कों पर 'जय श्रीराम' और 'भारत माता की जय' के नारों से गूंज उठी दरभंगा की धरती. योगी आदित्यनाथ का काफिला जैसे ही लोहिया चौक पहुंचा, लोगों की भीड़ ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया. कार्यकर्ताओं ने फूल-मालाओं से उनका अभिवादन किया और सड़क किनारे खड़े हजारों समर्थकों ने झंडे-बैनर लहराकर "योगी-योगी" के नारे लगाए. शहर के प्रमुख मार्गों पर सुरक्षा के कड़े इंतज़ाम किए गए थे ताकि भीड़-नियंत्रण और यातायात सुचारु बना रहे.

अपने संबोधन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने केंद्र और बिहार की राजग सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास और सुरक्षा दोनों में आगे बढ़ा है. उन्होंने कहा, "अब देश आतंकवाद, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार के युग से निकल चुका है. मोदी जी ने देश को सुरक्षित, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में अग्रसर किया है." उन्होंने बिहार के विकास कार्यों का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व की सराहना की और कहा कि राजग की सरकार ने गरीबों के लिए जो योजनाएं चलाई हैं, उसका सीधा लाभ हर घर तक पहुंचा है. योगी ने अपने जोशीले अंदाज़ में विपक्षी गठबंधन पर जमकर हमला बोला. उन्होंने कहा कि कुछ दल सिर्फ परिवारवाद और जातिवाद की राजनीति करते हैं. बिना नाम लिए उन्होंने कांग्रेस और राजद पर तंज कसा, "जिन्होंने बिहार को लालटेन युग में रखा, अब वे विकास की बात करते हैं. पहले बिहार में अपराध और भ्रष्टाचार का बोलबाला था, अब सुशासन का दौर है." दरभंगा शहर में सुबह से ही भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह देखा गया. पूरे मार्ग पर युवाओं ने मोटरसाइकिल रैली निकाली. कई जगहों पर महिलाओं ने फूल बरसाकर योगी का स्वागत किया. मंचस्थ नेताओं में दरभंगा के सांसद डॉ गोपालजी ठाकुर, विधायक संजय सरावगी, भाजपा जिलाध्यक्ष चंद्रकांत झा, और अन्य स्थानीय नेता मौजूद रहे. योगी आदित्यनाथ के आगमन को देखते हुए प्रशासन ने पहले से व्यापक सुरक्षा प्रबंध किए थे. दरभंगा पुलिस ने पूरे मार्ग पर यातायात को डायवर्ट किया. रोड-शो के दौरान पुलिस बल, आरएएफ और स्थानीय प्रशासन की संयुक्त टीम तैनात रही. किसी अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली.

दरभंगा और आसपास के क्षेत्रों में योगी के इस दौरे को राजग के लिए ऊर्जा-संचार के रूप में देखा जा रहा है. केवटी, जाले, हायाघाट और दरभंगा शहरी क्षेत्रों में राजग उम्मीदवारों के लिए यह रोड-शो निर्णायक प्रभाव डाल सकता है. राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि "योगी का आक्रामक भाषण और संगठनात्मक प्रदर्शन राजग के वोटरों को मजबूती देने का काम करेगा." महागठबंधन (राजद-कांग्रेस) के स्थानीय नेताओं ने योगी आदित्यनाथ के भाषण को चुनावी नौटंकी करार देते हुए कहा कि "दरभंगा की जनता जानती है कि बिहार की समस्याएं झंडा और नारा नहीं, नीति और नीयत से सुलझेंगी. हालांकि विपक्षी बयानों के बावजूद योगी का रोड-शो दरभंगा में राजग समर्थकों के लिए एक मनोबलवर्धक आयोजन साबित हुआ. "यह चुनाव बिहार की अस्मिता और विकास का चुनाव है. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजग की सरकार को एक बार फिर भारी मतों से विजयी बनाइए." सभा के बाद योगी समस्तीपुर, लखीसराय में जनसभा को सम्बोधित करेंगे.

नालंदा के रहुई में सड़क हादसा, बच्ची की मौत

नालंदा। रहुई थाना क्षेत्र अंतर्गत भंडारी गांव के समीप सरमेरा–बिहटा मार्ग पर मंगलवार की सुबह ट्रक के टक्कर से बाइक सवार बच्ची की मौत हो गई. जबकि, बच्ची के पिता व भाई दुर्घटना में जख्मी हो गए. घटना से गुस्साए ग्रामीणों ने मुआवजा व चालक पर कार्रवाई की मांग करते हुए, सड़क जाम कर दिया. मृतका चंदुआरा गांव निवासी नीतीश कुमार की 10 साल की बेटी नित्या कुमारी है. जख्मी पिता और भाई ढोलू कुमार को इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया है. घटना के संबंध में परिवारवालों ने बताया कि नीतीश अपनी बेटी और बेटे को बाइक पर बिठाकर स्कूल पहुंचाने बिहारशरीफ जा रहे थे. उसी दौरान ट्रक, बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया. जिससे मौके पर बच्ची की मौत हो गई. मौत से गुस्साए परिजनों ने मुआवजा व कार्रवाई की मांग करते हुए सड़क जाम कर दिया. हंगामा की सूचना पाकर पहुंची पुलिस व जनप्रतिनिधियों ने समझा बुझाकर जाम हटाया. तब करी दो घंटे भर बाद मार्ग पर यातायात सुचारू हुआ. ग्रामीणों की मानें तो घना कोहरा के कारण हादसा हुआ है. थानाध्यक्ष ने बताया कि पोस्टमार्टम के बाद शव परिवार के हवाले कर दिया गया है. पुलिस द्वारा अग्रेतर कार्रवाई जारी है.

चनपटिया में रवि किशन ने भरी हुंकार, बोले

अब बिहार में जंगलराज नहीं, विकासराज चाहिए

बेतिया। बिहार विधानसभा चुनाव के मद्देनज़र चनपटिया विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी उमाकांत सिंह के समर्थन में सोमवार को भोजपुरी सुपरस्टार और गोरखपुर सांसद रवि किशन ने जोरदार जनसभा को संबोधित किया. बुनियादी विद्यालय मैदान में आयोजित इस सभा में केंद्रीय मंत्री कमलेश पासवान, लोकसभा सचेतक डॉ. संजय जयसवाल सहित कई भाजपा नेता मौजूद रहे.

मंच पर पहुंचते ही रवि किशन ने "हर हर महादेव" और "जय श्रीराम" के नारों से माहौल को जोश से भर दिया. अपने चिर-परिचित भोजपुरी अंदाज़ में उन्होंने कहा, "जिंदगी झंड बा ए विरोधी लोग, ए जंगलराज वाला लोग कौने बात के घमंड बा हो?" इसके बाद उन्होंने लोकप्रिय भोजपुरी गीत "ए गो मिर्ची, दू चार हो निमुआ लटकाल चोटी में" गाकर श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया. उन्होंने एक युवक को मंच पर बुलाकर साथ में नाचते हुए माहौल को और भी रोमांचक बना दिया. अपने भाषण में रवि किशन ने धर्म और संस्कृति की बात करते हुए कहा कि "औरंगज़ेब ने ब्राह्मणों का जनेऊ काटकर सनातन धर्म को रोकने की कोशिश की थी, लेकिन पांच सौ साल बाद अयोध्या में भगवान श्रीराम का मंदिर और बाबा विश्वनाथ का धाम बनकर सनातन की विजय हुई है." उन्होंने कहा, "हम कुछ भी सह लेंगे, पर सनातन पर वार बर्दाश्त नहीं करेंगे." भाजपा सांसद ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों की सराहना करते हुए कहा कि "मोदी के नेतृत्व में भारत की पहचान वैश्विक स्तर पर बढ़ी है और बिहार को भी उसी राह पर ले जाना है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन को लेकर महिला कार्यकर्ताओं ने बनाई रंगोली

भागलपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी छह नवंबर को भागलपुर हवाई अड्डे रक चुनावी जनसभा को संबोधित करेंगे. प्रधानमंत्री के आगमन को लेकर भागलपुर में एनडीए कार्यकर्ताओं और समर्थकों में खासा उत्साह देखा जा रहा है. इसी बीच भागलपुर के घंटाघर चौक पर महिला कार्यकर्ताओं ने प्रधानमंत्री मोदी के स्वागत में सुंदर रंगोली बनाकर अपनी खुशी जाहिर की. इस दौरान महिला कार्यकर्ताओं ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अनेक योजनाएं चलाई हैं. महिला कार्यकर्ताओं का कहना था कि जब प्रधानमंत्री मोदी अंग की धरती पर आ रहे हैं तो हमारा फर्ज बनता है कि हम उनका स्वागत पूरे सम्मान और उत्साह के साथ करें. उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश तेजी से विकास की राह पर अग्रसर है और इस बार भागलपुर की जनता एनडीए को भारी समर्थन देकर प्रधानमंत्री मोदी के हाथों को और मजबूत करेगी.

दो साइबर कैफे से 36 लाख से अधिक की राशि बरामद

अररिया। बिहार में अररिया जिले के फारबिसगंज में एक आवासीय होटल परिसर स्थित दो साइबर कैफे में अनुमंडल प्रशासन ने बीती रात करीबन दस बजे छापेमारी कर मनी ट्रांसफर के माध्यम से जमा 36 लाख रूपये से अधिक की राशि जब्त की. गुप्त सूचना पर फारबिसगंज एसडीएम सह निर्वाची पदाधिकारी रंजीत कुमार रंजन, एसडीपीओ मुकेश कुमार साहा, थानाध्यक्ष राघवेंद्र कुमार सिंह ने पुलिस बलों के साथ छापेमारी कर 36 लाख से अधिक की राशि जब्त की. अनुमंडल प्रशासन की ओर से लागू आदर्श आचार संहिता के आलोक में कार्रवाई की गई. अनुमंडल प्रशासन ने यह कार्रवाई जियो साइबर कैफे और कैलाश साइबर कैफे में की. जियो साइबर कैफे के प्रोपराइटर सुधीर चौधरी और प्रभाष कुमार हैं. जबकि कैलाश साइबर कैफे के प्रोपराइटर कैलाश कुमार हैं. जियो साइबर कैफे से अनुमंडल प्रशासन ने 18 लाख 55 हजार 610 रूपये और कैलाश साइबर कैफे से 18 लाख 17 हजार के करीब में रूपये जब्त किए गए. कहा जा रहा है बिहार में हो रहे चुनाव को लेकर मनी ट्रांसफर के माध्यम से इस राशि को राजनीतिक लाभ को लेकर मंगाया गया था,जिसको लेकर पुलिस जांच कर रही है.इस राशि की चुनाव में इस्तेमाल होने की संभावना जताई जा रही है.प्रशासन के द्वारा पैसे को जब्त कर लिया गया है और मामले की जानकारी आयकर विभाग को भी दी गई है. मामले को लेकर फारबिसगंज एसडीएम सह निर्वाची पदाधिकारी रंजीत कुमार रंजन ने बताया कि सूचना के आलोक में होटल ज्योति परिसर स्थित दो साइबर कैफे में छापेमारी की गई. जिसमें करीबन 35 लाख 20 हजार की राशि की बरामदगी की गई है. राशि को जब्त कर लिया गया है और मामले की जानकारी इनकम टैक्स डिपार्टमेंट को दे दी गई है.

मोकामा हत्याकांड सीआईडी ने तीन सदस्यीय विशेष जांच टीम गठित की

पटना। मोकामा में जन सुराज समर्थक दुलारचंद यादव की हत्या के बाद राजनीतिक हलचल तेज हो गई है. इस मामले में पुलिस ने जदयू प्रत्याशी और पूर्व विधायक अनंत सिंह को गिरफ्तार कर लिया है. फिलहाल वे 14 दिन की न्यायिक हिरासत में बेऊर जेल में बंद हैं. उधर, मामले की गंभीरता को देखते हुए सीआईडी ने तीन सदस्यीय विशेष जांच टीम गठित की है, जो सोमवार को घटनास्थल पहुंची. हालांकि, सूत्रों के मुताबिक टीम को बारिश के कारण शव का सटीक लोकेशन नहीं मिल पाया, जिससे जांच में बाधा आई है. नए ग्रामीण एसपी अपराजित लोहान ने पदभार संभालते ही मोकामा जाकर जांच की निगरानी शुरू कर दी है. वहीं, जेल प्रशासन ने अनंत सिंह की सुरक्षा बढ़ाते हुए उन्हें 'अति सुरक्षा' श्रेणी में रखा है. किसी को भी उनसे मिलने की अनुमति नहीं दी गई है.

कारोबार

डीजीसीए एयरलाइंस कंपनियों के साथ मासिक समीक्षा बैठकें करेगा

नयी दिल्ली। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) अगले तीन दिनों तक विभिन्न एयरलाइंस कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मासिक समीक्षा बैठकें आयोजित करेगा. आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि आज एयर इंडिया और इंडिगो के लिए समीक्षा बैठकें होंगी. बैठक में समय पर कार्य निष्पादन, उड़ान की समय-सीमाएं, ग्राहक शिकायतों का निवारण तथा एयरलाइनों को संचालन के दौरान आने वाली चुनौतियों सहित विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी. हाल के दिनों में विमानन कंपनियों को बम की झूठी धमकियों, विमानों में तकनीकी समस्याओं, उड़ानों के रद्द होने और देरी आदि समस्याओं का सामना करना पड़ा है.

इंडिगो के पूर्व सीओओ को स्पाइसजेट ने कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया

नयी दिल्ली। बजट एयरलाइंस कपनी स्पाइसजेट ने अनुभवी विमानन पेशेवर एवं इंडिगो के पूर्व मुख्य रणनीति एवं राजस्व अधिकारी संजय कुमार को कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया है. स्पाइसजेट ने जारी एक बयान में कहा कि रणनीतिक विकास, परिवर्तन और विस्तार योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए संजय कुमार को 3 नवंबर से कार्यकारी निदेशक नियुक्त किया गया है. कुमार कार्यकारी निदेशक के रूप में अपनी भूमिका में एयरलाइंस की रणनीतिक पहलों का नेतृत्व करेंगे. वह सीधे विमान कंपनी स्पाइसजेट के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक अजय सिंह के अधीन काम करेंगे. कंपनी ने बताया कि सोमवार को कार्यभार संभालने वाले कुमार सीधे स्पाइसजेट के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक अजय सिंह को रिपोर्ट करेंगे.

एडेलवाइस म्यूचुअल फंड की एयूएम 1.64 लाख करोड़ रुपये पार

मंथली एसआईपी आंकड़ा 513 करोड़ रुपये पहुंचा

एजेंसी। नयी दिल्ली

एडेलवाइस म्यूचुअल फंड ने वित्तीय क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है. फंड हाउस का कुल एसेट्स अंडर मैनेजमेंट अक्टूबर 2025 तक 1.64 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया, जो अक्टूबर 2022 में 91,000 करोड़ रुपये था. यह तीन साल में 80% से अधिक की शानदार वृद्धि को दर्शाता है और फंड हाउस की लगातार मजबूती और निवेशकों के बढ़ते विश्वास को उजागर करता है. एडेलवाइस एमएफ ने अपने मंथली एसआईपी आंकड़ों में भी शानदार प्रगति दिखाई है. अक्टूबर 2022 में 142 करोड़ रुपये थी, जो अक्टूबर 2025 में बढ़कर 513 करोड़ रुपये तक पहुंच गई. यह वृद्धि निवेशकों की लंबी अवधि की योजना और नियमित निवेश की प्रवृत्ति को दर्शाती है. फंड हाउस की एमडी और सीईओ राधिका गुप्ता ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर यह जानकारी साझा करते हुए निवेशकों और वितरण भागीदारों को धन्यवाद दिया. उन्होंने लिखा कि एसआईपी बुक में 500 करोड़ रुपये का मील का पत्थर पार करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है. उन्होंने यह भी बताया कि तीन साल की अवधि में फंड हाउस की इक्विटी और हाइब्रिड एयूएम लगभग चार गुना बढ़ गई है. अक्टूबर 2022 में यह 21,000 करोड़ रुपये थी, जो अक्टूबर 2025 में 84,000 करोड़ रुपये तक पहुंच गई.

निवेशकों की संख्या और फोलियो में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है. अक्टूबर 2022 में कुल निवेशक फोलियो 10.93 लाख था, जो अक्टूबर 2025 में बढ़कर 31.5 लाख हो गया. वहीं, एसआईपी फोलियो तीन साल में लगभग चार गुना बढ़कर 13.8 लाख हो गए, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 3.59 लाख थे. यह आंकड़े दर्शाते हैं कि निवेशक म्यूचुअल फंड के माध्यम से लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण को प्राथमिकता दे रहे हैं. एडेलवाइस एमएफ की इस प्रगति का श्रेय निवेशकों और वितरण नेटवर्क को दिया गया है, जिन्होंने लगातार फंड हाउस पर विश्वास बनाए रखा. राधिका गुप्ता ने कहा कि यह मील का पत्थर फंड हाउस की मजबूत रणनीति और निवेशकों के लगातार समर्थन का परिणाम है. तुलनात्मक दृष्टि से, एसीई म्यूचुअल फंड के 30 सितंबर तक के आंकड़े भी इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा को दर्शाते हैं. एसीई एमएफ का एयूएम 1.79 लाख करोड़ रुपये था और यह 67 स्कीमों का प्रबंधन करता है. इनमें 28 इक्विटी स्कीम, पांच हाइब्रिड स्कीम, 19 डेट फंड, तीन कमोडिटी-आधारित और 12 अन्य स्कीम शामिल हैं, जिनमें पैसिव फंड भी शामिल हैं. एडेलवाइस म्यूचुअल फंड की यह उपलब्धि न केवल फंड हाउस की प्रबंधन क्षमता को दर्शाती है, बल्कि भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग में निवेशकों के बढ़ते विश्वास और लंबी अवधि की निवेश प्रवृत्ति को भी प्रमाणित करती है. एसआईपी बुक में 500 करोड़ का मील का पत्थर पार करना और AUM में लगातार वृद्धि फंड हाउस के मजबूत प्रदर्शन और रणनीतिक दृष्टिकोण का संकेत है.

विदेशी पूंजी निकासी से शेयर बाजार लुढ़का

नयी दिल्ली। विदेशी पूंजी की लगातार निकासी और एशियाई व यूरोपीय बाजारों में कमजोरी के रुख के बीच मंगलवार को घरेलू शेयर बाजार में गिरावट दर्ज की गई. बीएसई सेंसेक्स 519.24 अंक या 0.62 प्रतिशत टूटकर 83,459.15 अंक पर बंद हुआ. कारोबार के दौरान सेंसेक्स 565.72 अंक की गिरावट के साथ 83,412.77 अंक तक लुढ़का. वहीं, एनएसई निफ्टी 165.70 अंक या 0.64 प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,597.65 अंक पर बंद हुआ. सेंसेक्स की कंपनियों में पावर ग्रिड, इटर्नल, टाटा मोटर्स, टाटा स्टील, मारुति और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स प्रमुख रूप से नुकसान में रहीं. दूसरी ओर, टाइटन, भारती एयरटेल, बजाज फाइनेंस, महिंद्रा एंड महिंद्रा और भारतीय स्टेट बैंक के शेयरों में बढ़त देखी गई. वैश्विक स्तर पर भी बाजारों में कमजोरी का माहौल रहा. एशियाई बाजारों में दक्षिण कोरिया का कोस्पी, जापान का निक्केई 225, चीन का शंघाई एसएसई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंग सेंग सूचकांक गिरावट के साथ बंद हुए. यूरोपीय बाजारों में भी नकारात्मक रुख देखने को मिला, जबकि अमेरिकी बाजार सोमवार को मामूली बढ़त के साथ बंद हुए. विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने सोमवार को 1,883.78 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 3,516.36 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे. वहीं, विदेशी बाजारों में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से रुपये को कुछ राहत मिली.

स्टील की कम कीमतें छोटे उत्पादकों के लिए चुनौती

नयी दिल्ली। स्टील सचिव संदीप पौंड्रिक ने स्टील समिट 2025 में कहा कि वर्तमान में स्टील की कम कीमतें छोटे उत्पादकों के लिए गंभीर चुनौती बन गई हैं. उन्होंने बताया कि कीमतों में गिरावट के कारण करीब 150 छोटे स्टील उत्पादकों ने उत्पादन बंद कर दिया है. पौंड्रिक ने कहा कि पांच साल पहले कीमतें जरूरत से अधिक थीं, जबकि अब ये जरूरत से कम स्तर पर हैं, जिससे बाजार में असंतुलन पैदा हो गया है. उन्होंने यह भी बताया कि यह समय ऐसा है जब सरकार अगले पांच से सात वर्षों में स्टील क्षेत्र में 100 मिलियन टन अतिरिक्त क्षमता बढ़ाने की योजना बना रही है. उन्होंने विश्व स्तर पर स्टील के अधिशेष उत्पादन और विशेषकर चीन में डंपिंग को भी समस्या बताया, जो केवल भारत ही नहीं बल्कि अन्य देशों के लिए भी चुनौती है. इस पर सरकार ने घरेलू स्टील उद्योग की सुरक्षा के लिए आयातित स्टील पर अस्थायी सुरक्षा शुल्क लगाने का कदम उठाया है.

इस्पात

एचडी कुमारस्वामी ने पीएलआई योजना के तीसरे चरण पीएलआई 1.2 को किया लॉन्च

कोटेड स्टील सहित 22 उत्पाद उप-श्रेणियां शामिल हैं

एजेंसी। नयी दिल्ली

सरकार ने विशेष इस्पात के लिए उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के तीसरे चरण पीएलआई 1.2 का शुभारंभ किया. केंद्रीय इस्पात एवं भारी उद्योग मंत्री एच. डी. कुमारस्वामी ने मंगलवार को इसको लॉन्च किया. इस पहल को आत्मनिर्भर भारत विजन के तहत भारत को वैश्विक इस्पात केंद्र बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है. इस्पात मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि केंद्रीय इस्पात एवं भारी उद्योग मंत्री एच. डी. कुमारस्वामी ने यहां विशिष्ट इस्पात के लिए पीएलआई योजना के तीसरे चरण का शुभारंभ किया. इस्पात मंत्रालय की पीएलआई योजना ने अब तक 43,874 करोड़ रुपये के निवेश, 30,760 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार और योजना में चिन्हित 14.3 मिलियन टन 'विशिष्ट इस्पात' के अनुमानित उत्पादन की प्रतिबद्धता हासिल की है.

मंत्रालय के मुताबिक सितंबर, 2025 तक इस योजना के पहले दो दौर में भाग लेने वाली कंपनियों ने 22,973 करोड़ रुपये का निवेश किया है और 13,284 रोजगार सृजित किए हैं. जुलाई 2021 में कैबिनेट के द्वारा अनुमोदित विशेष इस्पात के लिए पीएलआई योजना, भारत को इस्पात उत्पादन का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत एक महत्वपूर्ण पहल है. तीसरे दौर (पीएलआई 1.2) का उद्देश्य उभरते और उन्नत इस्पात उत्पादों, जैसे सुपर एलॉय, सीआरजीओ, स्टेनलेस स्टील लॉन्ग और फ्लैट उत्पाद, टाइटेनियम एलॉय और कोटेड स्टील में नए निवेश को आकर्षित करना है. इससे महत्वपूर्ण रोजगार सृजन, उच्च-स्तरीय इस्पात क्षमता का विस्तार और विशेष इस्पात के लिए वैश्विक मूल्य श्रृंखला में भारत को एक पसंदीदा आपूर्तिकर्ता के रूप में स्थापित करने की उम्मीद है.

इस्पात मंत्रालय ने कहा कि अबतक पीएलआई योजना ने 43,874 करोड़ रुपये का प्रतिबद्ध निवेश आकर्षित किया है, जिसमें से 22,973 करोड़ रुपये का निवेश पहले ही हो चुका है, जबकि पहले दो दौर के तहत 13,000 से अधिक नौकरियों का सृजन हुआ है. इस योजना में सुपर एलॉय, सीआरजीओ, एलॉय फोर्जिंग, स्टेनलेस स्टील (लंबा और सपाट), टाइटेनियम एलॉय और कोटेड स्टील सहित 22 उत्पाद उप-श्रेणियां शामिल हैं. इस योजना के तहत प्रोत्साहन की दरें 4 फीसदी से 15 फीसदी तक हैं, जो वित्त वर्ष 2025-26 से शुरू होने वाले पांच वर्षों के लिए लागू हैं. इनका वितरण वित्त वर्ष 2026-27 से शुरू होगा. वर्तमान रुझानों को बेहतर ढंग से दर्शाने के लिए मूल्य निर्धारण के आधार वर्ष को भी वित्त वर्ष 2024-25 तक अद्यतन किया गया है.

एसबीआई का दूसरी तिमाही में मुनाफा 10 प्रतिशत बढ़ कर 20160 करोड़ रुपये

नयी दिल्ली। देश एवं सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े ऋणदाता स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने (एसबीआई) ने चालू वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही के नतीजे का ऐलान कर दिया है. 30 सितंबर के समाप्त जुलाई-सितंबर तिमाही में बैंक का मुनाफा 10 फीसदी बढ़कर 20,160 करोड़ रुपये हो गया. बैंक ने पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में 18,331 करोड़ रुपये का लाभ कमाया था. स्टेट बैंक ने मंगलवार को जारी एक बयान में बताया कि चालू वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में उसकी कुल आय सालाना आधार पर 1,29,141 करोड़ रुपये से बढ़कर 1,34,979 करोड़ रुपये हो गई. इस अवधि में अर्जित ब्याज बढ़कर 1,19,654 करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में 1,13,871 करोड़ रुपये था. इसके साथ ही बैंक की परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ है.

श्रीजी ग्लोबल एफएमसीजी लिमिटेड का आईपीओ लॉन्च, 7 नवंबर तक लगाई जा सकती है बोली

नयी दिल्ली। श्रीजी ग्लोबल एफएमसीजी लिमिटेड का 85 करोड़ रुपये का आईपीओ आज सब्सक्रिप्शन के लिए लॉन्च कर दिया गया. इस आईपीओ में 7 नवंबर तक बोली लगाई जा सकती है. इश्यू की क्लोजिंग के बाद 10 नवंबर को शेयरों का अलॉटमेंट किया जाएगा, जबकि 11 नवंबर को अलॉटेड शेयर डीमैट अकाउंट में क्रेडिट कर दिए जाएंगे. कंपनी के शेयर 12 नवंबर को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट हो सकते हैं. इस आईपीओ में बोली लगाने के लिए 120 रुपये से लेकर 125 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,000 शेयर का है. श्रीजी ग्लोबल एफएमसीजी लिमिटेड के इस आईपीओ में रिटेल इनवेस्टर्स कम से कम 2 लॉट यानी 2,000 शेयरों के लिए बोली लगा सकते हैं, जिसके लिए उन्हें 2.50 लाख रुपये का निवेश करना होगा. इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले कुल 68 लाख नए शेयर जारी हो रहे हैं. आईपीओ खुलने से एक कारोबारी दिन पहले 3 नवंबर सोमवार को श्रीजी ग्लोबल एफएमसीजी लिमिटेड ने 5 एंकर इनवेस्टर्स से 14.53 करोड़ रुपये जुटाए. इन एंकर इनवेस्टर्स में क्राफ्ट इमर्जिंग मार्केट फंड सबसे बड़ा इनवेस्टर रहा. इसने कंपनी से 3.20 लाख शेयर खरीदे. इसके अलावा, बीकॉन स्टोन कैपिटल, चाणक्या अपॉर्च्यूनिटी फंड, इनक्यूब ग्लोबल अपॉर्च्यूनिटीज और सीटाडेल कैपिटल फंड जैसे नाम भी एंकर बुक में शामिल हुए हैं. इस आईपीओ में क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए 28.50 प्रतिशत हिस्सा रिजर्व किया गया है. इसके अलावा रिटेल इनवेस्टर्स के लिए 46.56 प्रतिशत हिस्सा, नॉन इंस्टीट्यूशनल इनवेस्टर्स (एनआईआई) के लिए 19.94 प्रतिशत हिस्सा और मार्केट मेकर्स के लिए 5 प्रतिशत हिस्सा रिजर्व है. इस इश्यू के लिए इंटरैक्टिव फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड को बुक रनिंग लीड मैनेजर बनाया गया है. वहीं, एमयूएफजी इनटाइम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को रजिस्ट्रार बनाया गया है.

न्यूज अपडेट

13000 करोड़ के ड्रग्स केस में ऋषभ बसोया को रेड कॉर्नर नोटिस जारी

नयी दिल्ली । दिल्ली के 13000 करोड़ रुपए के ड्रग्स मामले में ऋषभ बसोया के खिलाफ इंटरपोल से रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया गया है. ऋषभ इंटरनेशनल ड्रग तस्कर वीरेंद्र बसोया का बेटा है और दिल्ली के पिलनजी गांव का रहने वाला है. साल 2024 में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने 13000 करोड़ का ड्रग्स पकड़ा था. पुलिस का दावा था कि यह ड्रग्स विदेश में बैठे वीरेंद्र बसोया ने भेजा था. इसी सिंडिकेट से जुड़े जस्सी को पंजाब के अजनाला से गिरफ्तार किया गया था. जस्सी की एसयूवी से कुछ ड्रग्स बरामद हुए थे और वह गाड़ी ऋषभ की थी, जो उसने जस्सी को दी थी. इसके बाद से ऋषभ विदेश भाग गया था.

दिग्गज कंपनी एंग्लो अमेरिकन पर जाम्बिया में सीसा प्रदूषण का आरोप

नयी दिल्ली । खनन क्षेत्र की दिग्गज कंपनी एंग्लो अमेरिकन को जाम्बिया में कथित सीसा विषाक्तता के मामले में सामूहिक अपील का सामना करना पड़ रहा है. कंपनी के खिलाफ जाम्बिया में कथित रूप से दशकों तक सीसा (लीड) प्रदूषण मामले में दक्षिण अफ्रीका में सोमवार को एक अहम अपील की सुनवाई शुरू हुई. इस प्रदूषण से करीब 1.4 लाख लोग प्रभावित होने का आरोप है. महिलाओं और बच्चों द्वारा दायर सामूहिक अपील में दक्षिण अफ्रीका के सर्वोच्च अपील न्यायालय से निचली अदालत के उस फैसले को पलटने की मांग की गई है, जिसने एंग्लो अमेरिकन साउथ अफ्रीका के खिलाफ उनके मामले को खारिज कर दिया था. मुकदमे में आरोप है कि जाम्बिया के मध्य शहर काब्वे में स्थित एक खदान, जिसमें एंग्लो अमेरिकन साउथ अफ्रीका 1925 से 1974 तक शामिल थी.

विस्फोट की जांच के बाद हार्वर्ड मेडिकल स्कूल फिर से खुला

वाशिंगटन । अमेरिका के बोस्टन में हार्वर्ड मेडिकल स्कूल की एक इमारत फिर से खुल गई है, जबकि सप्ताहांत में हुए एक विस्फोट की ₹बेहद सक्रिय₹ जांच जारी है. अधिकारियों का कहना है कि यह विस्फोट जानबूझकर किया गया था. विश्वविद्यालय पुलिस के अनुसार, शनिवार सुबह एक अधिकारी ने फायर अलार्म बजाया और गोल्डनसन बिल्डिंग से दो लोगों को भागते हुए देखा. विस्फोट इमारत की चौथी मंजिल पर हुआ, जहां मेडिकल स्कूल के न्यूरोबायोलॉजी विभाग से जुड़ी प्रयोगशालाएं और कार्यालय हैं. बोस्टन अग्निशमन विभाग ने पाया कि विस्फोट जानबूझकर किया गया था और अधिकारियों को इमारत की तलाशी के दौरान कोई अतिरिक्त उपकरण नहीं मिले.

पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस में हड़ताल, अंतरराष्ट्रीय- घरेलू उड़ानें ठप

लाहौर । पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस में विमान इंजीनियरों की अचानक शुरू हुई अनौपचारिक हड़ताल से अंतरराष्ट्रीय और घरेलू दोनों तरह की उड़ानें बुरी तरह प्रभावित हुई हैं. यह हड़ताल सोमवार रात से शुरू हुई, जिसके बाद अब तक कम से कम आठ अंतरराष्ट्रीय उड़ानें और कई घरेलू उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं. एयरलाइंस ने अब अन्य कंपनियों से मदद मांगी है ताकि उनके विमान इंजीनियर अस्थायी रूप से सेवा दे सकें और उड़ानें फिर से शुरू की जा सकें. इंजीनियरों के सुरक्षा मंजूरी जारी करने से इनकार करने के कारण कराची, लाहौर और रावलपिंडी हवाई अड्डों पर सैकड़ों यात्री फंसे हुए हैं.

मध्य प्रदेश के बालाघाट के जंगलों में देर रात नक्सलियों से मुठभेड़

बालाघाट। मध्य प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में एक बार फिर गोलियों की गूंज सुनाई दी है. बालाघाट जिले के कटेझिरिया और पचामा के घने जंगलों में सोमवार देर रात से पुलिस और नक्सलियों के बीच जबरदस्त मुठभेड़ चल रही है. मंगलवार सुबह तक इस गोलीबारी ने इलाके में तनाव का माहौल पैदा कर दिया है. पुलिस और विशेष बलों के लगभग 800 जवान इस समय जंगलों में सर्च ऑपरेशन में जुटे हुए हैं. पूरा क्षेत्र सुरक्षा घेरे में है, ताकि नक्सली किसी भी संभावित जगह से निकल न सकें. पुलिस को रविवार देर शाम कटेझिरिया और पचामा के जंगलों में नक्सलियों की सक्रियता की सूचना मिली थी. इसके बाद सुरक्षा एजेंसियों ने रात में ऑपरेशन शुरू किया.

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कैंची धाम में बाबा नीब करौरी महाराज के दर्शन किए

नैनीताल। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मंगलवार को प्रदेश में स्थित विश्वप्रसिद्ध आध्यात्मिक स्थल कैंची धाम में बाबा नीब करौरी महाराज के दर्शन किए. मुर्मू ने यहां पूजा-अर्चना कर राष्ट्र के लिए सुख, शांति, समृद्धि व जनकल्याण की कामना की. द्रौपदी मुर्मु देश की पहली राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने कैंची धाम पहुंचकर बाबा नींब करौरी के दर्शन किये. मंदिर पहुंचने पर मंदिर प्रबंधन समिति के सदस्यों ने राष्ट्रपति का पुष्पगुच्छ भेंट का स्वागत व अभिनंदन किया. इस अवसर पर उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि) भी उपस्थित रहे.

नेपाल हिमस्खलन में लापता 15 पर्वतारोहियों में से पांच बचाए गए

काठमांडू। नेपाल के दोलखा जिले के यलुंग री में सोमवार को सुबह हिमस्खलन में लापता हुए 15 पर्वतारोहियों में से पांच लोगों को मंगलवार को हेलीकॉप्टर की मदद से बचा लिया गया है, जबकि सात अन्य अब भी लापता हैं. तीन पर्वतारोही के शव कल ही बरामद किये जा चुके हैं. दोलखा जिले के मुख्य जिल्ला अधिकारी नारायण प्रसाद रिजाल के अनुसार बचाए गए पर्वतारोहियों को यलूंग री के बेस कैंप से एयरलिफ्ट किया गया. तीन अन्य नेपाली गाइड हिमस्खलन से किसी तरह बच निकले, जो एक गांव में शरण लेकर सुरक्षित निकासी की प्रतीक्षा कर रहे हैं. हिमस्खलन सोमवार तड़के उस कैंपसाइट पर हुआ, जहां दो ट्रैवल कंपनियों से जुड़े 15 विदेशी पर्वतारोही डोल्मा खांग और यलूंग री पर्वत के अभियान के लिए डेरा डाले हुए थे. इस घटना में तीन लोगों की मौत हो गई है, जबकि लापता पर्वतारोहियों की स्थिति के बारे में अब तक कोई जानकारी नहीं मिल पाई है. जिला प्रहरी कार्यालय के डीएसपी ज्ञान कुमार महतो के अनुसार नेपाली सेना और अन्य सुरक्षा निकायों की संयुक्त टोली को घटनास्थल पर भेजा गया है, ताकि खोज एवं बचाव कार्यों में सहायता की जा सके.

विख्यात मुरली वादक दीपक शर्मा का पार्थिव शरीर गुवाहाटी पहुंचा

एजेंसी ।गुवाहाटी

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मुरली वादक दीपक शर्मा का पार्थिव शरीर मंगलवार सुबह चेन्नई से विशेष विमान द्वारा गुवाहाटी लाया गया. जटिल बीमारी से जूझ रहे दीपक शर्मा (57 वर्षीय) का 3 नवम्बर की सुबह चेन्नई के एक अस्पताल में इलाज के दौरान निधन हो गया था. गुवाहटी पहुंचने पर दीपक शर्मा का शव सबसे पहले अंबिकागिरी नगर स्थित निवास स्थान पर ले जाया गया, जहां परिवारजन और निकट संबंधियों ने धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुसार अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की. उनका पार्थिव शरीर दोपहर 2 बजे तक अंबिकागिरी नगर के सेउज संघ में आम लोगों के दर्शन के लिए रखा गया है. शाम में राजकीय सम्मान के साथ नवग्रह श्मशान में उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा.

ईरानी राष्ट्रपति बोले

रूस के सहयोग से आठ नए परमाणु संयंत्र बनाएंगे

एजेंसी ।नयी दिल्ली

ईरान के परमाणु ऊर्जा संगठन (एईओआई) प्रमुख मोहम्मद इस्लामी ने घोषणा की है कि तेहरान अपना स्वच्छ-सतत ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने के प्रयासों के तहत रूसी मदद से 8 नए परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण करेगा. इस बीच, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने शांतिपूर्ण परमाणु कार्यक्रम व हथियार विकसित न करने की प्रतिबद्धता दोहराई. यह बात उन्होंने ईरान के परमाणु ऊर्जा संगठन के दौरे पर कही. इस्लामी ने कहा, ईरान-रूस के बीच बुशहर में चार और उत्तरी व दक्षिणी तटरेखाओं पर चार अन्य परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के साझा निर्माण के लिए नया समझौता हुआ है. इसके सटीक स्थानों की घोषणा सरकार जल्द करेगी. ये संयंत्र स्थिर-स्वच्छ परमाणु ऊर्जा की आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे और ईरान को परमाणु ऊर्जा से 20,000 मेगावाट बिजली उत्पादन बढ़ाने में सक्षम बनाएंगे. इस्लामी ने कहा, ईरान के उत्तरी प्रांत गोलेस्तान के तट पर एक परमाणु ऊर्जा संयंत्र का निर्माण शुरू हो गया है. खुजेस्तान प्रांत में एक परमाणु ऊर्जा संयंत्र का निर्माण कार्य भी पूरा करने की योजना है, जिसका निर्माण 1979 की इस्लामी क्रांति से पहले शुरू हुआ था.

एटमी प्रतिष्ठान शुरू करेंगे : ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने कहा, बम बनाना इस क्षेत्र का एक छोटा, असंगत और अमानवीय हिस्सा है, जबकि बाकी आवश्यक मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करता है.

अमेरिका में शटडाउन से हवाई यात्रा ठप

एयर ट्रैफिक कंट्रोलर काम छोड़ रहे; उड़ानों में हो रही देरी

एजेंसी ।वाशिंगटन

अमेरिका में सरकारी शटडाउन के 34 दिन पूरे हो चुके हैं और इसका असर अब देश के हवाई यातायात पर गहराई से दिखने लगा है. एयर ट्रैफिक कंट्रोलर और टीएसए कर्मी बिना वेतन के काम कर रहे हैं, कई कर्मचारी काम पर नहीं लौट रहे, जिससे देशभर के प्रमुख हवाई अड्डों पर उड़ानों में भारी देरी हो रही है. एक रिपोर्ट के अनुसार, कंट्रोलर अब अतिरिक्त काम या दूसरी नौकरियां करने को मजबूर हैं ताकि घर का खर्च चला सकें. इस कारण हवाई अड्डों पर लंबी कतारें और यात्रियों में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ रही है.

हर दिन पहले से कम सुरक्षित हो रहा सिस्टम : नेशनल एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष निक डेनियल्स ने बताया कि लंबे शटडाउन से कर्मचारियों पर अत्यधिक दबाव बढ़ गया है. उन्होंने कहा हर गुजरते दिन के साथ हवाई प्रणाली पहले से कम सुरक्षित हो रही है. हमसे उम्मीद की जाती है कि हम 100% फोकस के साथ काम करें, लेकिन जब दिमाग में किराए और बिलों की चिंता हो, तो यह संभव नहीं.

परिवहन मंत्री बोले- सुरक्षा के लिए धीमी उड़ानें जरूरी

अमेरिकी परिवहन मंत्री सीन डफी ने बताया कि उड़ानों में देरी एक सुरक्षा उपाय है. उन्होंने कहा स्टाफ की कमी से सिस्टम में जोखिम बढ़ा है. अगर हालात असुरक्षित हुए तो हम पूरा एयरस्पेस बंद कर देंगे. फिलहाल हम देरी झेल रहे हैं, लेकिन सुरक्षा से समझौता नहीं करेंगे.

प्रमुख हवाई अड्डों पर हालात बिगड़े : शिकागो, डेनवर, ह्यूस्टन और नेवार्क जैसे बड़े एयरपोर्ट्स पर उड़ानों में व्यापक देरी हो रही है. ह्यूस्टन के बुश इंटरकांटिनेंटल एयरपोर्ट ने यात्रियों को चेतावनी दी है कि टीएसए जांच में तीन घंटे तक लग सकते हैं. के 2 सिक्योरिटी स्क्रीनिंग ग्रुप के उपाध्यक्ष कीथ जेफ्रीज ने बताया कि टीएसए कर्मचारियों की अनुपस्थिति लगातार बढ़ रही है क्योंकि कई कर्मी अब निजी जरूरतों को प्राथमिकता दे रहे हैं. वहीं, एंब्री-रिडल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर माइक मैककॉर्मिक ने कहा कंट्रोलर यह समझ रहे हैं कि अगर वे 100% फोकस में नहीं हैं, तो काम पर न जाना ही बेहतर है. यही फैसला फिलहाल सिस्टम को सुरक्षित रखे हुए है.

अमेरिकी अदालतों ने रोकी भारतीय मूल के व्यक्ति की देश निकाला प्रक्रिया

अमेरिकी अदालतों ने भारतीय मूल के उस व्यक्ति की देश निकाला प्रक्रिया पर रोक लगा दी है, जिसे एक हत्या के झूठे आरोप में 43 साल जेल में रहना पड़ा. 64 वर्षीय सुब्रमण्यम वेदम की हत्या की सजा को इसी साल अदालत ने रद्द कर दिया था. वेदम जब सिर्फ 9 महीने के थे, तब अपने माता-पिता के साथ कानूनी रूप से अमेरिका पहुंचे थे. उनके पिता पेनसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी में शिक्षक थे.

अदालत का फैसला : अमेरिकी इमिग्रेशन जज ने गुरुवार को आदेश दिया कि जब तक बोर्ड ऑफ इमिग्रेशन अपील्स उनका केस नहीं देखता, तब तक वेदम को निर्वासित नहीं किया जाएगा. उनके वकीलों ने पेनसिल्वेनिया की जिला अदालत से भी राहत पाई, जिससे मामला फिलहाल स्थगित हो गया है.

43 साल पुरानी त्रासदी : वेदम को 1980 में अपने दोस्त थॉमस किंसर की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया था. गवाहों और सबूतों के अभाव में भी उन्हें दो बार दोषी ठहराया गया. लेकिन अगस्त 2024 में अदालत ने नई बैलिस्टिक जांच रिपोर्ट के आधार पर उनकी सजा रद्द कर दी. 3 अक्तूबर को जेल से रिहाई के बाद, उन्हें सीधा इमिग्रेशन अधिकारियों ने हिरासत में ले लिया. फिलहाल वे लुइसियाना के एलेक्जेंड्रिया डिटेंशन सेंटर में रखे गए हैं, जो निर्वासन के लिए इस्तेमाल किया जाता है.

सलमान खान को कंज्यूमर कोर्ट का नोटिस, शिकायतकर्ता बोला-

5 के पाउच में केसर मुमकिन नहीं

एजेंसी ।मुंबई

कोटा उपभोक्ता संरक्षण न्यायालय ने बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान और राजश्री पान मसाला कंपनी को नोटिस भेजकर 27 नवंबर तक जवाब देने को कहा है. मामला पान मसाले के एक विज्ञापन से जुड़ा है जिसमें केसर युक्त होने का दावा किया गया है. कोर्ट ने यह कदम भ्रामक विज्ञापन की शिकायत पर उठाया है. यह शिकायत कोटा के वरिष्ठ भाजपा नेता और राजस्थान हाईकोर्ट के अधिवक्ता इंद्रमोहन सिंह हनी ने दायर की है.

उन्होंने कहा कि कंपनी पाउच में केसर होने का दावा कर जनता को गुमराह कर रही है. शिकायत में बताया गया कि असली केसर की कीमत करीब 4 लाख रुपये प्रति किलो होती है. ऐसे में पांच रुपये के पाउच में असली केसर डालना संभव नहीं है.

अभिनेता सलमान खान को नोटिस : वकील रिपुदमन सिंह ने कहा कि कंपनी और ब्रांड एंबेसडर सलमान खान दोनों जनता को भ्रमित कर रहे हैं. यह विज्ञापन युवाओं को पान मसाला और तंबाकू उत्पादों की ओर आकर्षित कर रहा है जिससे उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है. शिकायत में कहा गया कि इस तरह के उत्पादों के विज्ञापन से कैंसर जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ता है. परिवादी ने यह भी मांग की है कि स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले उत्पादों का प्रचार तुरंत रोका जाए.

गाजा शांति योजना

इजरायली विदेश मंत्री गिदोन के साथ वार्ता में जयशंकर ने समर्थन किया

नई दिल्ली। इजराइल के विदेश मंत्री गिदोन सा'आर वर्तमान में भारत यात्रा पर हैं. मंगलवार को विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता हुई. दोनों नेताओं ने आतंकवाद को साझा चुनौती के रूप में स्वीकारा. विदेश मंत्री ने गाजा शांति योजना के प्रति भारत के समर्थन को दोहराया और अगले साल फरवरी में भारत में होने वाले एआई इम्पैक्ट समिट का जिक्र करते हुए कहा कि इजराइल की उपस्थिति का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं. इजराइल के विदेश मंत्री की यह पहली भारत यात्रा है. विदेश मंत्री ने उनके साथ वार्ता में अपने शुरुआती वक्तव्य में कहा कि भारत और इजराइल के बीच एक रणनीतिक साझेदारी है और हमने उच्च स्तर के विश्वास और विश्वसनीयता के साथ एक रिश्ता बनाया है. उन्होंने कहा कि दोनों राष्ट्र आतंकवाद की एक विशेष चुनौती का सामना कर रहे हैं.

चीनी विदेश मंत्रालय ने जारी किया बयान

चीन ने ट्रंप के परमाणु परीक्षण के दावे को कर दिया खारिज

एजेंसी ।बीजिंग

चीन ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस दावे का खंडन किया है, जिसमें दावा किया गया कि चीन गुप्त रूप से परमाणु हथियार परीक्षण कर रहा है. चीन ने इस आरोप को खारिज करते हुए इसे पूरी तरह से झूठा करार दिया है.

रविवार को सीबीएस के साथ एक साक्षात्कार में ट्रंप की टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया देते हुए चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने कहा कि बीजिंग एक आत्मरक्षात्मक परमाणु रणनीति पर कायम है और परमाणु परीक्षणों पर अपने प्रतिबंध का पालन करता है. ग्लोबल टाइम्स के हवाले से माओ ने कहा, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के एक स्थायी सदस्य और एक परमाणु-हथियार संपन्न देश के रूप में चीन परमाणु हथियारों का पहले इस्तेमाल ना करने की नीति का पालन करता है, एक आत्मरक्षात्मक परमाणु रणनीति

बनाए रखता है और परमाणु परीक्षण स्थगित करने की अपनी प्रतिबद्धता का सम्मान करता है.

अमेरिका से वैश्विक स्थिरता की अपील : उन्होंने आगे कहा कि चीन व्यापक परमाणु-परीक्षण-प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) का समर्थन करता है और अमेरिका से उसी संधि के तहत अपने दायित्वों का पालन करने का आह्वान किया. उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि अमेरिका भी परमाणु परीक्षण पर अपनी रोक बरकरार रखेगा और वैश्विक स्थिरता में योगदान देगा.

चार दिन तक चलेगी बैठक : एशिया कप ट्रॉफी विवाद पर फिर बढ़ा तनाव

चेयरमैन मोहसिन नकवी छोड़ सकते हैं आईसीसी मीटिंग

- अगर वे दुबई नहीं जा पाते हैं, तो पीसीबी के मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) सुमैर सैयद पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करेंगे.

एजेंसी ।नयी दिल्ली

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के चेयरमैन मोहसिन नक़वी के आईसीसी की एग्जीक्यूटिव बोर्ड मीटिंग में शामिल न होने की चर्चाओं के बीच बीसीसीआई (बीसीसीआई) एक बार फिर एशिया कप 2025 ट्रॉफी विवाद को उठाने की तैयारी में है. इस बैठक में ट्रॉफी विवाद पर बड़ा फैसला हो सकता है. दुबई में मंगलवार से शुरू हुई चार दिन की अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की बैठक में भारत और पाकिस्तान के क्रिकेट बोर्डों के बीच तनाव एक बार फिर सुर्खियों में आ गया है. बीसीसीआई अधिकारी इस मीटिंग में एशिया कप ट्रॉफी को लेकर जारी विवाद का मुद्दा उठाने वाले हैं. वहीं, खबर है कि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष मोहसिन नक़वी घरेलू राजनीतिक जिम्मेदारियों के चलते बैठक से दूरी बना सकते हैं.

दरअसल, नक़वी पाकिस्तान के गृहमंत्री भी हैं और बीते कुछ महीनों

से देश की आंतरिक स्थिति को संभालने में व्यस्त हैं. सूत्रों के अनुसार, अगर वे दुबई नहीं जा पाते हैं, तो पीसीबी के मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) सुमैर सैयद पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करेंगे. सैयद फिलहाल मुख्य कार्यकारियों की बैठक में भी शामिल हैं. एशिया कप ट्रॉफी विवाद सितंबर में खेले गए फाइनल के बाद शुरू हुआ था. फाइनल जीतने के बावजूद भारतीय टीम ने एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) के अध्यक्ष नक़वी से ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया था. खिलाड़ियों का यह निर्णय नक़वी के भारत-विरोधी बयानों के विरोध में था. इसके बाद नक़वी ने ट्रॉफी को एसीसी सचिवालय, दुबई भिजवा दिया था और आदेश दिया था कि उनकी अनुमति के बिना ट्रॉफी कहीं नहीं भेजी जाए.

वर्तमान में ट्रॉफी अब भी एसीसी मुख्यालय में बंद है, जबकि बीसीसीआई ने औपचारिक रूप से इसे भारत भेजने की मांग की है. नक़वी इस पर अड़े हुए हैं कि ट्रॉफी केवल दुबई में 10 नवंबर को आयोजित एक विशेष समारोह में भारतीय प्रतिनिधियों को उनके हाथों से ही सौंपी जाएगी. बीसीसीआई ने इस रवैये पर नाराज़गी जताई है और अब आईसीसी मीटिंग में इस मसले को आधिकारिक रूप से उठाने जा रहा है. सूत्रों का कहना है कि अगर नक़वी बैठक में नहीं पहुंच पाते हैं, तो वे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए शामिल हो सकते हैं. इस पूरे विवाद ने भारत-पाक क्रिकेट संबंधों में एक बार फिर तनाव बढ़ा दिया है. बीसीसीआई के अधिकारी उम्मीद कर रहे हैं कि आईसीसी के हस्तक्षेप से ट्रॉफी विवाद का समाधान जल्द हो सकेगा.

फिलीपींस में तूफान 'कलमाएगी' से आई बाढ़ में 26 लोगों की मौत

एजेंसी ।बैंकाक

मध्य फिलीपींस में तूफान 'कलमाएगी' के कारण आई बाढ़ में कम से कम 26 लोगों की मौत हो गई और लाखों लोग बेघर हो गए हैं. स्थानीय मीडिया की रिपोर्टों के अनुसार बाढ़ के कारण सेबू द्वीप लगभग पूरी तरह से जलमग्न हो गया है. उधर सेना ने बताया है कि प्रभावित क्षेत्रों में राहत प्रयासों के लिए तैनात एक हेलीकॉप्टर उत्तरी मिंडानाओ द्वीप पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया. बताया गया है कि तूफान विसायन द्वीप से गुजरते हुए पश्चिम की ओर बढ़ रहा है. मीडिया की रिपोर्टों के मुताबिक अधिकारियों ने सेबू में 21 लोगों की मौत होने की

पुष्टि की है और इससे तूफान में मरने वालों की कुल संख्या बढ़कर 26 हो गई है.

अधिकारी ने कहा, हमारे पास उपलब्ध जानकारी के आधार पर, ज्यादातर मौतें बाढ़ के पानी में लोगों के डूबने या बह जाने के कारण हुईं. इस बीच तूफान के यहां पहुंचने से 24 घंटे पहले प्रांतीय राजधानी सेबू सिटी के आसपास 183 मिलीमीटर बारिश हुई, जो उसके मासिक औसत 131 मिलीमीटर से कहीं ज्यादा है. प्रांतीय गवर्नर पामेला बर्रिक्वाट्रो ने मंगलवार को फेसबुक पोस्ट में कहा, सेबू की स्थिति वास्तव में गंभीर है. हम हवाओं को खतरनाक मान रहे थे, लेकिन पानी ही वास्तव में हमारे लोगों के लिए खतरा बन गया है. बाढ़ का पानी विनाशकारी है. स्थानीय आपदा अधिकारी एथेल मिनोजा के अनुसार सेबू सिटी में दो बच्चों के शव बरामद किए गए हैं, जहां बचावकर्मी अभी भी बाढ़ में फंसे निवासियों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं. लेयते प्रांत में एक बुजुर्ग निवासी अपने घर की ऊपरी मंजिल में बाढ़ के पानी में डूब गया जबकि बोहोल में एक व्यक्ति की पेड़ के गिरने से मौत हो गई.

स्वत्वाधिकारी लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप कुमार सिंह, क्वार्टर नंबर सी-90, पोस्ट-नावागढ़, थाना-बरोरा, हरिणा कॉलोनी, धनबाद-828306, झारखंड द्वारा फ्लैट नंबर 2ए, सेकेंड फ्लोर, सिंगारो मेनन अपार्टमेंट,चूना भट्ठा, एचबी रोड कोकर, नियर डिस्टिलरी पुल, बिरसा समाधि स्थल) रांची-834001, झारखंड से प्रकाशित और शिवसाईं पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, रातू, काठीटांड़, टेंडर बगीचा रातू, रांची - 835222 झारखंड द्वारा मुद्रित. **संपादक : संजय कुमार सिंह.*** फोन नंबर 0651-2913385, 9142897989 (***पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार**).
आरएनआई नं : JHAHIN/2023/84487, ई-मेलः shubhamsandeshnews@gmail.com धनबाद ब्यूरो : ओजोन सेंटर,थर्ड फ्लोर, कमरा नं-306 अशोकनगर, बैंक मोड़, धनबाद-828106. फोन नं – 9431145133.ई मेल-sandeshsubham23@gmail.com.